due place is given to several Governmental representatives of Ministries and only a casaual mention is made of Gorwers' representatives.

MR. DEPUTY SPEAKER: You may continue your speech tomorrow.

---

16 hrs.

MOTION FOR ADJOURNMENT

FAILURE OF GOVERNMENT TO SOLVE THE MYSTRY OF SAMASTIPUR BOMB CASE

MR. DEPUTY-SPEAKER: We now take up the Motion 'That the House do now adjourn' Shri Madhu Limaye.

श्री मधु लिमये : (बाका) : मझे कितना समय मिलेगा ? 40 मिनट मे, मै खत्म करूगा, ज्यादा नही लगा ।

16 1 hrs

(SHRI VASANT SATHE *in the Chair*)

मै प्रस्ताव करता हू कि इस सदन की कार्यवाही को और इस सदन को अब स्थगित किया जाय ।

आज जिस विषय पर हम लोग चर्चा कर रहे है यह अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है । क्योंकि एक अरसे से हमारे देश मे रहस्यपूर्ण मौते होती है और इस रहस्य को हल करने का सरकार के द्वारा कोई समुचित इतजाम नही किया जाता है । शुरू मे पढने मै आपकी खिदमत मे आज के हिन्दुस्तान टाइम्स मे कांग्रेस पार्टी के एक सदस्य ने ही जो बात कही है उसी से अपने भाषण को शुरू करना चाहता हू । यह हिन्दुस्तान टाइम्स मे कांग्रेस पार्लियामेंट्री पार्टी की जो बैठक हुई उस की रिपोर्ट है । उस मे से एक हिस्सा मै पढ कर सुनाना चाहता हूं :

"Mr. P. R. Das Munsi said: There was a general feeling in the country that the Government had indulged in misconduct from the death under mysterious circumstances of Nagarwala to L. N Mishra. The Government has not done anything to remove the doubts of the people, he added."

अब हो सकता है कि इसके बाद मे ये इसका प्रतिवाद करेगे । लेकिन उन्होने जो बात कही है वह हिन्दुस्तान के कई लोगो के मन मे बात है कि हमारे देश मे विगत कुछ वर्षों से बहुत ही रहस्यपूर्ण तरीके से लोगो को खत्म किया जा रहा है । इसी दिल्ली शहर मे नवम्बर महीने की घटना है, अनिल चोपरा नाम का जो दमन का कस्टम कलेक्टर था उस की मौत भी रहस्यपूर्ण वातावरण मे हुई । सी०बी०आई० के जो दो अफसर पाडेय और रामनाथन – उनके बारे मे भी कहा गया है कि सडक दुर्घटना मे उनकी मौत हुई है । नागरवाला काड के बारे मे सभी लोग जानते है कि नागरवाला की जो मृत्यु हुई वह भी रहस्यपूर्ण वातावरण मे हुई । उनके मामले की जाच करने वाले जो पुलिस अफसर कश्यप साहब–उनकी मौत भी रहस्यपूर्ण वातावरण मे हुई है । जनसघ के जनरल सैक्रेटरी (व्यवधान) . पहले जनरल सैक्रेटरी थे, फिर अध्यक्ष बने, श्री दीन दयाल उपाध्याय जी, उनकी भी मौत का रहस्य भी दो दो कमीशनो को बैठाने के बाद भी नही खुल पाया है और समस्तीपुर बम विस्फोट के बारे मे भी आम लोगो की यह राय है कि सरकार ने इस रहस्य को खोलने के लिए समुचित प्रयास नही किया ।

जसे ही 3 तारीख को श्री ललित नारायण मिश्र की मृत्यु की खबर आई, एक स्वर से एक आवाज से विरोध पक्ष ने अपना दुख प्रकट किया । इतना ही नही, हिंसा के इस्तेमाल के बारे मे भी बहुत स्पष्ट शब्दो मे उन्होने कहा कि हिंसा का रास्ता हमारा नही है । विरोध पक्ष ने निष्पक्ष और खुली जाच की माग की ।

[श्री मधु लिमये]

लेकिन अफसोस की बात है कि सरकार ने यह जो सार्वत्रिक माग जाच की उस समय की गई थी उस को न मानते हुए उच्च स्तर पर विरोध पक्ष के ऊपर दोषारोपण करने का काम तत्काल कुछ ही घटो के अन्दर शुरू किया और अफसोस की बात है कि इसमे प्रधान मत्री ने और आल इडिया रेडियो मे सबसे अधिक पहल की । प्रधान मत्री जी का पहले दिन का वक्तव्य ही देखिए । प्रधान मत्री जी न कहा

"The forces of disruption which have come to the fore lately have spread hatred and indirectly encouraged violance It is this atmosphere which is responsible foi this dastardly crime"

इसके बाद उसी दिन रेडियो पर जो स्पाट-लाइट का कार्यक्रम होता है उस पर सी० एस० पडित जो फ्री प्रेस के एडीटर हैं, हमारे मित्र भी है, मै मानता हू कि उनको अपनी राय रखने का पूर्ण अधिकार है, लेकिन यह रेडियो पर से कार्यक्रम हुआ है और रेडियो के बारे मे प्रधान मत्री ने यही कहा है कि रेडियो का कार्य क्या है—निष्पक्ष ढग से समाचारो को प्रसारित करना या सभी दृष्टिकोणो को रेडियो के द्वारा जनता के सामने रखना, यह रेडियो का रोल प्रधान मत्री ने नही माना है। प्रधान मत्री कहती है कि रेडियो का काम है कि टु प्रोजेक्ट गवर्नमेंट पालिसी । इसी सदन मे उन्होने एक वक्तव्य दिया है । तो मै मानता हू कि वहा सी० एस० पडित का जो टाक हुआ उसमे सरकारी अनुमति से, सरकारी सम्मति मे यह कहा गया है । ऐसा मै मानता हू । मै केवल दो वाक्य आपके सामने उद्धृत करना चाहता हू ।

"The total responsibility foi this act is on those who on the one side swear by democratic noims and want to save it and on the other actively support a movement which is not only destroying peoples' faith in their leaders mbut in the system itself.'

और आगे यह कहते हैं

"Whatever may have been the Opposition's complaint against Mr. Mishra and the ruling party itself by this act and the general atmosphere of violance in the wake of Bihar Agitation it has opened itself to the charge that behind their allegation to corruption and misuse of power was political vendetta and not a desire to reform "

यानी स्पाट लाइट मे स्पष्ट शब्दो मे रेडियो कहता है कि समस्तीपुर बम विस्फोट और ललित नारायण मिश्र की मौत इस कृति के लिए, इस ऐक्ट के जरिये अपोजीशन ने साबित किया है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ उनका जो अभियान है उसके पीछे राजनैतिक विद्वेष है । तो 3 तारीख को ही प्रधान मत्री और आल इडिया रेडियो निर्णय दे देता है कि समस्तीपुर मे जो घटना हुई उसके लिए विरोध पक्ष जिम्मेदार है ।

एक माननीय सदस्य बिलकुल सही ।

श्री मधु लिमये : अब सही है या नही इसकी तो चर्चा कर ही नही रहे है । लेकिन मेरा मुद्दा यह है कि जब विरोध पक्ष ने एक स्वर से हिंसा के रास्ते को त्याज्य ठहराया, उसकी निन्दा की और निष्पक्ष और खुली जाच की माग की तो प्रधान मत्री ने और आल इडिया रेडियो न और दूसरे प्रवक्ताओ न विरोध पक्ष को दोषी ठहराने का काम उसी दिन कुछ ही घटो के अन्दर शुरू किया । इसलिए मै कहना चाहता हू कि शुरू से ही प्रधान मत्री चाहती थी कि समस्तीपुर की जो ट्रेजेडी है उसका इस्तेमाल राजनैतिक उद्देश्यो के लिए किया जाय । उन्होंने जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन को और विरोध पक्ष को बदनाम करने का प्रयास किया है । इसलिए इसकी जड मे जाने का हम लोगो का प्रयास करना चाहिए । अखबारो मे बहुत सारी गलत खबरे शुरू मे पुलिस के द्वारा दिलाई गईं । पहले यह कहा गया कि यह रेल कर्म-

चारियों का काम है। एक कर्मचारी का भी नाम जोडा गया, जो स्वय इसमे मर गया था। पहले तो रेल मजदूरो को बदनाम करने का प्रयास किया गया, साथ-साथ विरोध-पक्ष को बदनाम करने का प्रयास हुआ, फिर आर० एस० एम० के साथ, आनन्दमार्गियो के साथ इसका सम्बन्ध जोडा गया। आनन्दमार्गियो के साथ कितना सम्बन्ध है, मै नही जानता—जहा तक मुझे मालूम है जय प्रकाश जी के आन्दोलन के साथ उनका कोई सम्बन्ध नही है। आर० एम० एस के साथ भी उसका कोई सम्बन्ध नही है, हा, उसके साथ जुडे हुए जो लोग है वे इस आन्दोलन मे सम्बन्धित है—यह कोई छुपाने की बात नही है (व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (ग्वालियर) हा, हम उसमे है।

श्री मधु लिमये : मैं कह रहा था कि पहले रेल मजदूरो के साथ, फिर विपक्षी दलो के साथ, जय प्रकाश जी के आन्दोलन के साथ, आर एस० एस० के साथ इस घटना का सम्बन्ध जोडने का प्रयास किया गया। उसके बाद इन्टैलिजेन्स ब्यूरो और सी०बी०आइ० के लोग इसमे आये, उनके द्वारा जाच का काम शुरू हुआ।

अब इसमे सन्देह उत्पन्न होता है—आज सी०बी०आई० की जो स्थिति है, वह स्पष्ट है। यह विभाग प्रधान मत्री जी के तहत है। पहले यह गृह मत्रालय के साथ था, लेकिन अब श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी के मातहत नही है। 1970 , जब प्रधान मत्री जी ने मत्रि-मडल की पुनर्रचना की, उस समय सभी जासूसी विभाग प्रधान मत्री जी के कार्यक्षेत्र मे लाए गये। जब प्रधान मत्री जी स्वय निर्देश दे रही है कि सी०बी०आई० जाच करे और उन्होंने पहले ही यह निर्णय दे दिया कि ये सब लोग इसमे सम्बन्धित है तो सी०बी०आई० वाले बाध्य होकर इसी दिशा मे जाच करने लगे कि किसी तरह से यह जो काण्ड हुआ है, इसकी जिम्मेदारी विरोध-पक्ष पर लादी जाय और आज डेढ महीने मे भी सी०बी०आई० को सफलता नही मिली है। तो इस का मुख्य कारण है कि प्रधान मत्री जी ने अपने वक्तव्यो मे सी०बी०आई० की जाच को एक विशिष्ट दिशा म प्रभावित करने का प्रयास किया है

श्री कृष्ण चन्द्र पांडय : (खलीलाबाद) : बिलकुल गलत।

श्री मधु लिमये : इस तरह से नही, आप तक के आधार पर बोलिये। गलत कहने से गलत नही होगा। जब प्रधान मत्री जी, जिनके मातहत सी० बी० आई० है स्वय पहल ही फैसला दे देती है कि इसकी जिम्मेदारी किस पर है, तो फिर आप सी० बी० आई० स उम्मीद नही कर सकते कि वह निष्पक्ष ढग से जाच करेगी . (व्यवधान)

अब, मै लिक साप्ताहिक को प्रधान मत्री जी ने जो मुलाकात दी है, उसके एक अश को उद्धृत करना चाहता हू . . (व्यवधान) . .

आप इसको देखिए—प्रधान मत्री जी स पूछा गया।—

"Shri Mishra's death will cause a lot of concern among the people about such violence spreading elsewhere"

यह सवाल उनसे पूछा गया, अब प्रधान मत्री जी जवाब देती है—

"As I have said, it is not important which person did the killing But when an atmosphere of hatred, calumny and violence is fostered, then, anybody can do it"

सभापति महोदय, प्रधान मत्री जी कहती है कि किस ने मारा, इसका कोई महत्व नही है। अगर यह साबित हो जाता

[श्री मधु लिमये]

है कि किसी कांग्रेसी ने मारा है, तो भी प्रधान मंत्री जी कहती है कि इसका कोई महत्व नहीं है, इसका दोष तो विरोधी पक्ष के लोगों के ऊपर है. . . (**व्यवधान**) . . . आप क्यों घबरा रहे हैं—. . . .

सभापति महोदय, प्रधान मंत्री जी की राय में किसने मारा, इसका कोई महत्व नहीं है। ऐसा वाक्य वे इस लिये कहती है—क्योंकि मन में उन्होंने पहले से ही फैसला कर लिया था कि दोष इन्हीं लोगों पर लगाना है—इस लिये इस तरह का वाक्य उनके मुंह से निकला।

समस्तीपुर बम विस्फोट और श्री ललित नारायण मिश्र जी की मृत्यु के तत्काल बाद मैंने 3 जनवरी को दिल्ली से मेरे कुछ विरोधी पक्ष के साथियों के साथ एक वक्तव्य दिया था कि ललित नारायण मिश्र जी के शव पर अग्नि-संस्कार करने में जल्दबाजी न की जाय, पहले उनका पोस्ट-मार्टम कराया जाय, पूरे फोरेन्जिक एक्जामिनेशन के बाद, तथा उसकी रिपोर्ट आने के बाद उनके शव का अग्नि संस्कार कराया जाय। आम तौर पर, सभापति महोदय, आप जानते हैं—आप स्वयं वकील हैं मैं वकील नहीं हूं, लेकिन इतना अवश्य जानता हूं कि पुलिस केस होने के बाद पुलिस वाले शव का अग्नि संस्कार कराने की इजाजत नहीं देते हैं जब पोस्टमार्टम हो जाता है। यह पुलिस केस था, तत्काल पुलिस ने रजिस्टर किया था तो फिर पोस्ट मार्टम न करने की छूट किसी कहने से दी गई ? मैंने यह सुना है कि बिहार के चीफ सैक्रेटरी ने स्वयं कहा कि पोस्ट मार्टम की कोई जरूरत नहीं है और आप अग्नि संस्कार करने की इजाजत दे सकते हैं। मैं पोस्ट-मार्टम का सवाल इस लिये उठा रहा हूं, क्योंकि नार्थ-ईस्टर्न रेलवे के चीफ मेडिकल आफिसर—भाटिया साहब ने कहा था—जो हम लोगों ने रेडियो में सुना था—ललित नारायण मिश्र जी को मामूली चोट आई है, स्किन-डीप-इन्जरी है, उनकी जान खतरे में नहीं है, लेकिन उसी दिन हम ने बाद में सुना कि वह गम्भीर चोट थी, लम्बे आपरेशन के बाद उनकी मृत्यु हुई। इससे हम लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ, ऐसा कैसे हुआ, इसी लिये हमको और ज्यादा शक था और हम ने कहा था कि पूरे पोस्ट मार्टम के बाद जांच की जाती। क्योंकि अब सवाल आयेगा—मान लीजिये, कोई आदमी पकड़ा जाता है, जिसने यह काम किया है और उस पर केस चलेगा तो वह कह सकता है कि बम विस्फोट के चलते वे नहीं मरे, 12 घंटे जो विलम्ब हुआ, उनकी जो ठीक से चिकित्सा नहीं की गई, उनका इलाज नहीं किया गया, उसके कारण ललित बाबू की मृत्यु हुई है, इस लिये मेरे ऊपर उनके खून का, कत्ल का, होमीसाइड का इल्जाम नहीं लग सकता है. .

श्री नरेन्द्र कुमार साल्वे (बेतुल). क्या पोस्टमार्टम में यह प्रूव हो जाता ?

श्री मधु लिमये : साल्वे साहब, आप जैसे ट्रिब्यूनल के सामने एप्पियर होने वाले व्यक्ति जब ऐसी बात कहते हैं तो हमारे जैसे आदमी, जिनको कानून का कम ज्ञान है, वे क्या कहेंगे। क्योंकि सवाल यह उठता है—मौत का कारण क्या था ? मान लीजिये, वे इलाज से ठीक हो जाते, जैसे जगन्नाथ मिश्र ठीक हो गये, तो फिर उस व्यक्ति के ऊपर कोई दूसरा चार्ज लगता। होमीसाइड का चार्ज नहीं लगता, अटेम्प्ट टु कमिट होमीसाइड का चार्ज लगता। इस लिये आप ने इस मामले की जांच करने की दृष्टि से भी जो कदम उठाना चाहिए था, वह नहीं उठाया और हम लोगों के द्वारा वक्तव्य देने के बाद भी जब नहीं उठाया गया तो मैं आरोप लगाऊंगा कि यह जानबूझ कर किया गया है।

दूसरी बात—श्री मिश्र जी का समारोह का जो कार्यक्रम था उसने सिक्योरिटी अरेन्जमेन्ट ठीक था या नहीं था—यह मामला मैथ्यू कमीशन के सामने है, इसकी जांच करना उनके अधिकार क्षेत्र में आता है। इसका निर्णय वे देंगे। लेकिन कुछ बातें

बिलकुल स्पष्ट है जो अखबारों मे आ चुकी है कि सिक्योरिटी अरेन्जमेन्ट मे इतनी खामिया थी कि समस्तीपुर मे बम विस्फोट होने के बाद सिक्योरिटी के सारे लोग भाग गये। और उस समय पर कोई नही था। यानी बिहार सरकार और केन्द्रीय सरकार का मनोबल कितना टूट गया है उस का यह परिचायक है कि एक विस्फोट की घटना होती है और सब लोग भाग जाते है। देर तक कमिश्नर वहा पर थे उन का पता नही, जिलाधीश का पता नही, एस० पी० का पता नही और रेलवे का जो प्रमुख अधिकारी होता है डिवीजनल सुपरिन्टेंडेंट वह भी गायब। और ऐसी स्थिति मे कौन चार्ज लेता है? श्री राम बिलास झा नाम का एक व्यक्ति चार्ज लेता है। मैं उन को नही जानता हू उन की क्या आफिशियल पोजीशन थी या नही थी मुझे कोई जानकारी नही है। सिक्योरिटी वाले भाग गये, बडे बडे अधिकारी भाग गये और राम बिलास ने चार्ज ले लिया। और पहला काम वह क्या करता है कि सैलून में किसी को भी आने नही देंगे। यानी चार लोग जिन्होने, सेक्योरिटी वाले सब भाग गये तो उन चार लोगो ने ललित बाबू को उठा कर रेलवे सेलून पर चढाया वह थे एक जमुना सिंह, दूसरे थे उमेश प्रसाद सिंह शिव शंकर सिंह और चौथे कन्हैया इस मे उमेश प्रसाद सिंह घायल थे लेकिन राम बिलास उन से कहता है कि यह कोई अस्पताल है? भागो यहा से। तो मारपीट की नौबत आ गई। तो यह बेचारे स्वय घायल और फिर भी मिश्र जी को सैलून तक पहुचाने का काम किया। लेकिन उन को भी सैलून के अन्दर नही आने दिया। यह राम बिलास की क्या अथारिटी थी इस की खोज होनी चाहिये।

दूसरी बात यह कि राम बिलास ने गाडी दानापुर जायगी यह आदेश उसने दिया। और उन्होने कहा कि कहा हैं वह चीफ ओपरेशन सुपरिन्टेंडेंट जो गाडियो के बारे में निर्णय करता है। बुलाओ उसको। और उन के आदेश मे यह तय हुआ कि ललित बाबू का इलाज न समस्तीपुर, न दरभगा, न पटना मे होगा और न उन को दिल्ली भेजा जायगा। क्योकि जितना समय लगा उतने समय मे अगर सरकार चाहती तो उन को हवाई जहाज से दिल्ली लाया जा सकता था। लेकिन नही लाया गया, और राम बिलास, जिस की कोई आफिशियल पोजीशन नही है वह यह सब निर्णय करता है।

तीसरी बात यह है कि बिल्कुल जानकर सूत्रो ने मुझे पता चला है कि पटना में जो विलम्ब हुआ वह इसलिये कि राम बिलास झा ने एक बार नही दो बार चैन पुलिग कर के इस गाडी को रोकने का काम किया है। स्वय उन्होने चेन पुलिग की है। तो इसलिये यह आदमी इतना शक्तिशाली कैसे बना और सारी जो वहा पर गतिविधिया ऐक्टिविटी हुई उस का उस ने चार्ज कैसे लिया इस के बारे मे सफाई होनी चाहिए।

उसी तरह उस सैलून मे जिस की चर्चा मेरे ख्याल मे कल 'मदरलैंड' ने की है और वह सही है कि मस्ताना बाबा हाजीपुर के, जो नाविक है और ललित बाबू के साथ लगे रहते थे वे सैलून मे थे। लेकिन ये घायल लोग जिन्होने अपनी जान जोखिम मे डाल कर ललित बाबू को पहुचाने का काम किया उन को सैलून मे नही आने दिया गया। लेकिन मस्ताना बाबा हाजीपुर का सैलून मे आ गया। यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। तो अखबारो मे बहुत सारी बाते आ रही है।

हिन्दुस्तान स्टैन्डर्ड ने समस्तीपुर से जो समाचार भेजे हैं और जो प्रकाशित हो गये उस मे दो एम० एल० सी० पर अभियोग लगाया है कि इन का इस मे हाथ था। साथ ही साथ उन्होने यह भी कहा

[श्री मधु लिमये]

है कि एक गैर बिहारी एम० पी० उसी समय पटना गया था और उस के साथ एक स्वामी भी था। पटना में जो मैंने चर्चा सुनी, बिहार में सुनी, तब मैं केवल बता रहा हूं, मैं कोई अपना अभियोग नहीं लगा रहा हूं, और वह है यशपाल कपूर का नाम। "हिन्दुस्तान स्टैन्डर्ड" में जिस की चर्चा की गई है वह यशपाल कपूर हैं।

उस समय जहां तक सेक्योरिटी की बात है उस के बारे में जांच होगी, इस में कोई सदेह नहीं। लेकिन मैं आप की जानकारी के लिये कहना चाहता हूं कि इस घटना की जानकारी पटना के अफसरों को तकरीबन कुछ ही मिनटों के अन्दर दी गई। उस समय आई० जी० पुलिस एक नृत्य कला के कार्यक्रम में गये हुए थे और यह खबर आने के बाद भी वह वहां से हिले नहीं, बल्कि घंटा, डेढ़ घंटा वहीं बैठे रहे। वहां गवर्नर महोदय भी थे, शायद उन को भी जानकारी नहीं दी गई।

श्री राम सहाय पांडे (राजनदगांव) : कितने बजे की बात है ?

श्री मधु लिमये : यह शाम की बात है। मैं यह कह रहा हूं कि इस घटना के बाद इस की जानकारी आई० जी० पुलिस बिहार को दी गई। उस समय वह एक सांस्कृतिक कला के कार्यक्रम में थे और उस के बाद वहीं बैठे रहे, देर तक बैठे रहे, और उन्होंने इस बात का जरा भी प्रयास नहीं किया कि कौन अन्य लोग घायल हुए हैं, ललित बाबू की क्या स्थिति है, उन का इलाज हो रहा है कि नहीं ? जो कि करना चाहिये वह भी नहीं किया गया। तो मैंने यह सुना कि चीफ सेक्रेटरी ने पोस्टमार्टम की शर्त को वेध किया और आई० जी० पुलिस इस घटना की जानकारी मिलने के बाद भी वहीं बैठे रहे और स्थिति पर काबू पाने का जरा भी प्रयास नहीं किया।

एक और मजेदार बात है कि ललित बाबू जब बिहार जाते थे तो उन के पीछे सारे मंत्री लोग, कम से कम आधे दर्जन से अधिक उन के आगे पीछे लगा करते थे। बहुत सारे दूसरे लोग भी होते थे। लेकिन उस दिन मंच पर और समारोह स्थल पर उन के भाई के अलावा एक भी मंत्री मौजूद नहीं था। तो प्रश्न उठता है कि क्या इन लोगों को इस बात का पता था कि ऐसा कुछ होने वाला है ? और क्या इसीलिये उस जगह से वह इतनी दूर रहे, गये नहीं ? और अगर उन को पता था तो ललित बाबू को उन्होंने क्यों नहीं बताया ? इस के बारे में लोग अपना तर्क कर रहे हैं। कुछ उस में कुतर्क भी हो सकता है। लेकिन यह सब चल रहा है। साधारण जन भी इस को मानते हैं कि विरोध पक्ष का इस से कोई सम्बन्ध नहीं था और न है। क्योंकि विरोध पक्ष का ऐसा काम करने से कोई लाभ नहीं था। यह साधारण जनता भी समझती है, क्यों कि ललित बाबू के सवाल पर वर्षा और शीत कालीन सत्र में जो यहां पर लम्बी बहस चली उस से विरोध पक्ष का तो कोई नुकसान नहीं हो रहा था। आप लोगों का नुकसान हो रहा था और फरवरी के बजट सत्र में इस सवाल पर हम लोग मुस्तैदी के साथ आगे बढ़ने वाले थे। इसलिये साधारण जनता यह कहती है कि विरोध पक्ष का इस से सम्बन्ध हो ही नहीं सकता है क्योंकि विरोध पक्ष को ऐसा करने से कोई लाभ नहीं था। लेकिन ललित बाबू को ले कर जिन को जबरदस्त ऐंबरेसमेंट हो रहा था उन के बारे में लोग अपना तर्क जरूर कर रहे हैं। मैंने, सभापति महोदय, यह सुना है कि 23 तारीख को ललित बाबू से प्रधान मंत्री जी की बात हुई। वह यहां हैं और वह स्वयं कह सकती हैं। जो उन्होंने कहा, वह मैं आप के सामने रख रहा हूं.. (व्यवधान).... लोगों ने कहा है और मुझ यह पता लगा है कि प्रधान मंत्री जी ने ललित बाबू से कहा कि आप को अब तक तो मैं

डिफेंड करती रही हू लेकिन अब हमारे लिए मुश्किल है और आप मत्री मडल से अब हटने के बारे में सोचे ।

प्रधान मंत्री, परमाणु ऊर्जा मंत्री, इलैक्ट्रानिक्स मंत्री, अन्तरिक्ष मंत्री, योजना मंत्री तथा विज्ञान और औद्योगिकी मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) मैं यहा पर मोजद हू ।

श्री मधु लिमये : आप बाद में बोलिये ।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : मैं बाद मे क्यो बोलू इस में जरा भी सत्य नही है । ऐसी कोई बातचीत मेरी ललित बाबू से नही हुई ।

श्री मधु लिमये : ठीक है । यह मैं आप के लिए छोड देता हू, लेकिन मेरी यह जानकारी है कि इन की मुलाकात हुई थी और इसलिए ललित बाबू चिंतित थे, दुखी थे, यह पक्की बात है । यह मुलाकात कब हुई, कैसे हुई, क्या नही हुआ और क्या बात हुई, उस को छोडिये लेकिन यह बात निश्चित है कि इस को ले कर ललित बाबू दुखी थे और दो चार लोगो से उन्होने ऐसा कहा कि मैने जो कुछ किया वह कभी अपने लिये नही किया, अगर किया है, तो प्रधान मत्री जी के लिए और कांग्रेस पार्टी के लिए किया है (व्यवधान) और इसलिए अब मेरी उपयोगिता समाप्त हो गई है, मेरी यूटीलिटी समाप्त हो गई है और इसीलिए मुझे को हटाया जा रहा है । यह उन्होने जो नजदीक के दो चार दोस्त थे, उन से कहा (व्यवधान)

श्री विभूति मिश्र : (मोतीहारी) सब से नजदीक रहने वाला मैं था । उन्होंने मुझ से कहा था कि आप लोगो की वजह से व बहुत चिंतित थे । मुझ को उन्होने कहा कि मिश्र जी, मैं मनुष्य हू और कोई ऐसा काम नही करता हू लेकिन हमारे ऊपर इल्जाम लगाया गया है । इसलिए आप लोगो की वजह से ललित बाबू चिंतित थे । मुझ को व कहते थे कि लास्ट मोमेंट तक मेरा साथ देने वाले विभूति जी है । आप लोगो से व चिंतित थे ।

श्री जनेश्वर मिश्र : (इलाहाबाद) क्योकि प्रधान मत्री जी ने सफाई दी है, मै यहा पर यह 'मार्च" अखबार रखूगा, जिस का हैडिंग है "सघर्ष मिश्र दरबार-इन्दिरा परिवार का" (व्यवधान) । इस की भी सफाई इन को देनी पडगी । यह मृत्यु से पहले की खबर है । (व्यवधान)

MR CHAIRMAN When that allegation has been positively denied by the Prime Minister, it is not relevant at all

SHRI MADHU LIMAYE Which allegation?

MR CHAIRMAN There there was such a talk between Lalit Babu and the Prime Minister Your allegation has been positively denied.

श्री मधु लिमये : उन्होंने यह नही कहा कि मुझ से मुलाकात नही हुई । आप रिकार्ड देख लीजिए, क्या कहा है । वह तो सदन के सामने कहा है उस पर बहस की क्या जरूरत है (व्यवधान)

अब विभूति जी कहते है कि आप लोगो को ले कर बड चिंतित थे । हम तो ललित बाबू के राजनीतिक विरोधी थे । उन के बीच और हमारे बीच व्यक्तिगत विद्वेष का सवाल नही था । हम उन के राजनीतिक स्तर पर विरोधी नही थे लेकिन पाडिचेरी लाइसेंस काड मे हमारी राय मे उन्होने जो अनुचित काम किया, उस का लेकर हम बोलते थे और उस मे कांग्रेस पार्टी, प्रधान मत्री और उन में हमारे लिए कोई फर्क नही था क्योकि ललित बाबू ने अपने दोस्तों से यह

[श्री मधु लिमये]

कहा कि सब कुछ मैं इन के लिए और कांग्रेस पार्टी के लिए करता था और मुझे अब हटाया जा रहा है या मुझे बलि का बकरा बनाया जा रहा है । तो यह आप के आपस का मामला है और इसमें मैं नही पडता, लेकिन आज साधारण लोगो की यह राय हो गई है कि विरोधी पक्ष का इस से कोई सम्बन्ध नही है और अगर यह काम किया है, तो व्यवस्था और इस्टाबिलिशमेंट के लोगो ने ही किया है क्योकि श्री ललित नारायण मिश्र उन के लिए एक बहुत बडा इम्बैरेसमेंट बन गये थे । इसलिए आप लोगो को इस की शुरू में ही जो निष्पक्ष जाच करनी चाहिए थी वह नही की और पोस्ट मार्टम नही करवाया और जब पार्लियामेंट का सत्र शुरू होने की स्थिति उत्पन्न हो गई, तब आप ने इस चार्ज को प्री-एम्प्ट करने के लिए मेथ्यू कमीशन नियुक्त किया । अब इस कमीशन को भी देखिये ।

सभापति महोदय, आप मेरी ओर क्यो देख रहे है । मैं आप का ज्यादा समय नही लेने वाला हू और मुझे ज्यादा समय लेने की जरूरत नही है ।

सभापति महोदय 10 मिनट हो गये है और मैंने आप को टोका नही है । आप जरा जल्दी खत्म कर दीजिए ।

श्री मधु लिमये उस वक्त तीन किस्म की जाच चल रही है । एक मेडिकल टीम बनाई गई है जो यह देखेगी कि उन का ईलाज ठीक से हुआ या नही । मेरी जानकारी यह है कि भल्ला साहब ने कहा, जब उन को तकलीफ और पीडा होने लगी तो फिर डाक्टर को सैलून मे बुलाया गया तो डाक्टर ने कहा कि आप को कुछ नही हुआ है और आप नरवस हो रहे है । उन्होने वहा यू डोन्ट ट्राई टू मिसलीड और उस समय जानबूझ कर इन्टरव्यू करवाया गया हरि प्रसाद शर्मा से, जो पटना स्थित आल इण्डिया रेडियो में थे और यह आल इण्डिया रेडियो पर भी आया है । अब यह एक मामूली सी बात है कि जब इस तरह की चोट होती है, तो जो पेशेंट होता है, उस को पानी वगैरह नही पिलाया जाता है लेकिन रास्ते में उनको कई दफा पानी पिलाया गया और इतनी देर मे उन का आपरेशन हुआ कि सब जमा हुआ खून उन के पेट में से मिला है । इसलिए मेरा आरोप है कि उस वक्त जो डाक्टर वहा पर थे उन्होने सही ढग से उन का ईलाज नही किया है और उस में विलम्ब हुआ है । दरभगा, समस्तीपुर, पटना और दिल्ली की बात तो आप छोडिए लेकिन सलून में भी जो उन का इलाज होना चाहिए था, वह नही हुआ और रास्ते भर उन को बराबर पानी पिलाते रहे जिस का बहुत बुरा असर उन के घाव पर पडा और उन की मृत्यु हो गई ।

तीसरी सी० बी० आई० की जाच चल रही है । इटेलीजेंस वाले क्या कर रहे है, मुझे पता नही है । तो मेरी राय में इस में विलम्ब अक्षम्य विलम्ब का बुरा असर होगा सरकार ने बहुत सारी एविडेन्स को नष्ट किया है या नष्ट होने दिया है । साथ ही साथ केन्द्र सरकार के जो अफसर है या मत्री लोग है, उन का इस काड मे जो रोल है वह मेरी राय मे बहुत गैर-जिम्मेदाराना है । वे बहुत गैर-जिम्मेदाराना तरीके से पेश आए है और उन्होंने अपने दायित्व को ठीक तरह से नही निभाया है । इसलिए मैं माग करना चाहता हू कि अगर आप चाहते है कि सत्य का पता लगे, तो इस में जो भी दोषी अफसर है, दोषी लोग है उन को हटाना आप का कर्तव्य हो जाता है । समस्तीपुर विस्फोट के बारे मे जब बिहार सरकार की इतनी अकर्मण्यता है, इतनी असफलता है, तो मै समझता हू कि बिहार सरकार को सत्ता मे रहने का अधिकार नही है । स्वय डा० जगन्नाथ मिश्र ने, जो उन के भाई है, कहा है कि यह बहुत बडा षडयत्र था और बिहार सरकार ने सेक्यूरिटी के बारे में अक्षम्य अपराध किया है । यह स्वय डा० जगन्नाथ मिश्र की राय है । तो ऐसी हालत में मैं सरकार को सलाह देना चाहता हू कि वह बिहार सरकार को तत्काल बर्खास्त करे

और ये जो सारी बातें है इन बातो के बारे में सारी मदद मेथ्यू कमीशन को दी जाए वरना यह जो रहस्य है, यह कभी खुलने वाला नही है।

इस के अलावा अनिल चोपडा की जो तथाकथित सडक दुर्घटना में हत्या हुई है, उस के बारे मे जानकारी लेना चाहता हू।

उनके पास जो कागज पाए गए है उन मे तीन तीन बार जोगी ताडेल का नाम आया है। यह जोगी ताडेल कौन है। एक बार उसकी रिश्तेदारी हरि भाई ताडेल से है जो कांग्रेस पार्टी के दमण से एम एल ए है और मुकुर नारायण बखिया के रिश्तेदार हैं। दूसरी बार प्रेमा भाई ताडेल है जो मारुति लिमिटेड मे इनस्पेक्टर हैं। यह अनिल चोपडा के कागजो मे स्वय मैंने देखा है कि दो दो तीन तीन बार इन सभी लोगो का उल्लेख है --

एक माननीय सदस्य कहा देखा है।

श्री मधु लिमये : क्यों ,ताऊं ?

SHRI K LAKKAPPA: (Tumkur): You are allowing all these things How is it relevant?

श्री मधु लिमये क्या मै गलत बोल रहा हू। मै यह कह रहा हू कि सिक्योरिटी और इंटेलीजेंस का टोटल फेल्योर हुआ है, पूरी असफलता के ऊपर मै बोल रहा हू। इसलिए मुझे यह कहने का अधिकार है। अन्त में मैं माग करता हु कि सरकार अगर इन रहस्यों का उद्घाटन चाहती है तो मैं कहूगा कि नागरवाला से ले कर समस्तीपुर बम विस्फोट तक जितनी भी रहस्यमय मृत्युए हुई है उन सभी की जांच करने के लिए एक ससदीय समिति आप बिठाए। आप जानते ही है कि ससदीय कमेटी में दलीय दृष्टिकोण से विचार नही होता है और इस कारण जो सत्य है वह बाहर आ सकता है। अगर इस तरह की बात को आप कबूल नही करेंगे तो जनता का जो विश्वास है वह आप पर से उठता ही चला जाएगा। इनको बहुत घमड था कि जनता मेरे साथ है। हमेशा कहती थी कि मेरे साथ हैं लेकिन लगातार जो उन निर्वाचनों के नतीजे निकल रहे है वे आपके खिलाफ जा रहे है। आप कहती थी कि बंसीलाल की जांच नही की जाएगी। क्यों नही की जाएगी? क्या इसलिए कि गुडगाव जिले मे उन्होने मारुति लिमटेड को तीन सौ एकड जमीन दी है? लेकिन जनता ने फैसला दे दिया। तीन मे से दो उप निर्वाचन आप हार गए है। मेरे पीछे मेरे मित्र बैठे है जो जबलपुर जैसे आपके गढ में कांग्रेस के उम्मीदवार को 87000 मतो से हरा कर आए हैं। गुजरात मे आप चुनाव नही करा रहे है क्योंकि आपको डर लग रहा है। आपके जो कारनामे रहे है उनकी वजह से जनता का विश्वास आप खो चुके है और इसलिए हम चाहते हैं कि सदन को तत्काल स्थगित किया जाए और इस सरकार को सेशर किया जाए। अगर आप इस प्रस्ताव को नही मानते है तो जनता अन्त में आपके विरूद्ध अविश्वास का प्रस्ताव और सेशर मोशन जरूर पास करेगी बशर्त कि ससदीय लोकतत्र को आप बचने दे।

MR. CHAIRMAN. Motion moved:

'That the House do now adjourn".

SHRI H K L. BHAGAT (East Delhi) Mr Chairman, when Shri Madhu Limaye said that a Parliamentary Committee should be appointed and that the committee would be able to make an impartial inquiry into certain things, including this assassination, I do not know whether he was trying to feel himself or anyone else in this House or the people of India. I would tell him with respect and humility that he is only trying to feel himself if he thinks that anyone in this country can believe that, with men like Shri Madhu Limaye here and making speeches of the kind that they are making, any impartial study can be made by any parliamentary committee of any matter regarding this country If he will

[Shri H. K. L. Bhagat]

excuse my saying so, I would say that such a hard approach would create an impression of a false witness, a prejudiced prosecutor and an absolutely perverted judge. Can such an Opposition sit in judgment and pronounce on things which have happened in this country?

I am sorry to say and I feel ashamed to say that on a serious matter like this, assassination of one of our colleagues, today Shri Madhu Limaye has betrayed a completely crude political approach. Of course, it is consistent with their past attitude. All of us here and the whole country knows that in this House itself and outside this House he and his like have continued a political assassination of Shri L. N. Mishra in season and out of season without any foundation or anything They were trying to create an atmosphere of hate and violence not only against the Congress and its leadership but particularly against Shri L. N. Mishra personally.

When I heard him today talking about Shri L. N. Mishra's assassination and saying these things, if he does not mind, I would say, "Well, God save this country from hypocrisy, simple and pure"

He has taken exception to the Prime Minister mentioning about an atmosphere of violence in this country and warning the nation about it and saying that such murders are the result of an atmosphere of violence. Was the Prime Minister wrong in saying that? Is it not a fact that after JP's movement started, an atmosphere of violence has developed in this country? Is it not a fact that 40 bomb explosions have taken place in Bihar after this movement? Was there any bomb explosion before this movement? Is it not a fact that rails were paralysed? Is it not a fact that students were shot? Is it not a fact that non-violence was preached while, in fact, violence was created and an atmosphere of violence was created in this country? Now, if the Prime Minister says that such murders are the result of an atmosphere of violence, if she warns the nation about it, what is wrong in that? If she had not done it, she would not have done her duty. I think, the Prime Minister did her duty to the nation by warning the nation about it.

I want to be very ruthlessly candid about it. I do not know how my friends will like it or the Prime Minister will like it. I want to be very frank about it. The Opposition are creating an atmosphere of hate and violence. They created it not only against Shri L. N. Mishra but they are creating it against the Prime Minister herself. Mr. Limaye was quoting his Bible today. He was quoting from the *Motherland* to substantiate a point If you read the *Motherland*, the Jana Sangh paper, if you read the Organiser, if you read various papers of these parties, as your colleague, I am warning you that you are deliebrately creating an atmosphere of violence personally against the Prime Minister herself I tell you, if anything happens, the nation will never excuse you. I am giving you a warning. (*Interruptions*)

SHRI SAMAR GUHA (Contai): On a point of order, Sir.

MR. CHAIRMAN: Mr. Guha, don't get excited Please sit down There is no question of a point of order.

SHRI SAMAR GUHA: Can a Member of this side or that side point out to this side or that side regarding a particular person, primarily taking the name of the Prime Minister, that they are creating an atmosphere of violence as a result of which something happened? This accusation is very dangerous. Its implication is equally dangerous. Will you permit?

MR. CHAIRMAN: You were on a point of order.

SHRI SAMAR GUHA: There is a way of speaking. But this gentleman is making a pointed attack on the Opposition, by taking the name of the

Prime Minister herself, that they are creating an atmosphere of violence. I want your observation whether a Member can be allowed to make this kind of an accusation.

MR. CHAIRMAN: There is no point of order in your interruption, Mr. Samar Guha. Let him continue. He is making his point with reference to a certain context. Do not get excited.

SHRI H. K. L. BHAGAT: Mr. Madhu Limaye has said that they have asked for a judicial inquiry. He has said that so many things are there and that the Mathew Commission will go into this and so on. I am glad, he has directly or indirectly expressed confidence in the Mathew Commission. Now, a Commission has been appointed under the Commission of Inquiry Act, which has a much wider scope than even a judicial inquiry. Instead of welcoming the appointment of an Inquiry Commission under the Commission of Inquiry Act, even this has been made a subject-matter of criticism and it is being said that this has been delayed. He is asking why it has been appointed after a few weeks. An offence has been committed, and it is the duty of the investigating agency to go into the case and try to find out the culprit. There are various aspects which require to be gone into carefully. If Mr Madhu Limaye will excuse my saying so, after his speech, if he himself introspects—but I am sure he will not—he will find that he did not say even one word new. He has only picked up one piece from one paper and another piece from another paper, and what does not suit him, he says that that part was inspired by the police. And many versions have been given—one version, second version, third version and so on. If, according to him, the whole thing was carefully planned—he has tried to raise clouds of suspicion and doubt against the Government—then, would the Government arrange to make these contradictory statements? Would the Government ask Dr. Bhalla to say that the injuries were superficial?

Another very funny argument was given by Mr. Madhu Limaye. He has said that the murder of Mr. L. N. Mishra helps the Government; at the same time he says that all the people believe it. If the people believe it, as you say, that it helps us and if the people are angry with us, then the murder suits you; it could be a motive for you. When I say 'you', I am speaking symbolically of the forces you represent. I do not want to express any direct opinion. It is for the Commission to inquire into it. Left to myself I would not have said anything. But since you have said certain things, I have to say that it could be said that this murder could give the Opposition the ground to criticise the Government, which you are doing. It is most fantastic to say that the murder was committed to suit this person or that person. By trying to create all these innuendoes and suspicions, by all this funny logic, I would say, you are only trying to deceive yourselves

He has spoken about All India Radio If I were to scrutinise the All India Radio reports, I would point to him and say that I have this grievance against AIR. I have a great respect for Mr Madhu Limaye. He studies things and sometimes says relevant things. But many times what he says is irrelevant. But the All India Radio has been very generous to him. He should not have any complaint against the All India Radio. His name appears in the All India Radio very prominently, while whatever I say, even if it is relevant, is ignored generally. Why? According to their own paper, their procession did not contain more than 10,000 people. But it was described by the A.I.R as a big procession, whereas the procession which we took out and which contained 35,000 to 40,000 people, was described as just a procession. I do not want to say much on this. If the All India Radio can be accused, it can only be accused of partially in favour of the Opposition. That is a fact. I will tell you another instance We were busy in the UP elections

[Shri H. K. L. Bhagat]

We were fighting the elections and the All India Radio was narrating the details of the Nav Nirman movement in Gujarat at that crucial time in the radio, TV and what not. These people say, 'Look, the correspondents are free to write' and they give their opinion against us. Mr. Pandit is a respected journalist. Journalists give the opinion one way or the other, but to pick out an instance to condemn the Government is, I would say, hitting below the belt. Now, he has narrated the story given by Mr. Jha and so many other Jhas. .. (*Interruptions*) Shyamnandan Babu, all these things are for the Mathew Commission to judge.

"मैंने सुना है", "मुझे किसी ने बताया है", "कहा जाता है", "कहा गया है" :

What is this? We are Members of Parliament. We are supposed to speak here not on the basis of hearsay, not even on the basis of some mere press reports. We are supposed to speak on materials which we honestly believe in and for which we have proof to quote as authentic. Now, merely on rumours, on talks, on hearsay and what not, to make these statements on a matter so serious like this is not proper for members.

Now, it was said that delay had been there in the appointment of the Mathew Commission. As I said, it was appointed a few weeks after the incident. When was the Warren Commission appointed to go into the murder of President Kennedy? In our own country when did we appoint Kapoor Commission after Gandhiji's murder? When we thought that there were still several aspects of the case which needed to be gone into.

Now, my friends have no faith in the CBI. Now, in this so-called licence case they rely on the CBI report and on the other hand, they condemn the CBI. Ultimately, they are the national agencies and they have unravelled many a mystery. They caught many cases. Now, my friend was trying to link this up with the deaths of Nagarwala, Anil Chopra, Kashyap and what not. For Mr. Jyotirmoy Bosu every case of death of anybody is a link in the chain of his imagination. We have discussed this Nagarwala case for a fairly good number of times in this House. Now, Mr. Nagarwala was caught immediately and it was the investigation agency which arrested him. It was again the investigation agency which recovered the money. He made a confession and what not. Similarly, our friend talked of Kashyap's case. We all know that there was an accident in which four people died and a tonga and a car collided and so on..

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour): Why no *post-mortem?*

SHRI H. K. L. BHAGAT: Therefore, I am saying that the irresponsibility of these allegations would convince nobody. The Opposition, some of the Opposition parties, I would say —my friend, Prof. Samar Guha can have some consolation—is deliberately and consistently following a policy of creating chaos, lawlessness and violence to beat this Government and the leadership of the ruling Party with any fabricated falsehoods, even I would say, lies, deliberate lies, knowingly deliberate and shameless lies, I would say that.

Now, what I would respectfully submit ... (*Interruptions*) I am not pronouncing my verdict whether any better medical treatment could have been given to Shri L. N. Mishra. I do not know. On the one hand, my friend, Shri Madhu Limaye says, 'Why did you not have the *post-mortem?*" Mr. Madhu Limaye should place himself in the position of a relative and I ask him if he would have asked for a *post-mortem* in such circumstances.

17 hrs.

He says, *post-mortem* has not taken place; he also said, accumulated blood

was found from his stomach, as if he has conducted the post-*mortem* himself, I have seen so many *post-mortems* before My dear friend, you know quite a lot, but you do not know law and medical jurisprudence The gamut of inquiry of the Mathew Commission is very comprehensive They will go into the whole question in all its aspects The CBI has to look into the question, who are the killers They have got to find out this thing He quoted *Link* and said one sentence from the Prime Minister's remark where she said, who has killed is not that important I tell you, you please read the whole of the interview, then you will find out the position It is the atmosphere which is most dangerous, the atmosphere is responsible for killing one today maybe, it would be responsible for many tomorrow, and it is this atmosphere which is very dangerous And it is this which the Prime Minister has been trying to emphasise You are accusing this Government You have a right to do so It is your job to do it, you are here for that purpose, you will have to do it, but I tell you, please remember your duty towards the nation This is very important Don't forget it By what you are now doing you are doing the greatest disservice towards this nation by coming into this House and saying such sorts of things, uttering such kinds of talks and giving out such kinds of arguments and you are only trying to deliberately mislead the people It is not right to make such kinds of accusations like these The Mathew Commission would be there, they will go into all these aspects and I hope you will have the courage to appear before the Mathew Commission You may place all your evidence before that Commission We will all expect you to apepar before them and place your evidence before them

It is a very great tragedy that Mr L N Mishra was assassinated in this manner but the greatest tragedy is that even after that murder some sections of the opposition continue to be as irresponsible as ever and they do not understand the writing on the wall The Mathew Commission must go into various matters, the CBI has got to find out the killers Mr Madhu Limaye said, that the CBI has not got the killer so far, as if the murderers are in his pocket and the CBI had only to discover them and take them out Sometimes the killers are murdered, such murders are carefully planned and so it takes time especially when it is systematic planned murder You cannot blame the Government in season and out of season for everything You should welcome the appointment of Mathew Commission

Sir I conclude by saying that this Adjournment Motion is a simple, pure crude attempt at blackmail, trying to stick mud at the Government at the Congress and the ruling Party and I am sure this is bound to be frustrated Thank you

SHRI PRIYA RANJAN DAS MUNSI (Calcutta—South) On a matter of personal explanation Sir, I was not in the House and I was quoted I came to know that Mr. Madhu Limaye quoted from a newspaper *Hindustan Times*. I came to know that some news item has been published in *Hindustan Times* involving my name, that I have said in some meeting yesterday that the doubts that are being created—the atmosphere of suspicion—from Shri Nagarwala's death to the death of Shri L N Mishra as a result of bomb blast should be cleared I did not say so It is absolutely wrong and false and I think the view expressed here is wrongly attributed to me This I would like to make clear before you

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour) Mr Chairman Sir today it is one month and fifteen days since this tragic event had taken place Now, what the Government has done

[Shri Jyotirmoy Bosu]

so far is to pre-empt this House and the Consultative Committee of Home Ministry by appointing a Commission of Inquiry headed by Mr. Justice Mathew.

I would like to know precisely from the hon. Home Minister as to what has this Commission got to do because my information is that most of the evidences are being destroyed, removed or nullified. This tragic event reminds us of what happened to Mr. Hemant Basu in Calcutta in 1971. who had visited this atmosphere for getting a political dividend? If the truth ever comes out, we would exactly like to know whose tainted hands were behind this murder. The tragic event shook me because I was one of the most critical persons in politics—not really against him as an individual but as a pillar of the Congress Government and the Congress Party and the lieutenant of Mrs. Gandhi as a biggest fundraiser for Mrs. Gandhi and her party. It is an irony of fate that the cause for which the late Shri Lalit Narain Mishra made himself controversial since the Congress split of 1969, it is the same cause that has destroyed him prematurely. There is not the slightest doubt that the people behind this are most powerful, resourceful and skilful. The police officers of the rank of Inspectors General working round the clock discovered six theories within three days of their work. And, Mr. Reddy—Reddy Garu—made a solemn assurance in Bihar that 'we are doing our best'. The CBI. knowing what it was, fully well, said and I am quoting from the *Times of India*:—

> "C.B.I. officers investigating the Samastipur bomb blast which claimed the lives of Mr. L. N. Mishra and two others are looking for the master mind behind the outrage and are confident of a major breakthrough within a week or so."

This is dated 8th of January 1975 from Samastipur. From 8th to 18th of February it is one month and ten days that had passed and, Mr. Brahmananda Reddy, tell me how many days make a week for you? Is it one month and ten days? Here is a clipping which you may look at. This is from the UNI news item which said:

> "A Team of CBI and State police officials investigating into the bomb explosion at Samastipur on Thursday, in which three persons including Railway Minister were killed have found some definite clues into the incident. according to reports reaching here."

It is done two days after the actual happening. They found definite clues What is it that they are trying to tell me? Are they trying to take us for a ride? Besides this, their sole job is, I regret to say, to harass the employee and the Opposition Parties and in torturing them. I am positive that the bomb that was found in the railway officer's house was planted by the Intelligence. One newspaper has said that the first bomb was hurled to destroy Shri L. N. Mishra. The second bomb was hurled to save the face of this lady. From this you can draw your own conclusion.

Then comes the very powerful Minister of State. Mr. Om Mehta. He says: He says from Lucknow:

> "Mr. Om Mehta, Union Minister for State for Home, today said the CBI report on its investigations on the Samastipur outrage in which Mr. L. N. Mishra and two others were killed, was expected in next two or three weeks."

Again I ask you Reddy Garu how many days make a week in the Home Ministry. I want to be enlightened as to who planted this time-bomb story first. I would like some Members in this House to understand how sophisticated a time-bomb is; what is its mechanism and how does it work. The first story they had to drop simply because the ceremony was scheduled to take place originally at 1.30 p.m. but in actual

reality it took place at 5 30 p m so that the time bomb story had to be discard ed because the planter of the time bomb would not first take out the time bomb and then replant it I do not take hashish and as such I can not absorb such stories

Then a story tag was planted in the press that it is an ordinary bomb which needs to be used through ignition or spark The Hon ble Defence Minister would bear me out that an ordinary bomb requires a certain length of fuse wire and it has to be a time-fuse—a fuse which will burn a minute a yard or a fuse which will b rn 30 seconds a yard or a fuse which will burn 15 seconds a yard So the fuse has to be according to a time length oriented burning rate Therefore if a bomb had been planted in the rostrum and that has to be ignited and exploded the fuse has to be operated by a person who will not be noticed t the same time He must be outside the security zone Further to hide the fuse wire you have to dig at least one foot of earth and dig it at least upto a dis tance of five hundred to six hundred feet and there you give a spark Tell me if somebody had to d g one foot of earth for five hundred to six hundred feet how could the freshly heaped earth escape notice? This is also another cock and bull story

Then the grenade story came The grenade they are talking about—I am not quoting from newspaper—is Pat 37 grenade which is something like a big egg of oval shape The surface of the grenade is like crocodile skin It is not like a cricket ball and as such it cannot be rolled so easily Then on the rostrum I gather there was a mattress I know people in certain regions like to have a mattress beneath and they like to sit on the mattress My dear Sir, Mr Defence Minister and Mr Home Minister on the mattress this grenade cannot be rolled because the man who will role the grenade will get noticed at once and secondly it can at the most be pushed as in carrom board game The man would not commit suicide as the effectivity of Pat 37 grenade is around 25 yards So, by the time, he could roll and get out, he will destroy himself That is also a thing which has to be ruled out I can tell you this much Now the pin is released through the tip and the lever hits the TNT high explos ve within the bomb and then the explosion takes place Within four seconds, it is over How is it possible that the grenade was rolled on the dais where hundreds of policemen and intelligence men were there where burning lights were there? Mr Chairman Sir you are an intelligent man I would like to understand from the hon Defence Minister who should at least know something about these things as to how is it possible! Sir the grenade was placed If I am given this job to do the grenade has to be placed in a built-in cavity when the rostrum was being built There should be a box not very long may be six inches long eight inches long to be on the safe side so that the lever can play wholly and fully It should be built in in a box the dimensions of which should be at least 8/8 inches and the depth should be at least four inches Now Sir the lever has to be released For the release of the lever, the pin has to be removed For the removal of the pin you have to fix a conduit pipe on a whole in the box and a wire has to be tied with the pin which has to be pulled by a man out side and the man has to run away immediately after pulling the wire You release the pin you release the lever then within four seconds the whole thing bangs and that is exactly, I suspect what had happened

Now Sir I would like to know one thing You are a lawyer I would like to understand why the electricity was cut off immediately after the explosion? The electricity mains were not on the dais but were elsewhere The man who pulled the wire put off the electricity so that it cannot be detected The dais was demolished the very next day Why? Because they did not want to take chances although I personally think that the box and the

[Shri Jyotirmoy Bosu]

conduit pipe, everything, should have been taken away by then. When the real culprits are in supreme authority, I assure you, Mr. Chairman, Sir, no truth will come out.

Sir, I have received a letter from a senior advocate. He has posed certain questtion and I would like Reddy Garu to reply to these questions here He has asked:

"Why late Mishra departed late from Delhi when he was to magurate the ceremony at 1.30 P.M. at Samastipur?

When the bomb exploded at 5.30 P.M., why Mr. Mishra was not admitted to Samastipur or Laheria Sarai Hospital, a district level hospital immediately?

Why the special train started at 8 P.M. from Samastipur and why it reached at 11 P.M. at Danapur when the same engine which was to leave for Muzaffarpur was to change its face?

What treatment was made and by whom in the meantime before train reached at Danapur at about 11 P.M.?"

I know that Dr Bhalla, who is the Chief Medical Officer of North Eastern Railway gave some sort of bandaging, saying that he is out of danger. I have got the clippings here. It was said that it was only a skin deep injjury. Firstly, it was said that it was on the thigh. Now, Sir, if a splinter of a 37-Paton grenade pierces into the abdomen, the whole dhoti and the under-garments would have been red with blood. There is no question about it. You cannot hide a splinter into a 37-Paton grenade. That is also a story which has to be discounted.

Now, Sir, the advocate has further asked:

"Why Dr. S. M. Nawab a retired eminent surgeon who has his own clinic at Laheria Sarai and reached Samastipur within an hour was not allowed interview with Mr. Mishra to treat him?

When Dr. Nawab ordered immediate admission of any bomb victim in his clinic without asking for charge and a few got their treatment there why Mr. Mishra was not allowed?

Why there was no response on telephone by Chief Secretary, Health Secretary, Secretary to the Governor and others when Mr. U. N Sahi tried to contact them on telephone after the incident on the evening?

Why Dr. U. N. Sahi was not given any satisfactory reply by Railway staff at Patna and why he was told that the special will not hault at Patna, though it halted there for ten minutes?

Why Dr. B K Smha was not even asked and nobody even talked to him while he waited till 11 P.M. in Danapur Hospital knowing him to be an eminent surgeon and doctor?

Why did the docors at Danapur first declare Mr Mishra out of danger and why Drs U. N Sahi and B K Sinha were contacted only at 4 A.M next morning but not earlier?

Did the late Mr Mishra weep to see Dr U. N. Sahi and Dr K Sinha in the hospital to save his life?

Why did Mrs. Indira Gandhi ask Mr Mishra . "

I will come to this later.

This is the position before me. The late Mr Mishra had said to pressmen at Patna, "I am feeling much better". Dr. Sahi had said that the late Mr Lalit Narayan Mishra's life could have been saved if instant medical care was given Did he not die of cardiac arrest? Is it not the same case with Nagarwala also? How can you create cardiac arrest? Can it not

be done by injecting something which is given to a woman who is giving a child birth if she is haemorrhaging? Does it not a coagulate the blood? Is it not a simple job to do?

I have already stated what Dr. Bhalla had said. We were really surprised and shocked when we saw Prime Minister Indira Gandhi declare here that the Railway Minister's assassination was well-planned, and squarely put the blame on the Sarvodaya leader Jayaprakash Narayan's movement in Bihar. So when you cannot catch anybody, catch the nearest man you can find. So she would not even hesitate to put the blame on a great leader like Jayaprakash Narayan. You may agree with him; you may disagree with him. In your party, there are people who are in agreement with him. Amongst us, there are many people who agree with him, and who do not agree with him. But it was most unfortunate that she had chosen Jayaprakash Narayan for this purpose.

The Prime Minister even said that it was a rehearsal for killing her. I remember on one occasion when she was the Home Minister, she said that the Jan Sangh was trying to kill her. In the Consultative Committee of that Ministry, the matter was taken up and some of us insisted: 'Kindly tell us what proof and evidence you have got to establish that your life is threatened by the Jan Sangh' After 45 minutes of bickering on both sides, she had to admit and confess that she had neither any evidence nor any proof in her hands. So what else shall I call it other than a gimmick?

I want to ask Reddy Garu why no post mortem was done. It is not obligatory that in a death under unusual, unnatural circumstances post-mortem is a must, unless you have something to hide, unless you have skeletons in the cupboard?

Then, is it or is it not a fact that on 23 December, the late Mr. Mishra was summoned by the Prime Minister and told to resign, taking 7 days' time to make up his mind? Is it also not a fact that on 24 December some of my friends from Bihar on that side went to the Prime Minister and pleaded that he should not be pressed to resign, and to that the Prime Minister reacted sharply, saying that 'Mr. Mishra has embarrassed the party, the Government and myself and therefore, he has to be out and lie low out of politics for some time?' In that context, I want to ask: If he did something, was not most of it for the party, the Government and Mrs Indira Gandhi? This is a very sad thing for us to understand.

There is a report in the *Hindustan Times* dated 5th February 1975. It says:

> "Two bags containing the personal papers of Mr. L. N. Mishra which are reported to have included two tape conversations giving an indication of an anti-Mishra conspiracy are missing. The tapes were said to have been handed over to the late Minister in December and are considered of 'primary importance'. The CBI in investigating various theories and possibilities in the Mishra murder case has reportedly got clues regarding the involvement of political figures"

This proves one thing, besides other things, that our telephones are tapped and tapes of tapped telephone conversations are taped again and the copies of the tapes in this case, were handed over to the late Mr. Mishra. That is what I hear. I am told that the Prime Minister's telephone was tapped; her telephone tapped tapes were handed over to the late Lalit Narayan Mishra and later on the Prime Minister came to know about it....

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: The telephone of the Prime Minister?

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Of course; I say that on my own responsibility. He had copies of the tape-recorded conversations that the Prime Minister had with somebody else, important in the party.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: We are in good company then.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Frankenstein will never spare anybody. I am told that the late Lalit Narayan Mishra out of sorrow and disgust said 'if I am drowned in the river, I shall not get drowned alone; it will be others also. He also said: I have collected Rs. 8 crores for the party, even if Jyotirmoy Bosu is correct and I might have swallowed a crore, what happened to the Rs. 7 crores that I handed over to the proper authority?. . . (*Interruptions*)

The late Lalit Narayan Mishra understood that his days were numbered and it is said that he warned his family not to open their mouth if something happened to him; he cautioned them: if they opened their mouth after anything had happened to him, the same fate will come on their children: that is the position.

We know that the genuine, original report of the CBI which included the name of the son of a great entrepreneur, the son of a VVIP, namely, Mrs. Indira Gandhi, first reached the hands of the late Lalit Narayan Mishra and he promptly did photostat copies of the same and sent those photostat copies to different places including one set to Nepal I want to know. The name of Ram Bilas Jha was mentioned Is it or is not a fact that he was employed by the police department once upon a time? Is it or is it not a fact that he also worked for the intelligence department once upon a time. Is it not a fact that he flew with Mr. Kapur on 6th January to Delhi? Are these not facts? Is it not a fact that he was the man who was preventing people, doctors from going inside?—A day will come. There was a picture called the Fall of Berlin; you will also see the picture; the fall of Indira. And the days are not very far off. Because you can shut me out here through the rules of procedure but you cannot shut people in the country who have understood the sort of the Government they are living under, not only through their miseries but also through this murder, politics of murder They talk about violence, etc. They are the people who are doing it all the time.

They wasted the whole of the last session on Tulmohan Ram licence scandal and at last they yielded. If they had yielded earlier, we could have discussed many other important issues concerning the people, namely, food, unemployment and so many other things Nothing was done. I assure you that after reading the CBI documents which we are not authorised to divulge at the moment, although Mr. Raghu Ramaiah charged me that I had broken the gentleman's agreement and then he had to withdraw it; I forgive him . . .

THE MINISTER OF WORKS AND HOUSING AND PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI K. RAGHU RAMAIAH): No, I never withdraw anything

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Then how did you allow it? You wanted us to stop perusal of the CBI report; you wrote to the hon. Speaker that Jyotirmoy Bosu had broken the gentleman's agreement but you swallowed it and you had to allow us to go and see it.

SHRI K RAGHU RAMAIAH: It must go on record; what he says is not true. I never stopped perusal. The other hon Members are there; they will stand by what I say.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: That is precisely the reason. That is why you were not taken in the Ministry in 1971. I know the reason.

My humble request is: let us maintain the dignity that the House deserves because it is the Peoples House. There should be a Parliamentary proh Let the Parliamen-

tary probe bring the truth to light and let those who are guilty be punished. And we are not interested in witch-hunting including the hunting that seems to have been started against poor railway employees after dismissing 16,800 of them for a legitimate strike. I tell you the hands behind this murder are all at Delhi. So, the CBI enquiry at Samastipur will only yield a big lemon and nothing else.

SHRI K. RAGHU RAMAIAH: On a point of personal explanation on what he said. When certain friends wanted to peruse beyond a certain date, I said there has been enough perusal and there was no question of further perusal. I did maintain that they had enough time to peruse the documents and therefore it should be stopped.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I was authorised by the non-CPI opposition to tell the press, not what we did in the CBI perusal operations, but other matters. Basing on that it was given in the "Times of India New Service". On that Shri Raghu Ramaiah in his wisdom wrote a letter to the hon. Speaker saying that Jyotirmoy Bosu had broken the gentleman's agreement by addressing the Members and therefore the CBI perusal would not take place any more. That letter was passed on to us. So, we went to the Speaker's house and told him that what he had reported was nothing but a cock-and-bull story. Therefore we were allowed to go on again because what he said was not true.

SHRI K. RAGHU RAMAIAH: This again is not correct. Let the record be set right. What I wrote to the hon. Speaker was whether under the circumstances in which Mr. Jyotirmoy Bosu went to the press it was necessary to further peruse the documents. I did not say the perusal should be stopped.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: No, Sir. I cannot divulge anything.

MR. CHAIRMAN: Let us not sidetrack the debate.

SHRI N. K. P. SALVE (Betul): In a debate which revolves around an event, an incident which was so unfortunate, which was so tragic, which was so grim, involving the death of a colleague of ours, a loveable person by all standards, I expected that at least in this debate the Mover and Shri Jyotirmoy Bosu, who have just made their speeches would show a modicum of dignity, restraint, moderation and responsibility so utterly necessary on this occassion. But having heard Shri Madhu Limaye and Shri Jyotirmoy Bosu I am inclined to consider that this adjournment motion has been brought forward entirely with the purposes of bursting a bloated bladder of lies, fallshoods, wild allegations and utterly baseless charges and any concern which is sought to be shown in this motion by the Mover or Shri Limaye about the death of Shri Mishra is sheer hypocrat. Therefore, I am impelled to conclude that this adjournment motion is no more than plenty of sanctimonious political humbug and it deserves to be treated as such.

Before I come to whatever I have to submit on this very grim and tragic incident involving the death of Lalit Babu, I would like to deal with two or three points which Madhuji made. So far as Shri Jyotirmoy Bosu is concerned, I attribute his speech and his wild allegations entirely to dementia and I cannot deal with him. Shri Bosu showed the knowledge of a ballistic and explosive expert. He had the experience of faithfully serving the British army which benefit most of us did not have fortunately. What he said in details about the explosives and about the ballistic techniques may be hundred per cent correct, but I must say one thing. Such immaculate precision with which he described the incident made me feel that he seems to have done the whole thing himself. Otherwise, it is impossible to comprehend such details about the explosion unless it is

[Shri N. K. P. Salve]

his own fertile imagination. If he is worth his salt, he should go and show his knowledge in front of the Mathew Commission. Justice Mathew is known not only for his learning and erudition but also for his fearlessness. What do we innocent members of Parliament know of explosives and ballistic techniques? If you are really sure of your facts, instead of wasting 20 minutes of Parliament, you would have done well to appear before the Mathew Commission. I hope you will go as a witness before the commission.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I shall consider your submission.

SHRI N. K. P SALVE: The amount of casualness I am seeing in the whole debate is most unfortunate. Let us not reduce this debate to sheer irresponsibility, making allegations and averments against each other. Let us do something which may help avoid the recurrence of this sort of thing again in the country

Shri Madhu Limaye is known for his being extremely studious. When I saw him at the library, I thought he was collecting a mass of evidence and he would come out with something which might be clinching and convincing about the motion. I want to deal with two of the many points he made. He asked, why was not a *post mortem* made and according to him, because it was not made there is something hanky-panky. On this point when I tried to interrupt him, he felt a little unhappy. I want to remind him only from a professional angle that a *post mortem* is done on a body only where there is any doubt as to the cause of the death, either proximate or approximate. In this case, for six long hours, the medical experts operated on the entire thorax starting from the throat to the abdomen. If a *post mortem* was considered necessary, it should have been left to the medical experts. They would have done it if there was something vague or ambiguous about the cause of the death, immediate or ultimate.

The second point he made is an extremely serious one. In Maharashtra and even in M.P. the rumour was widely circulated that the Prime Minister was alleged to have told Lalit Babu "You are no longer good to be a member of the Cabinet" and it was for this, Lalit Babu was sought to be got rid of. Fortunately, the Prime Minister was here and she immediately got up and said that the allegations were absolutely false and untrue. This should put an end to every controversy on this point. If you are capable of reason, I want to put one thing. In all these days, whatever else the Prime Minister may be guilty of, she is not guilty of one thing. If she does not like a minister, she cannot tolerate him even for one minute. She drops him like hot bricks. Was it necessary for her to go into this sort of thing? It was not.

श्री मधु लिमये : वह रहस्य जानते थे ।

श्री नरेन्द्र कुमार साल्वे : और यह रहस्य सिर्फ़ आपको ही मालूम है, दुनिया में किसी और को मालम नही है । या सारी दुनिया जानती है ये रहस्य । आपको क्या ललित बाबू ने बोला है और आप क्या उनसे ऊपर से पूछ कर आये हे । कैसी बाते करते है आप ? समझदारी की बात कीजिये । ऐसी इरेस्पोंसिबिल बात करने से अफ़वाह फ़ैलती है और यह ठीक बात नही है ।

If Mr. Madhu Limaye has any detailed information which can be of some help and use for investigation, he should give it either to the CBI or to the Mathew Commission which is going into the matter. If some political slants are there, if some unwritten or hidden things are there into which CBI is not going, I think the Mathew Commission can be entrusted to unearth all these matters. We want

that commission should come out with a detailed and complete report on the matter. We want a detailed analysis, a detailed report, of the events leading to this most heinous and tragic political murder of a colleague of ours.

Shri Madhu Limaye made another point. By a very strange process of logic he tried to establish who was to benefit by the murder, or by the death, of Shri L. N. Mishra. He said the opposition had absolutely no benefit out of his death. In fact, if he had survived, possibly they would have continued with renewed vigour his character assassination, right, left and the centre and made life hell for him .. .. (*Interruptions*) They characterised him as the sole symbol of corruption. Corruption has so much eroded the entire society that who is free from it in this country? These paragons of virtue on the other side should search their hearts and say, did they or did they not portray Shri L. N. Mishra as one person who symbolised the entire political corruption and as though the entire opposition was a paragon of virtue? Therefore, Shri Madhu Limaye by a very strange process of logic wanted to show that the opposition did not gain by his death. After all, what did we gain by his death? Shri Limaye argued "In fact, if he had lived, he would have been more useful to us," and for them probably provided a good target for character assassination and mud-slinging.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: (Begusarai): Do not bring in these things. It is unfair to a dead person.

SHRI N. K. P. SALVE: Shyam Babu, I wish you very long and very healthy life. I respect you. We had some private dialogue in this matter. I am the last person to be profane or irreverential to Shri L. N. Mishra. I have always maintained that this sort of campaign of vilification, these irresponsible charges, as if he alone was responsible for entire political corruption, this sort of vendetta, this sort of atmosphere that created an atmosphere of lawlessness in which this unfortunate tragedy looked inevitable.

I want to submit that this is an extremely fallacious argument by Shri Madhu Limaye. On the other hand, I submit, that the only reason why Shri L. N. Mishra met with such a tragic end, was because he was a Minister who belonged to the Congress Party and so he was chosen for a persistent attack by the opposition party for such unabashed character assassination by painting him as the embodiment of corruption. Because of continuous propaganda of this type, a feeling of hatred and bitterness was created against him, and that resulted in this. Therefore, to that extent, these people are responsible for this type of political murder.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Your law has done it, your Research and Analysis Wing.

SHRI N. K. P. SALVE: You have never been known for sense of responsibility. So, your interruption means nothing to me.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Why do you not face the people?

SHRI N. K. P. SALVE: I may inform Shri Bosu that this challenge of "go to the people" is not new to us. This was the very challenge which was given to us in 1971. We went to the people and you know what happened. We will again go to the people.

AN HON. MEMBER: What about the by-elections?

SHRI N. K. P. SALVE: Do not go by the results of a few elections or by-elections here and there. When people are faced with such economic crisis in the country, they are annoyed, and they have a right to be annoyed, and they show it in this manner. We will go to the people, and you will again come here with

[Shri N. K. P. Salve]

a microscopic minority, and you will still continue to brag in the manner that you have been doing for the last over two decades.

Be that as it may, in this debate I want to raise some very fundamental questions, which impinge on the question of the political atmosphere which has been created, an atmosphere in which political hatred, bitterness and intolerance has come about. Is not there bitterness? Is not there hatred? Is not there disrespect for law and order? Why is there manifestation of violence? Who has started it? History will some day judge. What I must submit today is that if an unstable majority is always a threat to democracy, an irresponsible frustrated Opposition is a menace and is a real threat to the survival of parliamentary democracy. That is what is happening today?

SHRI JYOTIRMOY BOSU. Follow Mujib Sahib.

SHRI N. K. P. SALVE: We do not need your advice. We have our own ideals. None of your advice matters to us. You may go to China or elsewhere and follow such advice as you think best and proper. So far as we are concerned, we cherish our ideals. We have our aims and objectives about which there is no ambiguity. It is well known and well established. We follow them, make no mistake.

The discontent of the people is sought to be harnessed for political opportunism. It is very easy to harness this sort of discontent of the people when the country is in the grip of economic peril. National calamities are not being spared by this motley crowd of political opposition even for the purpose of petty political gains. That does not matter. What matters really is whether this attitude of the Opposition of holding the majority and the country to ransom can ever nurture and nourish the norms of parliamentary democracy. The manner in which they have worked in the winter session—and this is the crux of the matter—has seen one death and unless they improve, I have no doubt in my mind, they will be responsible for the death of parliamentary democracy. For an effective opposition there are some requirements. It needs to be responsible; it needs to be moderate; it needs to understand the requirements of parliamentary democracy.

In the end I have only one submission to make and it is that we on this side of the House are extremely concerned about the investigations and inquiry If there is delay in the inquiry, I have no doubt in my mind that it is because of the complications involved. It was a deep-seated, deeprotted and well-planned conspiracy to get rid of a colleague of ours. I only hope that the Home Minister will not be hustled and bullied by these people in the opposition into unnecessarily expediting the investigation. Let it be a thorough and complete inquiry and let the culprit be brought to book. Let it be shown and let it be clear to the country that so far as these people in the opposition are concerned, they and they alone are responsible for creating this sort of an ugly political atmosphere. And even if they and they alone are responsible for vitiating the political climate, they would still not improve. I have no doubt in my mind about that. It is beyond them That is the greatest misfortune of this country. That is the greatest misfortune of our Parliamentary democracy. In 27 years we have failed to give to this country a responsible Opposition.

श्री भोगेन्द्र झा (जयनगर) : सभापति महोदय, इस सवाल पर विचार विमर्श में जो रुख लिया जा रहा है उसको मैं बदलने का प्रयास करूंगा। यह जो घटना हुई है यह प्राकृतिक घटना नहीं थी। इसमें एक केन्द्रीय मंत्री श्री ललित नारायण मिश्र और दो अन्य व्यक्ति जिन में एक विद्वान

परिषद्, बिहार के सदस्य श्री सूरज नारायण झा है तथा एक रेल कर्मचारी हैं उनकी हत्या हुई है । इनके अलावा 27 व्यक्ति घायल हुये है जिनमें दो हमारे सदन के सदस्य है तथा श्री राम भगत पासवान और श्री यमुना प्रसाद मंडल । ये भी उनमे से थे जो इस विस्फोट के समय मंच पर थे । इतनी बड़ी यह घटना जिसमे 29–30 आदमी मरे या घायल हुये दिन दहाड़े हुई । इस सदन मे हम सब अपने अपने राजनैतिक रुख रखते है । और अपने वक्तव्य [illegible] विचार [illegible] के मत वि[illegible] कदम उठाते है । हम सब एक राय के है कि चाहे इस हत्या मे किसी का भी हाथ रहा हो, लेकिन यह एक राजनैतिक हत्या है और किसी व्यक्तिगत विद्वेष या दुश्मनी मे यह हत्या नही हुई है । इस स्थिति मे हम सबको अपने बारे मे भी सोचना पड़ेगा, क्योंकि [illegible] हम दूसरा [illegible] कोई कदम उठाते है, कोई नीति अपनाते है तो यह खतरा हम पर भी आ जायेगा । हमारे जनतंत्र के लिये यह एक चुनौती है कि क्या हमारे देश मे अपने कामों, कदमों और वक्तव्यों के लिये व्यक्तिगत हत्या के जरिये ही इलाज करने का रास्ता अपनाया जायगा, या जो दूसरा तरीका है उसको अपनाया जायगा । इसलिये मैं समझता हूं कि दोनो तरफ के सदस्यों को इस बारे में कुछ मुद्दों पर एकमत होने की आवश्यकता है ।

क्या यह सही नहीं है कि जिस दिन यह दुर्घटना हुई, उस दिन 400 से अधिक राइफल और पिस्तौल-धारी पुलिस के लोग सुरक्षा के लिये वहां मौजूद थे ? वहां के अफसरों के माध्यम से मुझे इस बात का पता है । इसीलिये मैंने दरभंगा की आम सभा में कहा कि दिल्ली में मेरे घर के दरवाजे पर बम फेंका गया था और हमारे अपने आदमियों ने उन लोगों को खदेड़ दिया था ; पुलिस के सिपाही मेरे यहां नहीं थे, इसीलिये मैं बच गया ; अगर पुलिस के सिपाही वहां होते, तो मेरी जान भी चली जाती । वहां के अफसर इस बात का खंडन नहीं कर सके ।

क्या कांग्रेस का कोई सदस्य इस बात से इंकार कर सकता है कि इस घटना को रोका नहीं जा सका, इसमें बिहार सरकार के खुफिया विभाग, रेलवेज के खुफिया विभाग जिसके वह मंत्री थे, और केन्द्रीय सरकार के खुफिया विभाग की पूरी नाकामी और विफलता सिद्ध होती है ? इस बारे मे दो रायें नहीं हो सकती है । क्या श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी या कोई कांग्रेसी सदस्य यह कह सकते है कि हमारा इन्तजाम सफल रहा ? अगर उनका इन्तजाम सफल नहीं रहा, और अगर वे ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं चाहते है, तो इन्हें इमानदारी और हिम्मत के साथ यह बात कुबूल करनी चाहिये, और यह सदन इस बारे मे एकमत हो, कि इस मामले में खुफिया विभाग की सौ फीसदी नाकामी हुई । इसकी जिम्मेदारी यहां के मंत्री ले, या वहां के मुख्य मंत्री या पुलिस मंत्री ले, लेकिन इस जिम्मेदारी से वे बरी नहीं हो सकते । आखिर सुरक्षा का भार जनता पर नहीं था । अगर यह काम लोगों को दिया जाता, तो शायद वे इससे बेहतर कर सकते थे ।

जहां उद्घाटन [illegible] किया गया था, वहां पहरे की व्यवस्था थी । रेलवे एम्प्लाईज के डेलीगेशन और प्रतिनिधियों को वहां नहीं जाने दिया गया । लेकिन जो लोग वहां जाना चाहते थे, या तो पुलिस वाले उनको ले गये, या कांग्रेसजनों के सर्टिफिकेट के आधार पर वे भीतर घुस गये । यद्यपि वह कांग्रेस कमेटी की बैठक नहीं थी लेकिन जिसको कांग्रेसजनों ने सर्टिफिकेट दे दिया, वह अन्दर चला गया । ऐसे लोग भी वहां पहुंच गये, जो रेलवे में सैबाटेज करना चाहते है जो आनन्द मार्ग के प्रमुख व्यक्ति है । वहां लोगों ने मुझ से यह बात कही । मैंने उन से सी० बी० आई० के सामने यह बयान देने के लिये कहा । और सी० बी० आई० के सामने ऐसे बयान दिये गये है ।

मंच के पास [illegible] लोग मौजूद थे, जिनको वहां रहने की जरूरत नहीं थी । जो लोग अब तक कांग्रेस के दुश्मन है और रहे है,

[श्री भोगेन्द्र झा]

उनको भी कांग्रेसजनों ने सर्टिफिकेट दिया था। मैं यह बात इसलिये कहा रहा हूं कि इस प्रश्न को दलबन्दी का मामला न बनाया जाये, क्योंकि यह एक हत्या का मामला नहीं है—आगे भी ऐसी घटना घट सकती है।

जब यह घटना घट गई और मंच पर बैठे कई लोग घायल हो गये, तो वहां जो 400 पुलिस के अफसर और सिपाही थे, बजाये इसके कि वे घायलों की सेवा के लिये लपकते, लोगों को बचाने वाला, उठाने वाला अफसरों का सारा तबका ही भाग गया। इस घटना की तुलना तो उस लडाई से की जा सकती है जिसमें हमारे पन्द्रह हजार लोगों ने दोनों हाथ उठा दिये थे। वहां 400 राइफल वाले लोग थे सी०आई०डी० के लोग थ, बडे बडे अफसरों की फौज थी, लेकिन एक भी वहां नहीं रहा, जो घायलों को उठा सके।

मैं पूछना चाहता हूं कि जिस सरकार ने हजारों रेल कर्मचारियों को अभी तक नौकरी से बाहर रखा है, क्या उसने उन 400 लोगों में से किसी का भी मुअत्तिल किया है, जो सुरक्षा इन्तजाम के लिये जिम्मेदार थे क्या उनमें से एक को भी ससपेंड किया गया है। बाद में सरकार चाहे उनको इनाम दे देती, उनको भारत रत्न' प्रदान कर देती, लेकिन क्या इस काम में असफलता के लिये किसी भी कर्मचारी को, चाहे वह राज्य सरकार का हो, रेलवे सुरक्षा का हो या खुफिया विभाग का हो मुअत्तिल किया गया है? अगर नहीं किया गया है तो क्या यह इल्जाम नहीं लगाया जा सकता कि सरकार इस मामले को हल्के रूप में ले रही है। इतनी बडी घटना के बावजूद कोई भी घायलों का उठाने वाला उनकी सेवा करने वाला पानी पिलाने वाला या हास्पिटल ले जाने वाला नहीं रहा। मैं किसी की नीयत में नहीं जा रहा हूं, लेकिन इस नाकामी के लिये—चाहे वह जानबूझकर हुई हो और चाहे अनजाने में हुई हो—क्या किसी को मुअत्तिल किया गया है। अगर लोक सभा सदस्यों पर आक्रमण करने के लिए कोई छुरा लाता है, कोई बम फेंकता है या गोली चलाता है, और वाच एंड वार्ड अगर उसको न पकडे, तो क्या कोई उसके लिए जिम्मेदार ठहराया जायेगा या नहीं, क्या किसी को मुअत्तिल किया जायेगा या नहीं? इतनी बडी घटना के बाद भी किसी को मुअत्तिल नहीं किया गया है। जो सरकार श्रमिकों और किसानों को बेवजह दंडित करने में संकोच नहीं करती है, जो उनके विरुद्ध कडा रुख अपनाती है और शक्ति का इस्तेमाल करती है, उस ने इस मामले में अभी तक बेपरवाही का रुख अपना रखा है।

अगर सत्तारूढ़ दल यह समझता है कि एडजार्नमेंट मोशन सरकार का सेन्सुर है, तो हम समझते है कि जिन मुद्दों का मैंने जिक्र किया है, उन पर सरकार सैन्सुर के लायक है। जो सदस्य इधर से बोले है जिन्होंने इस मामले को दूसरा रूप देने का प्रयास किया है, मै उनसे सहमत नही हू। लेकिन कुछ बुनियादी मुद्दा पर हम सब को सहमत होना चाहिए। जनतन्त्र की रक्षा और विचारों को रखने की स्वतन्त्रता की रक्षा के बारे मे हमारी दो राये नही होनी चाहिए।

कांग्रेस के जो सदस्य बोले है उन्होने बहुत निराशाजनक बातें कही है। उन्होने ऐसा रुख अपनाया है कि जैसे कोई अचानक घटना हो गई हो, कोई आकाश मे बिजली गिर गई हो। इसलिए लोगों मे आक्रोश है, लोग उलझन मे है। अखबार क्या लिखते है, उसको छोड दीजिए। लेकिन लोग समझते है कि इस मामले में सरकार नाकाम साबित हुई है। सरकार की यह नाकामी दूसरे खतरे की घटी है।

पाकिस्तान में पहले वजीरे-आजम, लियाकत अली खां, की हत्या हुई, और जो कातिल पकडा गया था—सैयद अकबर, उस का भी कत्ल हो गया था। पाकिस्तान न तो दुनिया को, और न अपने अवाम को, बता सका है कि उसके पहले वजीरे-आजम के कत्ल के पीछे किसका हाथ था। हम यह भी जानते है कि पाकिस्तान के दुर्भाग्य से वहां

जनतन्त्र का खात्मा हुआ । हम यह भी जानते है कि अमरीका के राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या कैसे हुई । मै उधर जाना नही चाह रहा हूं । जो कुछ सदन में कहा गया है उसी के आधार पर मैं जानना चाह रहा हू । जो कुछ बाहर कहा गया है मैं समझता हू कि उन बातों में कुछ जाने की जरूरत है लेकिन अच्छा है कि मै उनमे न जाऊ । सभापति जी इशारा दे रहे हैं कि मैं न जाऊ ।

18 hrs.

एक माननीय सदस्य छोड़िए ?

श्री भोगेन्द्र झा : छोड़ने का सवाल ही नही है । आप छोड कर बच सकते है, मैं नही बच सकता हू । क्योंकि यह हुआ तो हमारे यहा है, बम हमारे यहा गया, आपके यहा नही गया । इसलिये मुझे चिन्ता है इस बात की । मै इस बात को कह रहा हू कि कुछ वर्षो में के जो हमारे देश पर खतरा है जनतन्त्र पर भी और आजादी पर भी और जिसके बारे में देश के बाहर भी आवाजे उठाई जा रही है जो काम पहले भी होता था लेकिन किसी अधिकारी ने खुल कर के यह नही कही, अब अमेरिका के अभी के राष्ट्रपति फोर्ड ने खुल कर यह बात नही कही है कि हमारी सी आई ए विदेशो में अपने हित की रक्षा के लिए सरकारो के बदलने के काम को करती रहेगी । इसके पहले किसी राष्ट्रपति ने नही कहा था । लेकिन यह फोर्ड ने, नये राष्ट्रपति ने इसको बाजाब्ता कहा है और चिली की घटना के बाद जहा की ट्रान्सपोर्ट हडताल के लिए करोडो डालर दिए गए थे जो चिली के जनतन्त्र का खात्मा हुआ, राष्ट्रपति की हत्या हुई, इस सब को हम जानते है और ऐसी परिस्थिति में जब भारत सरकार ने एतराज किया था सी आई ए की गतिविधियो के बारे में और सरकारो का तख्ता पलटने के बारे में तो किसिंगर ने कहा कि जब कोई पकड़ा जाय तो हमें खबर दीजिएगा, हम वापस बुला लेंगे । तो ऐसी चीज खुद हमारे देश में हो रही है . . . (*व्यवधान*) . . .

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : अभी तक एक भी खबर नही दी ।

श्री भोगेन्द्र झा : इन्होंने नही खबर दी, खबर देने का भार आप ले लीजिए ।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : सभापति जी, ये उनका साथ दे रहे है और भार हम ले ले । भार लेने के लिए हम है और राज करने के लिए, उसमे हिस्सा बाटाने के लिए ये है ।

श्री भोगेन्द्र झा : चूंकि अमेरिका को खबर देनी है इसलिए बाजपेयी जी को कहा ।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : अच्छा, रशिया को आप खबर देते हैं ?

श्री भोगेन्द्र झा : सभापति जी, मै कह रहा था कि अभी अमेरिका के डिफेंस सेक्रटरी ने यह बयान दिया है कि हमारा बेडा हिन्द महासागर मे लगातार जायगा कूटनीतिक उद्देश्यो के लिए । यह नही कि अमेरिका को कोई खतरा है, डिप्लामेसी के लिए यानी सरकारो को पलटने के लिए या भीतर के तत्वो का बाहर से मदद देने के लिए वह जायगा । अब यहा पर मैं यह कहना चाह रहा हू कि कोई भी सज्जन इस पक्ष के हो या उस पक्ष के हो, जो कुछ वातावरण पिछले कुछ महीनो मे तैयार किया गया बिहार में क्या यह सरकार को या विरोध पक्ष के लोगो को पता है या नही कि आनन्द मार्ग नाम की एक सस्था है जिसमें बहुत से अफसर शामिल है, पुलिस के बडे बडे अफसर शामिल है, रेलवे के अफसर शामिल है, विभिन्न विभागो के बडे बडे अफसर शामिल है जिसके प्रधान पर 6–6 हत्याओ का आरोप लगा है और वह जेल में बन्द है । उससे भयकर चीज यह है कि डेढ साल से वह अनशन कर रहे है और लोगो से कहा कि स्वस्थ भी हैं ।

श्री मधु लिमये : डेढ साल से वह केस पूरा क्यो नही हो रहा है इसके ऊपर भी कुछ कहिएगा ?

श्री भोगेन्द्र झा : एकदम सही बात है। इसीलिए तो मैं कह रहा हू। इसमें कोई दो राय नही होगी। तो वह डेढ़ साल से अनशन कर रहे हैं। और खाना छोडे हुए है।... (व्यवधान)...यह भी सही बात है कि अभी जो एक गवाह था, एक अवधूत जो उन्ही का शिष्य था, कचहरी में उसको मर्डर करने की कोशिश हुई, गोली चलाई गई, दिन दहाडे राजधानी में कचहरी में गोली चलाई गई, आनन्दमार्गियो ने गोली चलाई, जो सरकारी गवाह था अवधूत जो उन्ही का चेला था उस को मारने के लिए और इस हालत मे मैं कह देना चाहता हू कि बिहार सरकार के अफसरो का एक हिस्सा जो आनन्दमार्गी है, वह ईमानदारी से हो या बेईमानी से हो, यह मैं नही जानता, लेकिन उसका सबसे बडा आदमी जो अपने को भगवान कहता है, प्रोफेट भी नही, भगवान के द्वारा भेजा हुआ नही सीधा गौड कहता है और जो इसके पहले रेलवे का एक किरानी था, एक क्लर्क था, वह जो अपने को गौड कहता है, जो उसको ईमानदारी से यकीन करते है, ऐसे आफिसर सारे यहा मौजूद है, उनमे असन्तोष होगा या नही ? जब डेढ साल के अनशन की खबर आ रही है, वह क्या खाते है यह वह जाने, हमें पता है कि शरीर के लिए जरूरी सब चीज वह खाते है, लेकिन जब डेढ साल से अनशन मे है तो अफसरो का वह हिस्सा जो है वे गुस्सा होंगे या नही ? अफसरो का एक हिस्सा इसलिए नही कि इस पक्ष के साथ या उस पक्ष के साथ है बल्कि इसलिए कि सरकार के खिलाफ एक ऐसा हिस्सा विरोध के रूख मे है जो किसी काम में सरकार का सहयोग करने के लिए तैयार नही है और मुझे खतरा है कि विदेशी आक्रमण भी हो तो वह हिस्सा साथ देने को तैयार नही होगा। इसलिए मैं समझता हू कि इसको दलबन्दी का रूप हम न बनाए तो बडा बेहतर होगा।

एक माननीय सदस्य दलबन्दी तो प्रधान मन्त्री ने शुरू की।

श्री भोगेन्द्र झा : मैं सभी के लिए कह रहा हू।

मै एक दूसरा पहलू भी कहना चाहता हूं। जब यहा पर हम है चाहे इस पक्ष के हों या उस पक्ष के हो तो स्वाभाविक है कि सरकारी पक्ष एक दूसरे के बाहर नही जा सकता है। सरकार की रक्षा के लिए वे उठेंगे। इसी तरह विरोध पक्ष के लोग एक दायरे मे आगे नही जा सकते है। लेकिन कुछ मामलो मे तो हम एक है। क्या हम कहेंगे कि सदन मे कोई गलत बोल देगा तो उसको जूता मारो, थप्पड मारो या मुक्का मारो ? लेकिन क्या यह सब को पता है या नही कि बिहार मे जो कुछ आन्दोलन चला उसमे सब बे जिम्मेदार नेता ने कहा कि विधायको को तमाचा और मुक्का मारना क्षम्य है। मै पूछता हू कि अगर सबसे ऊचा नेता किसी दल का हो, वह अगर यह कहता है किसी को तमाचा मारने के लिए तो उसको कोई शिष्य हो, ईमानदारी मे भक्त हो, वह तमाचा से आगे अगर डडा भी बरसा देगा तो इसका वह लाजिस्क नतीजा होगा या नही ? इसलिए नही कि उसने कहा डडा मारने के लिए लेकिन अगर मै एक सब जिम्मेदार नेता होकर कहता हू कि तमाचा और मुक्का मार सकते हो विधायको को, इतना मै खुले आम कहता हू तो क्या इसका असर यह हो सकता है या नही नीचे के लोगो पर और यह बात खुले आम बिहार मे हुई है, सारे अखबारो मे खबर आई है। मैं इसलिए कहता हू कि अगर सर्वोच्च नेता इस प्रकार की बात कहे . (व्यवधान)... आप सुन तो लीजिए। मै जिस रूप मे कह रहा हू, मै आग्रह करता हू कि दल बन्दी के रूप मे इस को न लीजिये। मै निजी तौर से कह रहा हू क्योकि मेरे सामने दुर्घटनाए हुई हैं। मैं जानता हू कि लोकनाथ आजाद जो-हरिजन एम०एल०ए० है 1940 मे आजादी की लडाई मे शामिल रहे है, उन को छुरे से वार कर के उन की घडी और सारा सामान वगैरह छीना गया, लेकिन एक निंदा का शब्द

जो लोग इस आंदोलन मे शामिल है उन्होने नही कहा। हजारो के साथ यह किया गया। कितनो की घडियो छीनी गई। छुरा वगैरह सब कुछ चलाया गया। औरतो की साडी छीनी गई, मगर जो लोग आंदोलनो के समर्थन मे हैं .. (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य जिन नौजवानो को गोली मारी गई उस के लिए भी कुछ कहेंगे ?

श्री भोगेन्द्र झा मै जिस रूप मे कह रहा हू कृपा कर के सुन लीजिए। मै आग्रह कर रहा हू और मै फिर कहूगा कि मै इस को दलबन्दी का रूप नही बनाना चाहता हू। हम सभी यहा जनतन्त्र की बिना पर मौजद है। हमसभी लोग यहा लोगो मे चुन कर आए है और उस की बिना पर मौजद है।

श्री मधु लिमये ये कह रहे है कि दोनो किस्मो की हिंसा की बात कीजिए। सरकारी हिंसा की बात भी कहिए।

श्री भोगेन्द्र झा : एकदम सही बात है। सरकारी हिंसा से मैंने शुरू किया है।
(व्यवधान)

हम को हमारे पाव से सिर तक इस सरकार ने घायल किया है। मेरा खून लिया है (व्यवधान) हमारे इलाके मे 24 की हत्याए दो साल मे हुई है। इस सरकार की तरफ से जमीदारो ने की है। लेकिन मै इस मे नही जाऊगा।
(व्यवधान)
सिर से पाव तक मेरे शरीर का कोई हिस्सा नही है जहा इस सरकार ने घायल न किया हो। इसके बावजद भी हम इस सरकार को हटाना चाहेगे लेकिन हम मीरजाफर नही बनना चाहेगे चाहे इंदिरा गाधी हो चाहे कोई और हो, हम उस के लिये तैयार नही है क्योंकि एक हजार साल का इतिहास हमे कह रहा है, एक हजार साल का इतिहास चेतावनी दे रहा है कि खबरदार। जयचन्द को जायज गुस्सा था पृथ्वीराज पर कि पृथ्वीराज हमारी लडकी को ले गया। जयचन्द अगर पृथ्वीराज को कत्ल कर देता तो आज देश के लोग उस को देश द्रोही नही कहते। मगर उस ने जो कुछ किया उस का क्या हश्र हुआ यह हम जानते है। पृथ्वीराज मारा गया, जयचन्द खुद भी मारा गया। मीरजाफर को गुस्सा था सिराजुद्दौला पर। अगर मीरजाफर सिराजुद्दौला को मार कर नवाब बन जाता तो कोई उसे देश द्रोही नही कहता। बहुत से नवाबो ने बहुतो को मारा है। लेकिन उसने नवाब बनने की चेष्टा की भले ही ईस्ट इंडिया कम्पनी आए या कोई आए और उसके नतीजे के तौर पर दो सौ साल की गुलामी हमने भुगती। इसलिए हम पूरी ताकत से लडना चाहते है और लड रहे है इस पूजीवादी व्यवस्था को खत्म करने के लिए। जब तक पूजीवादी व्यवस्था रहेगी भ्रष्टाचार रहेगा, बारह आने सरकार की तरफ तो चार आने दूसरी तरफ भी . (व्यवधान) .

एक माननीय सदस्य अगर रूस आ जायगा तो ?

श्री भोगेन्द्र झा अगर रूस आ जायगा तब तो हमारे पुरखो का जो सपना था स्वर्ग का धरती पर कोई भूखा नगा नही रहेगा .. (व्यवधान)

श्री जनेश्वर मिश्र (इलाहबाद) मीरजाफर स्पीकर नाउ सर।

श्री भोगेन्द्र झा : आप चुप रहिये, कृपा करके चुप रहिये। मेरा आग्रह है कि जैसे रूस की बात करते है अगर रूस को बुलाना चाहते है तो हमारे पुरखो का जो सपना रहा कि धरती पर ऐसा समाज हो कि जिस मे न एक भूखा हो न एक नगा हो न कोई बेकार हो वह समाज कायम हो सकता है . (व्यवधान) और बिना रूस के आए हुए अपनी ताकत से ही हम चाहते है कि आप की मदद से, उन की मदद से और जो तैयार

[श्री भोगेन्द्र झा]

हो उन की मदद से बगैर खून खराबी के हिन्दुस्तान में शोषण रहित समाज बनाएं। लेकिन अगर आप का यह विचार हो की विरोधियों के साथ हिंसा की जाय, उन की हत्या की जाय तो भी स्पष्ट रूप से कह देना चाहता हूं कि यह नहीं चल सकता है।

इस हत्या काण्ड के बाद अखबारों में जो खबर आई—मैंने उन को पढा था। दिल्ली में एक सभा हुई—जय प्रकाश नारायण जी उस सभा में आये, उन्होंने उस समय शोक सभा के लिये कहा, हालांकि लोग इकार कर रहे थे, लेकिन उन्होंने भर्त्सना की और शोक प्रस्ताव के समर्थन में लोगों को जाने के लिये कहा। यह सभा शायद 4 या 5 जनवरी को हुई थी। उसी सभा में उन्होंने कहा था कि हम पर अभियोग लगाया जायगा। यह उन्होंने पहले कहा था। उस के बाद प्रधान मन्त्री जी ने तो कहा—उस का यहां पर काफी जिक्र हुआ है—उन्होंने कहा—किस व्यक्ति ने हत्या की है, यह निर्णायक चीज नहीं है, निर्णायक चीज यह है कि किन परिस्थितियों में यह चीज हुई है किस वातावरण में यह चीज हुई है उस वातावरण को पैदा करने के लिये कौन जिम्मेदार है। आज जब हम यह कह सकते हैं कि किसी व्यक्तिगत दुश्मनी में हत्या नहीं हो रही है तो फिर हम वातावरण के प्रभाव से बरी नहीं हो सकते।

एक माननीय सदस्य लेकिन किसी व्यक्ति ने तो किया है।

श्री भोगेन्द्र झा : हां, किसी व्यक्ति ने किया है, लेकिन इधर में जो भाषण हुए हैं, उस व्यक्ति पर नहीं हुए हैं जिस ने ऐसा किया है, उस के पीछे जो शक्ति है, उस पर भाषण हुए हैं। इसलिये हम इस तर्क में भाग नहीं सकते, जो वातावरण इस समय है, उस को भी हम दोषी बनाना होगा, उस को निर्मूल करने के लिए इधर के लोग हों या उधर के लोग हों, सब को मिल कर आगे बढाना होगा। हम ने जन-तन्त्र का जो रास्ता अपनाया है, उस में इस तरह का अपराध जघन्य है, इस को दलबन्दी का आधार नहीं बनाया जा सकता।

इसलिये मैं आग्रह करना चाहता हूं—जो स्थिति है जो सुरक्षा के मामले में हुआ जो इलाज के मामले में हुआ, जो लोग उन के साथ थे, जैसे रामविलास झा थे, जो बिहार के एम० एल० सी० हैं, उन के पी० ए० कोई गुप्ता भी साथ में थे हालांकि मेरी उन से बात नहीं हुई है, चूंकि बिहार में डाक्टरों की हड़ताल चल रही थी, इसलिये शायद ऐसा समझा गया कि दरभंगा या पटना अस्पताल में ले जायेंगे तो वहां ठीक से इलाज नहीं हो सकेगा, दानापुर में हड़ताल नहीं है वहां ले जाये तो ठीक से इलाज हो जायगा, शायद इसी लिये उन को वहां ले जाया गया। यह ठीक है कि डा० नवाब, बिहार के एक टाप सर्जन हैं, वे रिटायर्ड हैं अपना प्राइवेट क्लिनिक चलाते हैं, उन के यहां हड़ताल नहीं थी, वहां ले जाते तो शायद बच जाते। मुझे मालूम हुआ है, कि ललित बाबू का घाव इतना बड़ा नहीं था, जितना वहां के डी० आई० जी० का था, जिन को डा० नवाब के क्लिनिक में लेजाया गया और वे बच गये। मैं नहीं कह सकता कि उन को ऐसा क्यों नहीं सूझा। उन की नीयत या अदनीयत के बारे में मैं नहीं जानता लेकिन फिर भी यह तथ्य है कि अगर वे दरभंगा जाते और डा० नवाब की क्लिनिक में ले जाया जाता तो शायद उन की जान बच सकती थी। यह बात भी तथ्य है कि रेलवे के डाक्टरों ने जानबूझ कर या अनजान में ऐसा किया—लेकिन यह बात भी सत्य है कि उन्होंने ऐसा बयान क्यों दिया, जिस में कि उन की जान खतरे में थी, यह भयंकर नैग्लिजेन्स नहीं तो क्या है। इस तरह के बयान देने वाले को मुअत्तिल किया जाना चाहिये या नहीं किया जाना चाहिये इतनी बड़ी दुर्घटना हो जाए और उस पर कोई डाक्टर कह दे कि कोई बड़ा घाव नहीं है—यह क्या है। मरीज को आश्वासन देने के लिये अगर कोई डाक्टर ऐसी बात कहे तो

समझ मे आ सकता है, लेकिन वह तो ऐसी कोई बात नही थी। क्या ऐसा कोई अफसर मुअत्तिल हुआ है, यदि नही हुआ तो फिर इस सरकार पर निर्दयता और बेरहमी का इल्जाम आ सकता है या नही। जो जुर्म को होने दे या अनजाने मे ही जुर्म हो जाय तो क्या सरकार उस को मु.ति ल भी नही कर सकती थी— यह इलाज की बात नही है।

सभापति जी, जो स्थिति आज पैदा की गई है, उस स्थिति मे हमारे देश के लिये, हमारे जनतन्त्र के लिये अभी तक जो खतरे क घन्टी बज रही है

सभापति महोदय : अपोजीशन के 8 और काग्रेस के 10 सदस्यो को अभी बोलना है, आप कब तक बैठेंगे, मेहरबानी करके, अब अपने भाषण को खत्म कीजिए।

श्री भोगेन्द्र झा मैं 3 मिनट मे खत्म कर दूगा सभापति महोदय आप 25 मिनट बोल चुके है।

श्री भोगेन्द्र झा : मै तीन मिनट के अन्दर खत्म कर रहा हू। मैं कह रहा था कि मोअत्तिली की कार्यवाही न होने से एक सन्देह का वातावरण बना है। मै एक बात यहा और कह दू—रेल मन्त्री जब जब बिहार जाते थे वे जब रेल मन्त्री नही थे, तब भी वे बिहार जाते थे तो वहा के अनेको मिनिस्टर उन के साथ होते थे। लेकिन इस घटना के समय बिहार का कोई भी मिनिस्टर वहा मौजूद नही था सिर्फ एक मिनिस्टर थे जो उन के भाई थे। यह बडी लाइन के उद्घाटन का समारोह था, यह उत्तर बिहार के लिये ही नही, सारे बिहार के लिये एक महत्वपूर्ण चीज थी, लेकिन उस मौके पर कोई भी मिनिस्टर वहा मौजूद नही था— यह एक अनहोनी सी बात लगती है।

सभापति जी, एक बात का हवाला और देना चाहता हू—जिस समस्तीपुर मे रेलवे लाइन के उद्घाटन के लिये वह वहा गये थे, वहा 56 रेलगाडिया कैंसिल हैं—कोयले के अभाव के कारण। समस्तीपुर डिवीजन की पूर्वोत्तर रेलवे मजदूर यूनियन ने रेलवे अधिकारियो के सामने जो मागे रखी है उन मे कहा गया है कोयला खदानो मे कोयले का ढेर लगा हुआ है लेकिन रेल का डिब्बा न मिलने के कारण उठ नही रहा है, इधर कोयला न मिलने के कारण 56 गाडिया नही चल रही है। उन्होने कहा है कि हम जिम्मा लेते है हम कोयला ला कर गाडियो को चलायेगे। बिहार के कोयला खान मालिक रिश्वत दे रहे हैं कि कोयला लाने के लिये रेट मत दो अगर कोयला नही आयेगा तो ऐसी स्थिति पैदा हो जायगी जिस से ये कोयला खदाने हमारे पास आ जायेगी वे यह भी कहते है कि इंदिरा जी के कैबिनट मे उन के समर्थक है। अगर लोगो मे असन्तोष पैदा होगा तो राष्ट्रीयकरण के चलने हुए भी ये खदाने उन को मिल सकती है—ऐसा मालिक लोग बोलते है। ऐसी स्थिति मे जिस दिन रेल मन्त्री उद्घाटन के लिये गये थे त उन्होने यह भी कहा था कि इस बडी लाइन से सीधे कोयला मुजफ्फरपुर तक पहुचेगा जिस मे उत्तर बिहार की समस्या का समाधान हो सकेगा। मुझे रेल मजदूरो से यह भी मालूम हुआ है कि उस दिन भरी सभा मे उन्होने यह भी कहा था कि मैं आदेश दे रहा हू कि जो बर्खास्त रेल मजदूर है जो काम पर नही लगाये गये है, उन को भी हफ्ते-दो हफ्ते मे काम पर लिया जायगा। उन्होने नाम भी लिया था जिन मे एक नाम जोगी पास्वान का भी था कि इन को फौरन काम परवापस लिया जायेगा। उस मीटिंग मे पूर्वोत्तर रेलवे के जनरल मैनेजर—श्री चोपडा भी मौजूद थे। कुछ अफसरान इस बात को नही चाहते थे यह बात उन्होने खुले आम पचास हजार मजदूरो के सामने कही थी, मुझ से सैंकडो लोगो ने कहा है, मैने इस को वैरिफाई किया है—उन लोगो को शीघ्र काम पर वापस लिया जायगा जिन के खिलाफ सैबोटाज का या कोई गम्भीर आरोप नही होगा, जिस मे जोगी पासवान का

[श्री भोगेन्द्र झा]

भी नाम था। लोगो के मन मे शक है कि कही इस मे रेलवे अधिकारियो का हाथ तो नही है, क्योकि अभी तक किसी को वापस नही लिया गया है और जहा बम पकडा गया, महादेव साहू के घर मे, उस के लिये अगर कोई कहता है कि सैन्ट्रल इटैलीजेस के किसी आदमी ने बम रख दिया तो यह बडी गैर-जिम्मेदारी की बात है। क्योकि उस बच्चे ने बयान दिया कि वह रेलवे ट्रैक से उठा कर लाया और लडके की बडी बहन ने बयान दिया कि किसी ने फेका और वह फट गया जब कि खिडकी मे जाली लगी हुई है इसलिये फेकने का प्रश्न ही नही है ऐसे हालत मे फिर यह कहना कि पुलिस के कर्मचारी ने फेका यह गैर-जिम्मेदारी बात है।

हा, मै यह मानता हू कि अगर ललित बाबू डा० नबाब के क्लिनिक में पहुचाय जाते तो वह बच जाते। ललित बाबू मर गए, उन की पत्नी है बच्चे है, और उन के बच्चे से मेरी बात ललित बाबू की मृत्यू के बाद हुई उन लोगो से मकान खाली कराने की नोटिस गई है। एक मिनिस्टर जो इन हारनैस मारा गया है, हम ने इस मे पहले ऐसे मामलो मे कुछ परम्परा अपनायी है, स्वर्गीय शास्त्री जी और मोहन कुमार मगलम के बारे में। मैं जानता हू, कि सरकार वह परम्परा इस मामले मे निभाने जा रही है कि नही। जिस औरत का सूहग लूटा है इस मामले में मैं समझता हू कि सरकार को ऐलान करना चाहिए कि आप क्या करने जा रहे है कम से कम उन को घर से निकालने की बात तो न हो। यही मैं चाहता हू।

SHRI B. R. BHAGAT (Shahabad): Mr. Chairman, Sir, on the second of January this year, a terrible thing happened at Samastipur which gave to us, coming from the State of Bihar, a terrible pang of grief. But, to the country as a whole, it was one of the greatest shocks and it was expressed through the statements of the leaders of the country and Press comments.

18.23 hrs.

[SHRI ISHAQUE SAMBHOLI *in the Chair*]

I expected that when this matter was raised in the House by way of an adjournment motion, my friend and colleague, Shri Madhu Limaye, who is known for his great parliamentary ability and experience and his seriousness, would at least try to rase some basic and serious issue about it.

I followed his speech with great interest and I am sorry to say that he did not raise any of those basic issues. Rather, he skirted them Instead of that, he raised issues which were trivial and which had no bearing He has a very fine mind one of the best minds that we have in this House But probably he has used that mind to twist facts or to gloat over hearsays or some statements by somebody and prove certain conclusions which he has already arrived at They were pre-conceived conclusions about Government's complicity in the matter He said that a conspiracy was hatched here in the Government and that the conspirators were involved in it

Sir, the CBI itself is vigorously and actively pursuing the matter I think it is one of the best deployment of men The best resources in matters of investigation and intelligence that we have at our command are there at Samastipur They are engaged in this matter They have not been able to achieve a breakthrough so far. This is because these are matters about which we will be able to know only when it reaches a conclusive stage. The Government will be able to let the House know only when the matter reaches a conclusive stage. So, it is not correct to say that because they have not been able to arrive at certain conclusions within few weeks, the Government is responsible for it and that the Government does not want it. These are things which are surprising. Often times, we hear these things.

Whenever a thing is not achieved immediately, you go and attribute motives At times, you attribute the worst kind of motives

Now a Judicial Commission has been appointed It has been said that there has been inordinate delay True, the demand came from the Opposition

SHRI MADHU LIMAYE Also from Babuji

SHRI B R BHAGAT From both sides Therefore, a Commission was appointed But instead of welcoming it, you say there has been inordinate delay and Government should be censured for it

What are the real issues? In his last sentence, he said that probably the parliamentary system may be destroyed—or something to that effect Yes there is danger to the very political system we have been practising in this country My hon friend Shri Bhogendra Jha referred to it He is not right in saying that we on this side are weak in saying about We are saying this with the strongest voice at our command On this occasion it is the future of democracy of the parliamentary system in the light of the culture of violance and political assassination that is living its head in the country that should be discussed because this cult and the parliamentary system cannot go together

In this House in the last 27 years when we have been practising this system members on both sides should draw inspiration from the giants in the parliamentary leadership The country has been passing through very difficult times not only today Of course today we are facing a very great economic crisis On this occasion both the leaders of the Opposition and of the ruling party should have faced the national crisis together created the will and strengthened it It has been done in the past on very critical occasions

Right in the beginning when we came here as very young men in the 1950s, a great crisis took place in the country Refugees were pouring in from the erstwhile East Bengal Then the Nehru-Liquat Pact was signed The country was charged with emotion There were diverse opinions so much so that Dr Shyama Prasad Mookerjee resigned from the Government and joined the opposition But he did not create or spread hatred, suspicion or divisive forces He could have done it because feelings were so strong, but he did not do it Even though this matter was debated in the strongest possible language expressing viewpoints there was no character assassination, no attributing of motives, no creation of a vicious atmosphere as if we are enemies in two camps the Opposition and the ruling party We are not enemies we are part of the same process Therefore, why when we face today an economic crisis do we find hatred suspicion and divisive forces being created? If there is a failure on the economic front if certain polities have failed why is the Prime Minister being attacked in a personal way? Why is a spirit of hatred being created against her? And why, of all persons against the Prime Minister whose life is known to all? When Prime Minister Nehru was alive she did not join any office, though she could have Nobody can say she exploited the position of her father in any way So is it right to say that she is the fountain-source of corruption today? Is it not creating hatred against her? And why? Because the Opposition thinks that by creating hatred by demolishing the image of the leader they will be able to win a political game This is being done Is it fair? Is it parliamentary democracy?

SHRI NOORUL HUDA (Cachar) There is no personal character assassination

SHRI B R BHAGAT Then what is it? What can be more personal than this? When the late Railway Minister was attacked, Shri Madhu Limaye said We do not attack him We attack the Prime Minister. She is the fountain source of corruption . (*Interruptions*)

श्री मधु लिमये . यह मैंने नहीं कहा । मैंने यह कहा था कि हम व्यक्तिगत द्वेष की भावना से प्रेरित नहीं हुए थे ।

SHRI B. R. BHAGAT: I am coming to that. I will prove it. I will put it before this august House and the country. Who is contributing to the undermining of the political system? Can this political system survive when there is no spirit of accommodation, then the Opposition and the ruling party think that they are enemies of each other. I am citing Dr. S. P. Mookerjee, a great Opposition leader, a great Indian and showing what his conduct was on those issues, when the issues were no less important. Emotionally the situation was more charged at that time. I then come to the great national crisis of 1962 when the Chinese overran certain parts I can cite the leaders Atal Bihari Vajpayee who was here at that time, Mr. A. K. Gopalan, Mr. Masani and others. What did they do? Did they launch a campaign of great hatred against the then Prime Minister? No. See the conduct of the Opposition leaders at that time of grave national crisis and compare that with the conduct of the Opposition leaders today.

PROF. MADHU DANDAVATE (Rajapur): In 1962 during the time of the Chinese aggression when the policies were attacked, I think Pandit Nehru was mercilessly attacked as far as his policies were concerned. It is not correct to say that he was not attacked. The same thing is happening today. We are attacking the policies.

SHRI B. R. BHAGAT: You attack the policies but do not create hatred against persons. The country is passing through difficult times. Every home is having great privations and difficulties. Young people are restive. If you say that the present leadership is dishonest and that it has not good intentions and has not got public good at heart, then that is creating hatred. You will create such a feeling in the country. Young people will think of eliminating the leadership, not of removing them by vote. This is what is happening; this is what has happened in the assassination of our friend and colleague L. N. Mishra. I know that fact. He had told me thrice that whenever he would go to Bihar he said that he felt that people would murder him. I give the example. When he became the Railway Minister, for the first time he went to inaugurate some function at Dhanapur. My friend Shastri will know; he was leading an agitation. He was surprised and he got the shock of his life; he had to be rescued out and taken to a police van and he had to be escorted. A crowd surrounded him and he said: I could see the anger in their faces, if I had not been taken out, I would have been killed.

श्री रामावतार शास्त्री (पटना) : अगर वे मिल लेते तो स्थिति संभल जाती । वे मिले नहीं, इसलिए मसला ज्यादा गर्म हो गया ।

SHRI B R BHAGAT I am not saying you had done it. I am giving the second example. In the Madhubani election on the polling day, our P.C.C. President Sitaram Kesari was mobbed: he was attacked with spars and guns and it was only because the police came in time that he escaped. Otherwise, he has said openly that he would have been killed.

श्री ज्ञानेश्वर प्रसाद यादव (कटिहार) : वहां डेमोक्रेसी की हत्या की है । मधुबनी में आने के लिए सारी गाडियां बन्द कर दी थी और सारे लोगों का जाना बन्द कर दिया था और आप मधुबनी के चुनाव का उदाहरण दे रहे है ।

SHRI B. R. BHAGAT: That is no ground for killing persons. I was saying that Sitaram Kesari was surrounded by people who were armed with spears and guns, all sorts of lethal weapons. Mr. L. N. Mishra did a lot of things for North Bihar. Particularly with regard to railways, our friend

Mr. Bhogendra Jha said just how that he did a lot of things. The opening of a big railway line is a matter for rejoicing for the local people.

He reconstructed the lines which were disrupted 26 years ago in the Kosi area. He want to inaugurate them. At every place his meetings were disturbed and he had to be given protection. I am asking: Is this the way of protesting against policies? You can demonstrate, and in times of election you can defeat us. I am not worried. You are gloating over the fact that we lost two bye-elections. If the people do not feel that we deserve their confidence, we should not be here. But in a Parliamentary democracy one thing must be clear to everybody. The leaders on all sides have to play the game. The cult of violence and political assassination has no place in a Parliamentary democracy For over a year at least in Bihar, violence has not only been raising its head In fact, there has been the largest number of murders taking place in Bihar. In the district I come from, over 80 murders have taken place this year.

SHRI MADHU LIMAYE What is the Government doing?

SHRI B. R BHAGAT That is a different matter The Bihar Government's police budget is the largest ever. Rs. 4 lakhs every month is being spent on the police out of the depleted resources of Bihar. But this thing cannot be controlled by the Government alone. It may be that Bihar is going through a very difficult process Agitation is going on. What the Prime Minister said is very right. I do not know why Shri Madhu Limaye should contradict it when she said that it is these fears which lead to such acts which are more important. Who kills, who does not, is for theCBI to find out. Shri Bhogendra Jha has rightly said that the CBI may or may not be able to find out. We will be all happy, and the Home Minister should be jubilant and satisfied if he is able to come and tell the House that the CBI has been able to solve the mystery, but it may well be that the CBI is not able to solve the problem. It is not an unusual thing. Examples have been cited of the murder of Liaquat Ali Khan and President Kennedy. I may also add a third, the murder of Luther King, the Negro Leader. (*Interruptions*). This is creating hatred.

SHRI DINEN BHATTACHARYYA (Serampore): You are creating hatred (*Interruptions*)

SHRI B R. BHAGAT: Nobody in the United States said that President Johnson who was the beneficiary of Kennedy's death had got Kennedy killed. We are a peculiar country When I and the Home Minister were travelling together to attend the funeral of Shri Mishra in his village, on the 3rd January itself the editorial of *Mother Land* straightaway said that the responsibility for the murder was on the Government and on the Prime Minister. What do you say of this? Is it not creating hatred, tarnishing the Prime Minister's image in the country, making it appear that she is a diabolical person and therefore some young people may feel that she should be eliminated? Is it not encouraging political violence? Not only on the 3rd January, but from that day to at least the 20th January, for 14 or 15 days, every day the *Motherland* directly, indirectly, by innuendoes, by insinuations attacked the Prime Minister. After all this has been done, when the Prime Minister says that it is the result of the cult of violence practised by a section of the Opposition parties—she did not say all Opposition parties—our friend takes objection to it

Mr. Limaye said that this Commission has been appointed to pre-empt a discussion in this House. Every stu-

[Shri B. R. Bhagat]

dent of parliamentary procedure and pratice knows—and more so Mr. Limaya —that a discussion in the House cannot be pre-empted by the appointment of a judicial commission. I cannot believe that he is ignorant of this. He has been carried away by his partisan views about this matter. Mr. Bosu has brought out a ballistic theory of his own and said that it has been done in a particular way. It is precisely for the commission to find it out. The CBI will find out other matters. About the delay, Government was quick enough to appoint a medical board and they will bring those things to light. On a matter like this, we should not create further suspicions. It does not help anybody. If people do not like our policies, they may defeat us at the polls If they start eliminating us physically, today it may apply to us. Tomorrow it may apply to you. Therefore, it will never serve the purpose. Therefore, we should use this occasion to focus attention on the basic facts that lead to such terrible incidents in our public life. After the assissination of the Father of the Nation in 1948, as if he had taken all the poison, this country was relatively free from the cult of violence or political assassination except for a brief period in the area from where Mr. Jyotirmoy Bosu comes where there were some very regretable incidents.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I come from India. To say that I come from a particular part of the country is narrow parochialism.

SHRI B. R BHAGAT: It is not. It is a parliamentary pratice not to call members by name but to call them by the constituencies they come from. I am only following the correct parliamentary procedure when I say you come from West Bengal.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Then you should say Diamond Harbour.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: There has not been a single case of violence in my constituency. The only incident of violence there was when my house was attacked by the people belonging to Mr. Bhagat's party.

SHRI B. R. BHAGAT: I know that he has encouraged them but he does not want to own them.

Now this violence has again come in a big way. I would request all the hon. Members who love democracy, who believe in the parliamentary system, who want that to reign supreme so that it is effective and it is able to solve all the problems of the country let all such people put their heads together instead of blaming each other, instead of maligning each other, instead of creating hatred and divisive spirit against each other, let all of us rise to the occasion and say that we shall not allow this cult of violence, this political assassination, to prevail in this country and that we will solve all our problems through debate, through argument, through discussions and, at the time of elections, by the vote of the people and not by physically eliminating persons whom we do not like.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (ग्वालियर) सभापति महोदय, श्री बलि राम भगत जी ने जहां अपना भाषण समाप्त किया है, मैं वहीं से प्रारम्भ करना चाहता हूं। उन्होंने कहा है कि श्री ललित नारायण मिश्र की हत्या से रूप में, जो गम्भीर घटना घटी है वह हमें आत्म निरीक्षण के लिए प्रेरित करनी चाहिए और हमें मिल कर इस बात का प्रत्यन करना चाहिए कि भविष्य में इस तरह की घटना की पुनरावृत्ति न हो। मैं उनकी इस भावना का समर्थन करता हूं। लेकिन मिश्र जी की हत्या के तुरन्त बाद बिना राजनीति को बीच में लाए हुए उस हत्या का राजनीतिक विरोधियों को बदनाम करने के लिए प्रयुक्त करने के बजाए अगर यह भावना प्रकट की जाती और प्रधान मंत्री सभी विरोधी दलों के नेताओं को, प्रवक्ताओं को विचार विनिमय के लिए बुलाती तो शायद

पिछले डेढ महीने में देश में जो कुछ हो रहा है उसका रूप बदला जा सकता था और एक शोक पूर्ण घटना में से भी भविष्य के लिए लोकतंत्र को बलशाली करने का मार्ग ढूढा जा सकता था।

सभापति महोदय, इसमे सन्देह नही है कि जब मैंने बम विस्फोट की घटना की खबर सुनी तो मुझे गहरा धक्का लगा। उससे भी गहरा धक्का तब लगा जब मैंने हाजीपुर में सुना--मैं उस दिन हाजीपुर मे था, बिहार में था--कि बम विस्फोट के कारण श्री ललित नारायण मिश्र हमारे बीच मे से उठ गए है। लेकिन उसी दिन मैंने यह भी पढा कि बम विस्फोट के दुरन्त बाद रेल विभाग के उस मन्त्री श्री बूटा सिह ने अखबारो को बयान दिया जिस मे उन्होने कहा

"This incident showed that fascist elements have joined the Bihar agitation"

श्री राम सहाय पांडे क्या मदरलैंड भी पढ़ा है या नही ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी अगर माननीय सदस्य इस विवाद को फिर नीचे स्तर पर लाना चाहते है, तो मै उनको मुंहतोड़ जवाब दूगा।

श्री राम सहाय पांडे आप कैसे भी जवाब दे, लेकिन बताए कि मदरलैंड पढा है या नही।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी मै स्पष्ट कर देना चाहता हू कि मदरलैंड भारतीय जनसघ का पत्र नही है। मदरलैंड का सम्पादक जो कुछ लिखता है, वह हमारे निर्देश से नही लिखता है। उस में बहुत सी बाते ऐसी छपी हैं, जिन को मै पसन्द नही करता हू। मैं खुले सदन में यह बात कह रहा हू। मैने उस के सम्पादक को भी कहा है कि आप जो छाप रहे है, उन मे से बहुत सी बाते ठीक नही है। लेकिन सम्पादक स्वतत्र है, वह मेरे निर्देश से नही चलते है। मदरलैंड भारतीय जनसघ का मुखपत्र नही है।

श्री शंकर दयाल सिंह (चतरा) मदरलैंड के 4, 5 तारीख के अंक में जो छपा है, क्या वह आप की मर्जी से लिखा गया है या नही, क्या आप उस से सहमत हैं या नही ?

सभापति महोदय। माननीय सदस्य श्री वाजपेयी के बाद बोलने वाले है। मेरी दरख्वास्त है कि वह इनटरप्ट न करे। अपने भाषण मे जो चाहे कह सकते है।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी ये मदरलैंड की चर्चा कर रहे हैं। मैं हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड की कटिंग आप के सामने रखता हू। वह काग्रेस का पत्र है अगर आप पढेंगे, तो आप लज्जित होंगे। हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड कहता है कि श्री ललित नारायण मिश्र जिस बोगी मे जा रहे थे, उस की बगल मे बैठे हुए लोग शराब भी पी रहे थे और मिठाइया खा रहे थे।

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY PLANNING (SHRI A K. M. ISHAQUE): How do you say it is a Congress paper? Say that Hindustan Standard says so.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: How do you say that Motherland is a Jan Sangh paper?

श्री राम सहाय पांडे : यह किसी ने नही कहा कि मदरलैंड जनसघ का पत्र है। मै ने पूछा है कि क्या आपने उस को पढा है या नही। आप गर्म क्यो होते है ? (व्यवधान)

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : अगर देश मे कोई घटना घटे, तो समाचार पत्र उस घटना की तह मे जाने की कोशिश करेगे। उस घटना के सम्बन्ध मै जितनी भी खबरे उनको मिलेगी, वे उनको प्रकाश मे लायेगे। यह स्वतन्त्र प्रेस का एक तरीका है। उसमे

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

किसी का मतभेद हो सकता है । माननीय सदस्य 4, 5 जनवरी की बात कह रहे है । श्री बूटा सिंह का बयान किस तारीख का है ?

क्या कांग्रेस अध्यक्ष ने मिश्र जी की हत्या को आधार बना कर सारे बिहार आन्दोलन को, उस बिहार आन्दोलन मे शामिल दलो को, और बिहार आन्दोलन के सर्वोच्च नेता, श्री जयप्रकाश नारायण, को बदनाम करने की कोशिश नही की ? यह हमला किस ने शुरू किया ? जब हमले का जवाब दिया जाता है, तो आप कसमसाते है, तब आपको आपत्ति होती है । (व्यवधान)

श्री बूटा सिंह ने क्या कहा ?

"The incident showed that fascist elements had joined the Bihar agitation"

बम-विस्फोट यह कैसे साबित हुआ ? इसका मतलब यह है कि बम-विस्फोट आन्दोलनकारियो ने किया, और आन्दोलनकारियो मे फासिस्ट तत्व घुस गये है । सरदार बूटा सिंह ने बिना जाच किये यह पता लगा लिया । (व्यवधान)

श्री ज्योतिर्मय बसु 12 बजे कहा होगा ।

MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI THE DEPUTY MINISTER IN THE BUTA SINGH) Sir, I take objection to this

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE Objection to what? Do you want to deny your statement?

SHRI BUTA SINGH On a personal explanation

I have never in this Parliament, in the last 12 years seen such a mean attack of personal nature as Shri Jyotirmoy Bosu has done to me

About the press report which Shri Vajpayee quoted, certainly, I have a right to deny or to accept it As he was quoting—I am not interrupting him, let him quote it—I will say, if I am called upon to say, about the correctness of the report that has been published Any thing everything, can be published and it is being published every day Many things are being published which have never taken place

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE Am I to understand that he did not make that statement?

SHRI BUTA SINGH What I said was (*Interruptions*)

सभापति महोदय मै फिर से कहता हू कि अभी बोलने वालो का काफी नम्बर मौजूद है । आपोजीशन के लीडर भी काफी बाकी है और कांग्रेस के मेम्बरान भी काफी बाकी है । मै कोशिश करूगा कि ज्यादा से ज्यादा मेम्बरो को एकामोडेट किया जाय । लेकिन अगर इस तरह पर्सनल डिसकशन शुरू हो गया, या सवाल-जवाब होने लगे, तो आप अन्दाजा कीजिये कि शायद हमे 12 बजे तक बैठना पडेगा । इसलिए मेहरबानी करके आप लोग इन्टरप्शन न कीजिये ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी यह बडे खेद का विषय है कि एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना का देश के मानस को झकझोर कर जगाने के लिए प्रयोग करने के बजाये एक प्रचार का अभियान छेड दिया गया । (व्यवधान) प्रधान मत्री की पहले दिन की प्रतिक्रिया सही थी, लेकिन कांग्रेस अध्यक्ष बरुआ की नही । उन्होने एकदम फासिस्ट ताकतो को दोष देना शुरू कर दिया । (व्यवधान) मगर प्रधान मत्री ने 7 तारीख को जो कुछ कहा, वह उनके पद के गरिमा के अनुकूल नही था । वह हत्या के तथ्य की तह मे पहुचने के लिए जाच करने वाले तत्र को सहायक भी नही हो पाता ।

"The P.M. Today warned the nation that Shri L. N. Mishra's murder was only "a rehearsal" for a bigged catastrophe."

क्या हत्याओ के रिहर्सल हुआ करते है ? क्या हत्या करने वाला व्यक्ति पकडा नही जा सकता ? क्या हत्या करने वाला कटघरे मे खडा नही किया जा सकता ?

श्री राम सहाय पांडेय : यह एक विचारधारा थी । यह व्यक्ति नही था, विचारधारा थी । व्यक्ति प्रतीक था ।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : अब ये विचारधारा पर आ गए ।

सभापति जी, आल इडिया रेडियो को देश मे एक जनून का वातावरण पैदा करने के लिए प्रयुक्त किया गया । आज सरकार इस बात के लिए श्रेय लेना चाहती है कि उसने चीफ जस्टिस की अध्यक्षता मे एक कमीशन बनाया है, मगर भारतीय जनसघ के अध्यक्ष मिस्टर अडवानी ने उसी दिन हिसा की निन्दा करते हुए यह माग की थी कि सारे मामले की जाच के लिए कोई हाई पावर कमीशन बनना चाहिए, जो आल इडिया रेडियो से श्री सी० एम पडित ने जो प्रसारण किया उस मे क्या कहा था

"It is obvious from the demand of the Jana Sangh Leader for a high-powered inquiry into the bomb outrage at Samastipur He seems to be more worried about the blame coming to the parties behind the Bihar agitation rather than about the blow such an outrage is bound to strike at the root of democratic functioning."

यह सूचना मत्रालय से सारे ब्राडकास्ट मंगा कर मैंने रखे है । एक एक ब्राडकास्ट आप देखते जाइये, लगातार विरोधी दल पर लांछन लगाया गया है ।

19 hrs.

एक माननीय सदस्य : पंडित से झगडा कीजिए ।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : पडित से झगडा नही है । लेकिन आल इडिया रेडियो कोई पडित की जायदाद नही है । आल इडिया रेडियो सरकारी है . (**व्यवधान**)

.. हल्की बातो पर मत आइए । जरा गम्भीरता से बात कीजिए । श्री एल० एन० मिश्र की हत्या का लाभ उठा कर देश मे एक हवा बनाने की कोशिश की गई । यह हवा बनाने की किसने कोशिश की ? अगर आपको मालूम है कि हत्यारा कौन है तो जाच करने की जरूरत नही है । अगर बिहार के आन्दोलन के समर्थक हत्यारे है, गिरफ्तार कर लीजिए, मुकदमा चलाइए, फिर भी आपको अदालत मे साबित करना पडेगा ।

मैंने इसीलिए भगत जी के भाषण की जहा समाप्ति थी वही से शुरू किया । आज भगत जी आकर सदन मे कहते है कि एक बडी घटना हो गई है, हमे आत्म-निरीक्षण करना चाहिए । कोई कांग्रेस का मेम्बर आत्म-निरीक्षण करने के लिए तैयार है ?

श्री जगन्नाथ राव जोशी (शाजापुर) . आत्मा हो तो न करे ।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : कोई तैयार नही है । अगर आत्म-निरीक्षण की तैयारी होती तो श्री एल० एन० मिश्र की हत्या से सब को धक्का लगना चाहिए था और इस बात के लिए बैठना चाहिए था कि इस तरह की बात कैसे हुई ? आल इडिया रेडियो, समाचारपत्र और वहा से जो खबरे आई मेरे मित्र श्री मधु लिमये ने उनका उल्लेख किया है । रोज एक नई खबर समस्तीपुर से आ रही है । किसी को नही छोड़ा गया ।

श्री राम सहाय पांडे : इसी सदन मे उनका नाम ठीक से नही लिया गया । उनके

[श्री राम सहाय पांडे]

नाम का उच्चारण ठीक से नहीं किया गया। नगदनारायण मिश्रा कहते थे उनको बसु जी। यह नफरत नहीं है तो क्या है ?

SHRI JYOTIRMOY BOSU: We have expressed our deep sorrow, and if these people are trying to heap up the insults on that man in order to attack us, that will only show h ow mean and small they could be.

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : सभापति जी, श्री भगत ने एक बात और कही। उन्होंने कहा कि श्री एल० एन० मिश्र जब बिहार जाते थे तब उन्हें अपनी सुरक्षा की चिन्ता होती थी। वहां एक रेलवे प्रदर्शन का भी उन्होंने हवाला दिया। क्या इस बात की जानकारी बिहार की सरकार और केन्द्र की सरकार को नहीं थी ? अगर थी तो श्री एल० एन० मिश्र की सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध क्यों नहीं किया गया ? मंत्री की रक्षा की जिम्मेदारी सरकार के ऊपर है। यह ठीक है कि कोई सार्वजनिक नेता सौ प्रतिशत सुरक्षित नहीं रह सकता। जिस जनता में जाना है, लोगों में घुलना मिलना है, सार्वजनिक सभा में भाषण करना है उसके जीवन रक्षा का दायित्व केवल पुलिस पर नहीं सौंपा जा सकता। लेकिन मिश्र जी का मामला अलग था।

दिल्ली के एक श्री के० ए० लक्ष्मण प्रभु हैं जो अपने निजी तौर पर गुप्तचरी का काम करते हैं। सरकार को कई बार सूचना दे चुके हैं कि कौन टैक्स की चोरी कर रहा है, कहां वित्तीय मामलों में कितने धांधली की है। उन्होंने यह बताया कि जुलाई 1974 में उन्हें निश्चित जानकारी मिली थी कि मिश्रा जी की हत्या का षडयंत्र किया जा रहा है। इस बात की सूचना उन्होंने मिस्टर यूसुफ़ रहीम डी० आई० जी० सेक्योरिटी को दी थी। जुलाई के बाद अक्तूबर 1974 में मिस्टर प्रभु ने फ़िर लिख कर सूचना दी कि उन्हें पता लगा है कि फ़िर मिश्रा जी की हत्या की साजिश की जा रही है। यह सूचना उन्होंने मिस्टर गुप्ता ऐडीशनल डी० एस० पी० सेक्योरिटी को दी। श्री गुप्ता ने एक अखबार के प्रतिनिधि से स्वीकार किया है कि हां हमारे पास यह लिखी हुई सूचना आई है मगर उन्होंने कहा कि हमने श्री प्रभु से विवरण मांगा, उन्होंने विवरण नहीं दिया। लेकिन किसी ने श्री रहीम से पूछा कि जुलाई 1974 में सूचना मिलने के बाद उन्होंने क्या कार्यवाही की ? अगर लिखा हुआ विवरण श्री प्रभु ने नहीं भेजा तो क्या श्री गुप्ता का यह काम नहीं था कि उन्हें बुलाते और उन से पता लगाते कि आपके पास कहां से यह जानकारी मिली है ? यह नहीं किया गया। क्या यह असावधानी नहीं है ?

श्री मिश्रा बिहार गए। अब कहा जाता है कि बिहार के मुख्य मंत्री ने भी केन्द्र को लिखा था कि श्री मिश्रा जी के लिए यहां शंका है। अब यह भी कहा जा रहा है कि उन्होंने यह भी कहा था कि समस्तीपुर का इलाका ऐसा है कि जहां समाज विरोधी तत्व सक्रिय रहते हैं। लेकिन क्या यह जिम्मेदारी नहीं थी बिहार सरकार की और केन्द्र सरकार की भी उनकी रक्षा का पूरा इंतजाम करती ? सभापति महोदय, मैं 2 जनवरी को .....

श्री इन्द्र नन्दन सिंह : समस्तीपुर वैसा इलाका नहीं है, यह अपमान है समस्तीपुर का।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : मैं समस्तीपुर के खिलाफ़ कुछ नहीं कहना चाहता हूं। मगर यह अखबारों में आ रहा है।

रेलवे लाइन को छोटी लाइन से बड़ी लाइन में बदलने का कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। यह कार्यक्रम पहले से निश्चित

था । मैं समस्तीपुर स्टेशन पर गया । मैंने उस मंच को देखा । वह मंच स्टेशन के बाहर नहीं था, वह पहले प्लेटफ़ार्म पर नहीं था, वह बीच के प्लेटफ़ार्म पर था । वहां कोई भी बिना इजाजत के नहीं जा सकता था । भीतर पुलिस का कडा पहरा था । सेंट्रल रिजर्व पुलिस थी, बोर्डर सेक्योरिटी फ़ोर्स थी, रेलवे प्रोटेक्शन फ़ोर्स थी, सब गुप्तचर सेवाएं वहां मौजूद हो गई थी । बिना इजाजत के वहां आना सभव नही था । फिर हत्यारा मंच के पास कैसे पहुंचा ? टाइम बम नही था । मैंने दूसरे दिन मंच को देखा । बम मंच को तोड़ कर नही फूटा था । मच जैसे का तैसा था । अगर मंच बनाते समय टाइम बम रख दिया जाता तो मच टूटना चाहिए था । मंच नही टूटा । वह बम फेंका भी नही गया । कोई व्यक्ति जो मच पर था या मच के निकट था हो सकता है मेरे मित्र ज्योतिर्मय बसु इससे मनभेद रखते हो, वह बम के बारे मे ज्यादा जानकार है, मै उतना जानकार होने का दावा नही करता, मेरा अगर बम मे नाता है तो हर हर बम बम मे नाता है, और किसी बम से नाता नही है . . .

श्री ज्योतिर्मय बसु : इसीलिए न बैचलर रह गए ।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : जो पत्रकार वहां मौजूद थे उनका कहना है कि उन्होने कार्यक्रम की समाप्ति के बाद जब मिश्रा जी चलने लगे तो कोई चीज लुढकती हुई देखी . . .

एक माननीय सदस्य : यह कहते है कि लुढका नही सकते . . . . .

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : यह अलग चीज है, यह जांच मे पता चलेगा लेकिन कोई व्यक्ति वहा था, वह वहा कैसे पहुंचा ? ऐसे व्यक्ति को वहां कैसे पहुंचने दिया गया ? क्या यह जाच करना वहां के सुरक्षा अधिकारियों का काम नहीं था ? यह सवाल अभी अनुत्तरित है ।

दूसरा सवाल ह है कि जब वे घायल हो गये तो उसके बाद जो कुछ हुआ, वह अगर संयोग है तो वह इस देश के दुर्भाग्य की कहानी है और यदि वह योजनाबद्ध है तो फिर सुरक्षा के प्रबन्धक, अस्पताल के अधिकारी और रेलवे का प्रशासन इस हत्या मे शामिल है । अगर आप हत्या की साजिश की बात कहते हैं तो क्या यह साजिश का हिस्सा था कि मिश्र जी घायल हो गये और उन्हे रेल के सैलून मे ले जाया गया . . . . .

एक माननीय सदस्य : कौन ले गया ?

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : जो लोग उनके साथ थे, वे ले गये ।

एक माननीय सदस्य : सुरक्षा अधिकारी नही ले गये ।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : खबर वह है कि वे तो भाग गये । जो मंत्री जी की रक्षा के लिए गये थे, वे अपनी रक्षा के लिए वहा से पालायन कर गये . . . . . (**व्यवधान**) . . . . . इतने सालो मे क्या आप ने ऐसी ही पुलिस तैयार की है ।

सभापति महोदय, अब इसके दो पहलू है—एक डाक्टरी सहायता का—डा० भल्ला वहां थे, कैसे थे मैं नही जानता । उनका मुख्य कार्यालय गोरखपुर है । किसी रेलवे के उद्घाटन मे गोरखपुर डिवीजन का कोई रेल्वे का चीफ़ मैडिकल अफसर आये—मैं इसके औचित्य को नही समझता । लेकिन वे वहां थे और जैसा मेरे मित्र मधु लिमये ने कहा कि गोरखपुर का मैडिकल आफिसर वहां पहुच गया, लेकिन बिहार का कोई मंत्री वहां नहीं गया, क्यों नही गया ? . . . . .

एक माननीय सदस्य : सिवाय जगन्नाथ मिश्र के ।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : वे उनके भाई थे ।

एक माननीय सदस्य : विधान सभा चल रही थी ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: विधान सभा चलने के बाद भी आप किस तरह से सदन से गायब हो जाते हैं—हम जानते है । हैदराबाद मे मीटिंग चलती रही और प्रधान मन्त्री जी हैदराबाद के विमान ह" पर पहुची, तमाम सदस्य उनसे मिलने के लिये चले गये। श्री मि ाा का वहा बडा आदर और मान था, बहुत से मन्त्री तो उन के बनाये हुए थे, लेकिन उनमे से कोई भी मन्त्री वहा उम दिन उपस्थित नही हुआ । अगर मिश्रा जी के पहलू को छोड भी दे तो वह ममारोह एक महत्वपूर्ण ममारोह था । छोटी लाइन से बडी लाइन मे बदलना उस क्षेत्र के लिये एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम था, ऐसे अवसर पर वहा किसी मन्त्री का उपस्थित न होना—क्या उस सयोग मात्र था !

डा० भल्ला का कहना है—"मैंने कहा था कि मैं तो फिजीशियन हू । क्षमा कीजिए—मैं डा० भल्ला से बात कर चुका हू। उन्होने कहा मैं f जीशियन हू, आप को चोट लगी ह, यह सर्जन का काम है, रेलवे सर्जन यहा उपलब्ध हैं, मैं उन को बुला सकता हू, लेकिन मुझे नही बुलाने दिया गया । मैं पूछना चाहता हू— उन को किस ने रोका ? मैं सवाल खडे कर रहा हू जवाब चाहता हू । मैं चाहता हू कि कमीशन मे इन बातो के उत्तर निकले ।

सभापति महोदय, बम विस्फोट से मिश्र जी की जान नही गई । जो उन से अधिक घायल थे, उचित इलाज के कारण बच गये । अगर उन का भी तुरन्त ठीक इलाज किया जाता तो मिश्र जी आज हमारे बीच मे होते । लेकिन खून बहता रहा, तिल-तिल कर प्राण निकलते रहे और उन के साथी, उन के मित्र पुलिस अधिकारी, सुरक्षा अधिकारी, कोई फैसला नही कर सके कि उन को चोट लगी है, बम विस्फोट के कारण घायल हुए है, उन को तुरन्त मैडिकल सहायता चाहिये । उन को दरभगा ले जा ा जा सकता था, लेकिन नही ले गये। यह निर्णय किस का था कि उन को दानापुर ले ज ा जाना चाहिये ।

जो मिश्र जी के समर्थक है, जिन मे हमारे कांग्रेसी मित्र भी है, वे कह रहे है कि समस्तीपुर गाडी चलने मे इतनी देर क्यो हुई ? दुर्घटना सोडे पाच बजे हुई, लेकिन गाडी चली—8–20 पर, केवल इजिन का मुह बदलना था । जो गाडी पर बैठे थे, उन्होने बतलाया कि हम समझते थे कि गाडी चल रही है लेकिन ब द मे पता चला कि गाडी शटिंग कर रही है – इतनी देर क्यो हुई ? इसका जवाब देह कौन है ? क्या यह भी बिहार के आदोलन मे भाग लेने वालो यह साजिश है ?

SHRI DEVENDRA SATPATHY (Dhenkanal) When you call Bihar a total revolution you have to take responsibility for everything that happens there including Mr L N Mishra's death

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सभापति जी, श्री सतपथी जी के कथन से मै भी सहमत हू । देश मे जो कुछ हो रहा ह, हमे सब की जिम्मेदारी लेनी है और देश का शासन इन लोगो के हाथ मे ' यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि ह जिम्मेदारी भी हम को लेनी है । सभापति जी, आप घडी को मत देखिए—मै इधर उधर की बात नही कर रहा हू . .

सभापति महोदय आप 30 मिनट ले चुके है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं इधर-उधर की बत नही कर र ा हू—

इधर-उधर क बात न कर,
बता कि कारवा क्यो लुटा ?

मेरे लिये यह राजनीति का प्रश्न नही है, लेकिन राजनीतिक प्रश्न आपने बनाया है। मुझे दुख हुआ, जब मैं बिहार मे घूम रहा था—

मैं उस मुद्दे पर आना चाहता हूं, आप मुझे थोडा समय दें, मेरे साथ ऐसा अन्याय न करें। क्या आप ने डा० साही का वक्तव्य पढा है—डा० साही कहते हैं—

"Dr U N Sahi told UNI today that Shri Mishra could have been saved had he been allowed to be examined by a team of surgeons who rushed from Darbhanga to Samastipur soon after the blast

उन्हे देखने नही दिया गया—

"Under what circumstances these surgeons were not allowed to examine Shri Mishra and who were those medical experts on whose advise he was allowed to be brought to Patna in a train, only God knows"

आगे डा० साही कहते हैं कि हमे कहा गया कि हम पटना स्टेशन पर पहुचे। हम पटना स्टेशन पर पहुचे तो हमे कहा गया कि गाडी पटना नही रुकेगी—यह किस का फैसला था? मगर गाडी पटना रुकी—यह किसका निर्णय था? पटना से दानापुर जाने के लिये 10–15 मिनट लगने चाहिये, लेकिन पटना मे जो गाडी के आने का समय दिया गया है .

श्री शंकर दयाल सिंह : ऐसे ही बता दीजिए, समय क्यो बरबाद कर रहे है।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : बहुत कुछ बरबाद हुआ है, थोडा सा समय बरबाद हो जाय तो आप को क्यो दुख हो रहा है। दानापुर अस्पताल मे उन को 11–50 पर भरती किया गया—यह खबर है। 6 मील के रास्ते मे जो समय लगा, वह एक घटे से ज्यादा था—यह कैसे लगा?

श्री श्याम नन्दन मिश्र: पैदल चलने मे भी इससे कम समय लगेगा।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : बिहार के मुख्य मन्त्री उस समय कहां थे? बिहार के चीफ सैक्रेटरी समस्तीपुर नही गये, आई० जी० समस्तीपुर नही गये, यह बात कही जा चुकी है—अब रेलवे अधिकारियो का आचरण क्या है —इसको देखिए। यह सयोग है, आकस्मिक घटना है या इसके पीछ कोई योजना है? यह कहना कि डाक्टरों की हडताल थी, इसलिये दानापुर ले जाना जरूरी था—यह बात कोई अर्थ नही रखती। मेरी डा० सिन्हा से हवाई अड्डे पर बात हुई थी। जब हमे खबर दी गई कि हम आपरेशन करने पहुचे, तब तक देर हो चुकी थी मैं पूछता हूं क्यो इतनीदेर होने दी गई? अब आप यह कहे कि यह सारी साजिश है—बम दुर्घटना मे घायल करना साजिश है, तो खन बहते–बहते आदमी मर जाये—तो यह भी साजिश का हिस्सा है। डाक्टर समय पर न दें खे—यह भी साजिश है, साढे पांच घंटे तक गाडी को अटका कर रखा जाय–यह भी साजिश है–अगर वे सब साजिशे हैं तो फिर तो कोई बहुत बडी साजिश है। लेकिन, सभापति महोदय, मेरा निवेदन है कि ये सब साजिश नही है–मैं जानना चाहता हू कि यदि साजिश है तो यह साजिश किस ने की है, यदि सयोग था या षड्यन्त्र था, तो हत्यारे पकडे जाने चाहिये, कटघरे मे खडे किये जाने चाहिये। लोकतन्त्र और हत्या साथ नही चल सकते। जिस तरह से इस का प्रचार किया गया—वह भी साथ नही चल सकता। कुछ कांग्रेसी मित्र गाधी जी की हत्या के बाद के वातावरण को दोहराना चाहते थे, लेकिन इस बार जनमानस बदला हुआ था और वह जिस तरह से बदला था, उस मे भी मुझे ठेस लगी है, क्षमा करे–मैं जानता हू यह बात मेरे मित्रों को पसन्द नही आयेगी। मैं बिहार मे था, मृत्यु की खबर आ गई, मैं रक्सौल की पब्लिक मीटिंग मे बोल रहा था, मैंने कहा आज मैं भाषण नही करूगा मिश्राजी के देहान्त का समाचार आया है हम शोक प्रकट कर के सभा समाप्त कर दे लोगो ने कहा कि नहीं, हमें भाषण सुनना है। यह वातावरण यह पसन्द नही रहा।

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

सभापति महोदय, यह कहना कि बिहार मे क हिंसा का वातावरण था, तथ्यो के विपरीत है। मै बिहार मे दौरा कर रहा था, वहा कोई तनाव नही था। आन्दोलन की उग्रता भी बाह्य दृष्टि से कम हो गई।

श्री विभूति मिश्र : वाजपेयी जी, मोतिहारी स्टेशन पर मैंने सुना कि मिठाई बाटी गई।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : सभापति जी, मैं बिहार मे था और मुझे ताज्जुब है कि मुझे अभी तक हत्या के षडयत्र मे क्यो नही घसीटा गया कि अटल बिहारी वाजपेयी बिहार मे क्या कर रहा था ? जरूर उसका हाथ मिश्रा जी की हत्या मे होगा।

श्री विभूति मिश्र : यह जो कहते हैं कि वातावरण सही था तो उनके मरने के बाद मोतिहारी स्टेशन पर मिठाई बाटी गई यह किस वातावरण का परिचायक था ?

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : सभापति जी, बिहार का आन्दोलन मोटे तौर मे कुछ छुटपुट घटनाओ को छोड कर शान्तिपूर्ण आन्दोलन था। और हमारे काग्रेस के सदस्य हृदय पर हाथ रख कर कह दे कि क्या जयप्रकाश जी के व्यक्तित्व ने आन्दोलन का अहिसात्मक रखने मे निर्णायक योगदान नही किया ?

श्री विभूति मिश्र : नही।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : सभापति जी, मेरा कहना यह है कि 4 नवम्बर को पटना मे जो कुछ हुआ उसके बाद जब शान्तपूर्ण जलूस पर इदिरा ब्रिगेड के लोगो ने गोली चलायी तब कुछ घटना नही हुई। हजारो की भीड उत्तेजित थी, किसने शान्त किया ? उस दिन पता नही पटना मे क्या हो जाता। मगर उस दिन शान्तपूण जलूस निकल गया। यह घटना तो जनवरी की है।

मेरा निवेदन है कि आप बिहार के आन्दोलन को बदनाम करने के लिये यह बात मत लाइये। उस आन्दोलन से आपका मतभेद हो सकता है। आप केरल मे असेम्बली को भग करने की माग करे वह लोकतत्रवादी हो सकता है। बिहार मे विधान सभा को भग करने की माग फासिस्ट हो सकती है। यह लोकतत्र को नापने के दो अलग गज है। और यही दुर्भाग्य है कि हमारे और आपके अलग गज हो गये, मानदड बदल गये, मूल्यो मे अन्तर आ गया। जो बात केरल मे ठीक थी, बिहार मे ठीक नही है। गुजरात मे आपने विधान सभा भग कर दी तो बिहार मे वह अलोकतात्रिक कैसे हो गई ? मगर हो गई। आन्दोलन अलोकतात्रिक है इसलिये फासिस्ट है। फासिस्ट है तो दबा दो, कुचल दो, गोली चलाओ। अभी माननीय भगत जी कहते हैं कि मिल कर बैठना चाहिए। प्रधान मत्री कहती है Dialouge with whom Dialouge on what basis किस से बात होगी ? जब देश पर हमला होता है तो अटल बिहारी वाजपेयी आल इडिया मेडिकल इस्टीट्यूट मे पडा था प्रधान मत्री देश के सकट के समय हम को याद कर सकती हैं, अब नही। डायलाग विद हूम।

पाकिस्तान से बातचीत हो सकती है। शेख अब्दुल्ला के साथ समझौता हो सकता है। सौदा हो सकता है। देश मे दो वजीरेआजम होने वाले हैं। एक श्रीमती इन्दिरा गाधी और दूसरा शेख अब्दुल्ला। एक देश मे दो प्रधान मंत्री और दोनो कश्मीरी। बनने दीजिये। यह बातचीत हो सकती है, लेकिन हम से बात नही हो सकती है। प्रधान मंत्री ने यह भी कहा कि जनसघ के साथ कैसे कान्सेंशस हो

करती है। आप जनसघ को छोडिये। कांग्रेस सगठन के साथ ही कोशिश कर लीजिये। वह आपके पुराने मित्र हैं। उनसे नही पटती तो भारतीय लोक दल वालो से कामेशस कर लीजिये। हमारे लिमये जी पक्के समाजवादी हैं जरा इनसे पटरी बैठा लीजिये।

श्री ज्ञानेश्वर मिश्र. आपस मे ही बैठा लीजिये। पटना मे आपस मे ही लड रहे है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अब किसी के साथ डायलाग की गुजायश नही है। अब हमारे लिये कोई मिलन भाम नही है। यह देश मिलन भूमि है या नही? इस देश की स्वतत्रता, इसकी रक्षा, लोकतात्रिक आदर्श यह हमे मिल कर काम करने की प्रेरणा देते है या नही? क्या बिहार के आन्दोलन को आप ने जिस रग मे रगा है उसके बाद आप कैसे कह सकते है कि मिलने की गुजायश है? भ्रष्टाचार का सवाल कोई व्यक्ति के विरुद्ध का सवाल नही है। मैं मानता हू कि जिस तरह से रोज रोज चच चली उससे जनता मे यह भावना पैदा हुई कि भ्रष्टाचार को सरक्षण दिया जा रहा है। मगर क्या यह सच नही है? आखिर भ्रष्टाचार के आरोप लगने के बाद अगर जाच कराने की प्रक्रिया स्वीकार कर ली गयी, एक तरीका मैं केरल के मत्रिमडल को बधाई देना चाहता हू, सभापति जी, आपकी पार्टी उसम शामिल है आप भी थोडी सी बधाई ले लें, केरल के मत्रिमडल ने तय किया है अगर कोई एफिडेविट देकर 500 रु० जमा करेगा और एफिडविट ने आरोप लगाया तो कमीशन बनेगा। मथानम कमेटी ने कहा था 10 एम०पीज० एम० एल० एज० अगर मेमोरेन्डम दें तो जाच होनी चाहिए। अभी आजादी के बाद यह 1975 है, अभी तक भ्रष्टाचार के आरोपो की जाच का कोई सर्वसम्मत तरीका नही निकला है, कोई निश्चित तरीका नही निकला है। हर व्यक्ति के लिये अलग तरीका होगा? आखिर ललित बाबू के विरुद्ध आरोप लगाये गये, उनकी जाच हुई, आप ने अच्छा किया। और बगाल के दो मत्रियो को जाना पडा। मगर जो बगाल मे हो सकता है नई दिल्ली मे क्यो नही हो सकता?

मै एक बात कह कर समाप्त कर दगा। यह जाच कमीशन बनाने मे इतनी देर क्यो हुई? जाच कमीशन तुरन्त बन सकता था। पाच सप्ताह का समय कुछ कम नही होता है। फिर एक मुझे शिकायत है कि जो टर्म्स आफ रेफरेस है उसमे पहले टर्म्स आफ रेफरेस के अन्त मे लिखा हुआ है :

Subsequent explosion that has occurred the same day in the House of Shri Mahadeo Sahu

इसको भी जोड लिया है। तो और भी विस्फोट हुए है बिहार मे। या उसी दिन का विस्फोट महत्वपूर्ण है। सरकार इस निर्णय पर कैसे पहुची? क्या इसको टर्म्स आफ रेफरेस मे शामिल करना जरूरी था? कमीशन देख सकता था कि दूसरा जो बम विस्फोट हुआ है उसका क्या नाता है? मेरा आरोप है कि इस जाच को भी निश्चित दिशा देने की कोशिश की जा रही है कुछ रेलवे कर्मचारियो को बलि का बकरा बनाने की कोशिश की जा रही है। अगर वह दोषी है तो उन्हे कटघरे मे खडा किया जाना चाहिए। इस टर्म्स आफ रेफरेस मे यह जो वाक्य लिखा गया है इसमे कुछ सदेह पैदा होता है।

दूसरी बात यह है कि सी० बी० आई० अलग जाच करेगी, मेडिकल टीम अलग जाच करेगी और यह कमीशन अलग जाच करेगा। कमीशन के पास इन्वस्टीगशन मशीनरी कहा है? कमीशन किस तन्त्र का उपयोग करके तथ्यो का पता लगायेगा? कमीशन आफ इनक्वायरी एक्ट में इसका कोई प्राविधान नही है। अब सी०बी०आई० की स्वतत्र जाच क्यो चलनी चाहिए? सी० बी० आई० को

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

कमीशन के निर्देशो में जाच करने के लिये अब उपस्थित किया जाना चाहिए। सभापति महोदय, समानान्तर जाच चलेगी। सी०बी० आई० अलग जाच करेगी, कमीशन और डाक्टरो की टीम अलग जाच करेगी। क्या इन जाचो को एक जगह इकट्ठा नही किया जा सकता ? ससदीय जाच का प्रस्ताव मैने दिया हुआ है। लेकिन सरकार की समानान्तर जाचो की बात मेरी समझ में नही आती।

हम चाहते है कि इस हत्या का उद्घाटन हो। यह एक व्यक्ति का काम है या गुट का काम है, कोई साजिश है उसका पता लगना चाहिए। मगर सभापति महोदय, यह पहली हत्या नही है। हेमन्त कुमार बसु की हत्या पर अभी तक पर्दा पडा हुआ है। भारतीय जनसघ के अध्यक्ष, स्वर्गीय दीन दयालु उपाध्याय किन परिस्थितियो मे मुगलसराय की रेलवे लाइन पर मरे हुए पाये गये, वह परिस्थितिया हृदय विदारक है। सी०बी०आई० ने उनकी भी जाच की। क्या यह चोर का काम था ? चोर अदालत मे गये और छूट गये। हत्यारा कौन है, इसका पता नही चला। सभापति महोदय, आप ने कभी ऐसा सुना है कि चोर चोरी करने आये और जाते जाते पाच रुपये का नोट जो मरने वाला है, उसके हाथ मे पकडा जाये। ऐसे चोर भारत के किस भाग मे मिलते हैं, मैं उनसे कही मुलाकात करना चाहूगा, मगर यह बात गले के नीचे उतर गई, कोई काग्रेस का सदस्य नही बोला कि तथ्य का पता नही लगा।

और सभापति महोदय, हत्या केवल बम से ही होती है। श्री अनिल चोपडा जिन परिस्थितियो में नई दिल्ली की चाणिक्यपुरी में मारा गया, वह दुर्घटना नही थी। ट्रक कुचल कर भाग गया। एक पुलिस आफिसर वहां टपक पडा। पुलिस आफिसर ने ट्रक का पीछा नही किया और आज तक पता नही चला कि वह ट्रक था या उस मिलिट्री ट्रक के आवरण में कोई और था। सरकार कुछ नहीं बोली। तस्कर उसके पीछ पडे और दिल्ली में उसको मार दिया गया। अगर दुर्घटना थी, तो दुर्घटना करने वाले को पकडा जाना चाहिए। वह ओपन-वे ट्रेफिक है। सभापति जी, वह स्कूटर पर जा रहा था और स्कूटर के पीछे उसके घर वालो की कार थी। मा ने अपनी आखो से देखा कि कोई मार कर चला गया मगर मा को आज कोई पूछने वाला नही है। बहन ने देखा कि ट्रक इधर से आया और कुचल कर बाये को चला गया। अभी तक उसका पता नही चला है। क्या यह दुर्घटना है ?

श्री सूरज नारायण सिह की बिहार में हत्या हुई। मै उसका उल्लेख नही करता। यह लोगो के दिल मे सदेह पैदा करता है। इन सदेहो का निराकरण प्रतिपक्ष को बदनाम करने से नही होगा। भगत जी ने ठीक कहा कि हम अ[illegible] क्षेत्र [illegible]। [illegible]श्र जी की हत्या ने हमे झकजोड कर रख दिया है और यह विवेक के मार्ग पर जाने के लिए प्रेरित कर सकती थी मगर क्षुद्र राजनीति ने इस मौके को भी खो दिया। क्षुद्र राजनीति ने बगला देश की विजय को भी दूषित कर दिया। अब प्रधान मत्री जी कहती है कि हम किसी से बात नही करेगे और बात करने के लिए कोई आधार नही है। अगर ऐसा है तो लोकतत्र नही चलेगा और लोकतत्र नही चलेगा तो हिंसा, हत्या, अराजकता से देश बच नही सकता है। हम फिर समझदारी के रास्ते पर वापस आये और भ्रष्टाचार की जाच के लिए निश्चित कदम उठाएं और राजनीति नही बल्कि राष्ट्रनीति की आराधना करे। आज इस बात की आवश्यकता है और अगर यह स्थगन प्रस्ताव हमारे काग्रेसी मित्रों को इस दिशा में सोचने के लिए प्रेरित कर सकता है, तो मै अपने मित्र श्री मधु लिमये को बधाई दूगा अन्यथा बहुमत के बल पर

आप इसे अस्वीकार कर सकते हैं मगर जनता के दिल में उठने वाले हजारो सवालो का जवाब नहीं दे सकते।

श्री शंकर दयाल सिंह (बतरा) : सभापति जी, जहा से वाजपेयी जी ने अपना भाषण समाप्त किया है, वही से मैं शुरू करता हू। समस्तीपुर बम काड और उस में भतपूर्व रेल मत्री श्री ललित नारायण मिश्र की हत्या वीभत्सता का प्रतीक है, नीचता का द्योतक है, फासिज्म का करिश्मा है और आसुरी प्रवृत्ति का केन्द्र बिन्दु है। जो यह चाहता है कि जनतन्त्र का मुकट ओढ कर और जरा बडी बडी बातें कह कर इस की सफाई दे, इतिहास कभी भी उस को क्षमा नही करेगा और जिस तरह से गाधी जी का खून अभी तक उनके माथे पर चमक रहा है वैसे ही ललित बाबू का खून भी बराबर उनके माथे पर चमकता रहेगा।

सभापति जी, वाजपेयी जी ने बहुत सारी बातें कही है जिन मैं से एक दो बाते तो उन्होने ऐसी कही जिन का जिक्र मैं खुद करना चाहता था लेकिन धन्यवाद है उनको कि उन्होने स्वय स्वीकार किया है। एक बात तो उन्होंने यह कही कि जिस समय समस्तीपुर मे यह दुर्घटना हुई, उस समय मैं हाजीपुर मे था। मतलब यह है कि समस्तीपुर हाजी पूर से नजदीक है और वहा पर वाजपेयी जी स्वय उपस्थित थे। वे वहा क्यों थे, मैं इस पर कुछ नही कहना चाहता लेकिन उन्होंने स्वय स्वीकार किया है कि वे वहा पर थे।

दूसरी बात उन्होने यह कही कि डा० भल्ला जिनके बारे मे तरह तरह की बातें कही जाती थी, उनसे उन की बडी मित्रता है और उनसे उनकी बाते हुई थी। ये सारी बाते उन्होने स्वय कही हैं, मैं नही कह रहा हू और तीसरी बात वाजपेयी जी ने यह कही कि इस के पीछे बहुत बड़ी साजिश है। यह जो कमीशन बैठा हुआ है, जाच से सारी बाते हमारे सामने आ जाएंगी लेकिन जब वाजपेयी जी हमारे सामने यह कहते हैं कि बिहार मे किसी तरह का हिंसा का वातावरण उन दिनों नही था, तो यह बिल्कुल हास्यपद सी बात लगती है खास कर जबकि वाजपेयी जी चिंतक हैं, और अच्छे वक्ता हैं और सोचने समझने वाले व्यक्ति हैं। जब बम विस्फोट समस्तीपुर मे हुआ, तो यह हिंसा का वातावरण नही था तो क्या था। इतनी बड़ी दुर्घटना हो जाए और आप कहें कि हिंसा का वातावरण नही था, इतना बडा कलक इतिहास के माथे पर लग जाए और आप कहे कि हिंसा का वातावरण नहीं था मैं कहता हूँ कि हिंसा का वातावरण था और उस वातावरण मे आप का बहुत बड हाथ है। केवल आपका ही नही बल्कि उन सारे दलों का हाथ है जो आज जय प्रकाश जी के साथ चल कर उस आग मे हाथ सेक रहे हैं और घी डाल कर ज्वाला को प्रज्वलित कर रहे हैं। अगर यह वातावरण नही होता, तो यह दुर्घटना नही होती।

सभापति जी, वाजपेयी जी ने तथा दूसरे विरोधी दलो के मित्रो ने एक बात और कही। श्री राम विलास झा की चर्चा बार बार की। मैं कह देना चाहता हू कि श्री राम विलास झा काग्रेस के एम० एल० सी० नही हैं। मैं कह रहा हू कि वे काग्रेस के एम० एल० सी० नही हैं और वे काग्रेस प्रत्याशी के खिलफ जन सघ की मदद से विजयी हुये थे। आप इस बात का पता लगा लीजिये। मैं कोई गलत ब्यानो नही कर रहा हू। इसलिए जो बाते श्री वाजपेयी जी ने कही हैं, उन मे एक बहुत बडा तथ्य झलकता है। सभापति जी इस के बारे मे बहुत सारे तथ्य आए है हमारे सामने। मैं नहीं चाहता कि इतनी बडी दुर्घटना जो हमारे सामने हुई है जिस से सारा, देश, सारा जनतन्त्र और सब कुछ हिल गया है, उसको राजनीति का मामला बनाया जाये आगे बढ कर। राजनीति का मामला कभी न बनाया जाए और वाजपेयी जी बराबर इस चीज को कहते है पर पता नही कि वे इस को हृदय से कहते हैं या जिव्हा से कहते हैं लेकिन मुझे बड़ी खुशी होगी अगर हृदय से वे इस बात को महसूस करें कि इसे राजनीति

का मामला न बनाया जाए किन्तु मैं जानना चाहता हूं कि इनके बार बार दुहाई देने के बावजूद भी क्या इसे राजनीति का मामला नहीं बनाया गया ? हमारे मित्र श्री आर० एस० पांण्डेय ने जब मदरलेड का हवाला दिया, तो वे आग-बबला हो गये, पाजामे से बाहर हो गये, आपे से बाहर हो गये—महावरे बोल रहा हूं—लेकिन 4 और 5 तारीख के मदरलैंड में जो कुछ भी निकला, 4 को निकला "हू किल्ड मिश्रा" 5 तारीख को निकला, "येस, हू किल्ड मिश्रा"? इससे क्या सिद्ध होता है।

एक माननीय सदस्य इस में क्या लिखा है ?

श्री शंकरदयाल सिंह : मैं पढने में समय बर्बाद नहीं करना चाहता हूं। सभी लोग इसको पढ चुके हैं लेकिन इन सब बातों से पता लग जाता है कि इस अखबार का उद्देश्य क्या है। राजनिति का मामला आप सब लोगों ने इस को बनाया है।

श्री राम सहाय पांडे : मैं ने जो कहा था उस पर बाजपेयी जी बिगड गये थे। जब उन्होंने श्री बूटा सिंह के पत्र को पढा, तब मैं ने नम्र निवेदन किया था कि क्या आप ने मदरलैंड के आरोप को भी पढा है जो एडिटोरियल में थे और समाचार पत्र की सुर्खी में था। जब मैं ने यह कहा था आप बिगड गये। लोक तन्त्र की परिभाषा और परिवेश को राजनीतिक रूप न दिया जाये, इस में कोई दो राय नहीं हो सकती हैं।

आप ने एक और अच्छी बात कही कि "मदरलैंड" जनसंघ का पत्र नहीं है और जो कुछ उस में लिखा है, उस सारे से मैं सहमत नहीं हूं। आप ने उसकी बुराई की, भर्त्सना की, इस से मैं सहमत हूं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : ये शब्द मेरे मुंह में रख रहे हैं (व्यवधान)।

पांडे जी अगर "मदरलैंड" पढने का वायदा कर लें, तो मैं मामले को को छोड़ देता हूं। (व्यवधान)...

श्री शंकर दयाल सिंह सभापति महोदय श्री मधु लिमये जी ने, श्री ज्योतिर्मय बसु जी ने और माननीय अटल बिहारी जी ने समाचारपत्र के बहुत सारे हवाले दिये, लेकिन मैं इन में बहुत अधिक न जा कर, एक विचारशील पत्र का केवल एक ही वाक्य आप के सामने रखना चाहता हूं। दिनमान एक समझदार पत्र है और उस की प्रतिष्ठा भी है। उसने इसके सम्बन्ध में अपने एक सम्पादकीय में लिखा है :

> जिस ने भी सार्वजनिक सभा में मंच पर अनेक निरीह लोगों पर बम फेंक कर व्यक्ति को संसार से ही हटा देने का रास्ता अपनाया है उसने बुद्धि और भाषा से ललित बाबू का सामना न कर पाने की अपनी चरम अहाता को ही हिंसा का रूप दिया है। वह व्यक्ति साधारण हो या असाधारण निराशा में जर्जर हो या क्रोध में, अपना ही प्रतिनिधि हो या किसी दल का, विचार और उसकी लोकतंत्रीय सार्थकता की मृत्यु उसके मन में मंच पर बम फेंकने के पहले हो चुकी थी।

दूसरा पत्र है साप्ताहिक हिन्दुस्तान जिस ने अपने सम्पादकीय में लिखा है: राजनीतिक

हत्या के तीन प्रकार देखे गए हैं। इनके अनुसार पहली सम्भावना—किसी सिर फिरे ने महज नाम कमाने के लिए इन्हें मार दिया। दूसरी सम्भावना —किसी राजनीतिक व्यक्ति या गिरोह में सामान्य राजनीतिक के प्रति इतनी भयंकर अनास्था पैदा हो चुकी थी कि उसने अपनी बात कहने का यह आतंकवादी तरीका अपनाया। तीसरी सम्भावना—सामान्य राजनीति के ही किसी व्यक्ति गिरोह या दल ने ही सुनियोजित षडयन्त्र द्वारा यह हत्या इस ढग से करवाई कि उसका उद्देश्य भी सिद्ध हो जाए और उस पर कोई आंच भी न आए। जो बाते हमारे सामने कही गई हैं और ललित बाबू की हत्या के बाद से जो एक वातावरण हमारे सामने आया है वह कम दूषित नही है। मैं अपने मित्रो का दिल दुखाना नही चाहता हू क्योकि वे इसे सहन नही कर पायेगे। लेकिन एक बात मैं उनसे पूछना चाहता हू कि इसी सदन मे पिछली बार जब हम शरद कालीन सत्र समाप्त करके जा रहे थे तो उस समय इसी सदन मे क न सी ऐसी बात थी जो कही न गई हो, डिक्शनरी का कौन सा ऐसा शब्द है जिस का प्रयोग न किया गया हो, कौन से ऐसे वाक्य थे, तीर थे जिन को भिगो भिगो कर अटल जी, ने, लिमये जो ने तथा दूसरे लोगो ने न चलाया हो। उससे जो वातावरण दूषित हुआ उसका ही यह फल है, यही मैं कहना चाहता हू। हमारे विरोधी दल के भाई अभी भी जैसा श्री बलि राम जी भगत ने कहाहै समझ जाए, उनको इस बात की अनुभूति हो जाए, सच्चाई उनके सामने आ जाए तो जनतन्त्र के लिए यह एक सुनहला पक्ष होगा। मुझे दुख है कि आज भी उनको यह अनुभूति नही हो रही है।

ललित बाबू दो जनवरी को समस्तीपुर गए थे एक बडे काम को करने के लिए, रेलवे लाइन के उदघाटन के सिलसिले मे वे वहा गए थे। स्वयं मदरलैंड में यह निकला है कि उनसे किसी ने कहा कि साहब आप वहां मत जाए, खतरे की सम्भावना हो सकती है जिसके जवाब में ललित बाबू ने कहा कि जनता का काम करते करते अगर मैं शहीद हो जाऊ तो इनके लिए भी मैं तैयार हूं। यही हुआ। एक बहुत अच्छे काम के लिए जा कर वे शहीद हुए। यह इस बात को स्पष्ट करता हैं कि भला होना भी कभी कभी आदमी के लिए बहुत बुरा हो जाता है। राष्ट्रपिता बापू जी की मृत्यु पर बर्नार्ड शाह ने कहा था कि बापू की शहादत इस बात का सबूत है कि बडा होना भी कितना बुरा हैं, भला होना भी कितना बुरा है। ललित बाबू की मृत्यु भी इसी बात की द्योतक ह कि भला होना और काम इतना अच्छा करना भी व भी क भी कितना खतरनाक होता है।

तरह तरह की बाते हमारे सामने कही जा रही हैं। सभापति जी, आप खुद भी एक बहुत बडे शायर हैं और शायरो के प्रशसक हैं। इनकी तो वही हालत है

हम आह भी भरते हैं तो हो जाते हैं बदनाम
ये कत्ल भी करते हैं तो चर्चा नही होती।

ये जो चाहे कह दे सब ठीक है लेकिन हमारी जो सच्ची बात है उसको भी ये बर्दाश्त नही कर सकते है। आज मुझे इस बात पर खुशी है कि शुरूसे ले कर अन्त तक जितने लोग बोले है केवल भाषण के लिए बोले हैं, कोई तथ्य की बात उन्होने नही कही है। एक भी बात उभर कर सामने नही आई है। मैं यह इसलिए कह रहा हू कि ये लोग अपने को साफ और सुथरा साबित करना चाहते हैं। मैं यह कहना चाहता हू कि इनका बहुत बडा हाथ इस काड मे है। मै किसी का नाम नही ले रहा हू। इसलिए हाथ है कि इन्होने वातावरण को दूषित करने में, हमारे जनतन्त्र को कलकित करने मे, हमारी ससदीय पद्धति को कमजोर बनाने, मे, हमारे नेता पर आक्षेप लगाने में तथा स्वर्गीय श्री ललित नारायण मिश्र का चरित्र हनन करने में कोई भी कसर उठा नही रखी। पिछली बार जब यहा तरह तरह की बाते कही जा रही थी तब अध्यक्ष महोदय ने बार बार स्वयं इनको कहा था कि आप इस तरह की बातें कहना छोड दे लेकिन ये छोडने के लिए तैयार नहीं हुए। बेशर्मी की उससे भी बडी हद कल हमारे सामने आई जब इन्होने भारतीय परम्परा का भी त्याग कर दिया। यहां शोक

[श्री शंकर दयाल सिंह]

प्रस्ताव पारित किया जा रहा था। उस समय कुछ विरोधी दलो के सदस्यो ने जिस तरह का अशोभनीय आचरण किया, अशोभनीय आचरण का परिचय दिया उससे इनको शर्म से डूब कर मर जाना चाहिए। उस घटना को जब कभी भी ससदीय इतिहास में लिखा जायगा तो कोई भी व्यक्ति उसको पढकर इनको क्षमा नही करेगा, जिन लोगो ने इस तरह का अशोभनीय कार्य किया उनके नाम पर आने वाली सतति थूक देगी।

अन्त में मैं अपनी ओर से कुछ सुझाव गृह मंत्री जी के सामने रखना चाहता हू। सबसे पहले मैं यह चाहता हू कि इस वीभत्स और जघन्य घटना के पीछे जिस किसी व्यक्ति या दल का हाथ हो उसे खोज निकाला जाए।

दूसरे विरोधी दलो के लोग बार बार यह कहते है कि तथ्यो को छिपाया जा रहा है। मैं उनसे भी अपील करना चाहता हू कि अगर उनके पास तथ्यो की जानकारी है और इसमें उनका कुछ हाथ है तो वे भी सामने आए और तथ्यो को सामने रखे।

तीसरे मैथ्यू आयोग के जाच कार्य को जल्दी से जल्दी पूरा किया जाय, सब तरह की मदद उसे पहुचाई जाय।

चौथे, गाधी जी की हत्या में जिस तरह एक दल विशेष का हाथ था उस तरह से यदि इस हत्या में भी है, किसी दल विशेष का हाथ है उस पर बैन लगना चाहिए।

पाचवे देश मे कुछ दिनो मे इस तरह की घिनौनी राजनीतिक प्रवृत्ति चल रही है तथा हमारे सामाजिक वातावरण का दूषित किया जा रहा है और इस प्रवृत्ति को सरकार कडाई के साथ रोके।

छठे, जैसा वाजपेयी जी ने कहा है मैं उन की इस बात की तसदीक करता हू। समस्तीपुर से लेकर दानापुर की दूरी मुश्किल से तीन सवा तीन घंटे की है जबकि गाडी आठ साढे आठ घटे में वहा पहुची। इसकी सबसे ज्यादा कड़ाई से जाच होनी चाहिए कि क्यों इस तरह से हुआ। यह भी इलजाम लगाया जाता है और हर व्यक्ति की जबान पर यह बात है उनकी जो ललित बाबू के साथ मच पर या किनारे खडे थे, जो सभा में सम्मिलित थे कि अगर मेडीकल ऐड उनको समय पर मिल जाती तो उनकी जान बच सकती थी। इन लोगो में डी०आई० जी० हैं, कपिल देव सिंह एम० एल० ए० है, रामभगत पासवान है, यमुना प्रसाद जी मडल है जो एम० पी० है। इन लोगो के सामने कम खतरा उत्पन्न नही हुआ और कम चोटे इन्हे नही लगी थी। लेकिन इन सभी की जाने इस लए बच गई कि समय पर मेडीकल ऐड इनको मिल गई। इस वास्ते यह जाच सख्ती के साथ होनी चाहिए कि गाड़ी पहुचने मे इतनी देर क्यो हुई, मैडीकल ऐड उनको समय पर क्यो नही दी गई, किसी ने अवरोध पहुचाय रास्ते मे तो उसको भी सामने लाया जाय, उसको भी प्रकट किया जाए।

आखिरी बात अब मैं कहना चाहता हूं। श्री भोपेन्द्र झा ने बताया है कि उनके परिवार के लोगो को यह नोटिस दिया गया है कि मकान खाली कर दो। यह सवाल राजनीति का सवाल नही है, मानवता का है। राजनीति की दुनिया मे विरोधी दल चाहे इससे भी नीचे गिर गया हो लेकिन मानवता का इतिहास मे समझता हू कि इससे कलकित और जर्जरित होगा। इसलिए उनके परिवार को, उनकी विधवा पत्नी को वे सारी सहूलियत और सहायता मिलनी चाहिए जो मिल सकती है क्योकि ललित बाबू ड्यूटी पर थे, ड्यूटी पर शहीद हुये, काम करते करते शहीद हुए। इन सब बातो को सरकार को मद्देनजर रखना चाहिए।

अन्त में मैं अपने विरोधी दलो के मित्रों से अपील करना चाहता हू कि वे स्वस्थ वातावरण बनाने में योगदान करे, क्योकि जिस तरह की प्रवृत्तिया देश में उभर रही है, हिंसा का वातावरण पैदा हो रहा है, तोड़फोड़ की मनो-

वृत्ति बढ़ती जा रही है, एक दूसरे के प्रति वैमनस्य बढ़ रहा है, संसदीय लोकतन्त्र का पाया कमजोर हो रहा है, उससे देश का भविष्य ही अन्धकार-मय कर रहे हैं इसलिए मेरी उनसे अपील है कि वे राजनीति के छोटे चक्कर में न फंस कर अपने को ऊंचा उठाएं तभी देश का कल्याण होगा ।

इन शब्दों के साथ मैं कहना चाहता हूं कि जो काम रोको प्रस्ताव उन्होंने रखा है इसका कोई औचित्य नहीं है ।

यह तो उन का एक तरीका है कि हर बात में अड़ंगा लगाओ । वे चाहते हैं कि जांच भी ठीक ढंग से न हो । इस लिए वे कह रहे है : रोको । वे यह नहीं कह रहे कि बढ़ाओ । हम चाहते है कि काम रोको नहीं, काम को आगे बढ़ाओ ।

इस लिए मैं श्री मधु लिमये से प्रार्थना करूंगा कि अभी वक्त है, वह समझदारी से काम ले और अपने काम-रोको प्रस्ताव को खुद वापिस ले लें ।

SHRI SEZHIYAN (Kumbakonam): Mr. Chairman, I rise to support the adjournment motion moved by Shri Madhu Limaye. All the speakers, either on this side or that side, have condemned the gruesome and dastardly act committed on the 2nd January. It has been committed with a savagery which does not bring any credit to democratic set up. In a democracy, decisions are taken by discussion and not by applying violence or through bomb-shell.

The speaker who preceded me, Shri Shankar Dayal Singh, appealed to the opposition to cooperate with them in this matter by saying that this should not be viewed from the narrow political viewpoint. The same appeal I would make to him and to all others, that this should be taken above narrow party lines. Because, there is internal politics in that side also. Now, instead of tracking down the real culprits, they are dragging in scapegoats; instead of unravelling the mystery, they are trying to throw an air of suspicion, an air of hatred against the opposition.

While discussing the adjournment motion they drag in the Bihar movement, they drag in the name of Shri Jayaprakash Narayan and they drag in the speeches made in this House itself. The last speaker made a referencee to the speeches made by us in the House in the winter session. I cannot understand how we can be taken to task for our speeches and then they can connect our speeches with the Samastipur incident. That means the opposition members cannot make any speeches here, they cannot make any demands here. The only thing we wanted in the last session was a parliamentary probe into the whole affair of the granting of licences in the Pondicherry case. While that demand was not conceded, now that is taken as a scapegoat for the murder that was committed at Samastipur.

I do not want to go into the entire ambit of the case. The adjournment motion is confined to two things—the total failure of the Government in giving security to Shri L. N. Mishra and the inordinate delay in the setting up of the enquiry commission. Even the last speaker, while admonishing all others ended up by saying that there has been inordinate delay in providing medical attention to Shri L. N. Mishra and the train which should have taken only three hours actually took eight hours. Even he has come round in this circle and joined the opposition in making this charge.

The first charge about security lapse is a very serious one. To put it more plainly, there has been indifference on the part of the State and Central Governments in providing security during the visit of Shri L. N. Mishra for the opening of the Samastipur line.

[Shri Sezhiyan]

The *Times of India* has brought it out very clearly. Its Special Corre ponce t has stated on January 12 —

"It has also been found that the state government both at the politi cal and official levels, was conspicuo-usly indifferent towards Mr Mishra and the funct on Apart from being an important Union Cabinet Mini ter Mr Mishra had a unique poli tical stature in Bihar which entitled him to special care of the state gov ernment CBI detectives have argu ed

This is what the CBI officers had found, namely that the State Govern ment had shown ind fference to the visit of Shri Mishra They also said —

'CBI officials argue that absence on such a large-scale cannot be ex-plained away as a mere coincidence'

The Chief Minister the IG and the Chief Secretary as also all the Minis ters, except his own brother, had not come to that function The serious in difference cannot be explained away even by the CBI officials who went into that

It says further —

"It deepens the mystery still fur ther why none of the dignitaries of the state government or political leaders has visited this place after the death of Mr Mishra '

Even after the death of Shri Mishra none of them rushed to the place where a bomb explosion injured many

The report of the *Times of India* cor-respondent, after meeting the CBI officials who went to work in Samasti-pur, writing from Samastipur itself says —

"Although it is beyond the scope of the CBI investigations to establish negligence on the part of the state government or the local railway au thorities or to point out flagrant vio-lation of security norms by the po-lice, yet its detevtives can hardly ignore these events'

Therefore, the indifference shown by the State Government at the political and the official level is a thing which should be noted When a full inquiry takes place it is a thing that should be noted by the Government here and the Inquiry Commission there

While we have been very much agi-tated about the indifference shown by the State Government in the matter of security it has been stated in the *Hindusta nTimesH*—

Similarly they ,

that is the CBI

fee the inordinate delay in giv-ing medical aid to the Railway Mini-ster after the blast was due to the criminal negligence on the part of of a top divisional N E official nurs ing certain grievances against the late Mr L N Mishra The same offi cial was also responsible for unduly delaying the departure of the special train carrying Mr Mishra to Patna for the treatment of blast injuries'

Therefore while the political lea ders on the other side try to pin the blame on the Opposition the CBI offi cials who went into the question give a different version as per the reports given by the newspapers

Whatever may be the accusation that can be made against any other news-paper, they cannot do i atgainst Blitz, What is the conclusion of Blitzp Blitz, writing on 18th January, hss stated.—

'Whoever by the men and their af-filiations responsible for what was described as a "dress rehearsal" by the Prime Minister, Lalit Babu would not have died but for the ineptitude of the Darbhanga district authori ties, the inefficiency of the Railway doctor on the spot, and, above all the cynical indifference of the Gha-foor outfit in Patna.

DIG Prasad, who was more seriously wounded in the explosion is happily progressing in a local hospita If the authorities on the spot and elsewhere had not decided on the nocurnal journey to Danapur, and deem, Lalit Babu might have survived"

That means it is more the indifference and the utter ineptitude shown by the local authorities and the State Government officials that has caused the death of the late Lalit Narayan Mishra

We are intrigued by the various reports that came in the newspapers and over the radio It had been said that doctors examined Shri Mishra and found the wounds only skin deep at first How then it developed into a catastrophic wound is to be explained What was given out by the radio at least was not such a gruesome picture

It gave a very colourful picture of the function that took place I quote

> All India Radio in its national news bulletins at 2 p m and 2 10 p m in English and Hindi on January 2 gave a graphic account of the function It also gave a portion of Mr Mishra's inaugural speech AIR news readers surprised many here when they announced that the first broad gauge line train had left Samastipur for Muzaffarpur after Mr Mishra had performed 'puja of the engine named 'Bhawani and given the green signal'

The AIR news bulletins at 2 p m and 2 10 p m in English and Hindi reported that the function went well It also gave a portion of Mr Mishra's speech It reported that Mr Mishra performed "puja", did the "arti" and gave a green signal and the train left Samastipur for Muzaffarpur All these narrations were given in the AIR news bulletins at 2 O'Clock whereas Mr Mishra reached Samastipur only at 5 10 p m This is the unreal situation in which the All India Radio exists Whatever does not happen is reported on the Radio They reported what had not happened This is the unreality not happened This is the unreality in which the AIR is functioning

The CBI has not so far been able to unravel the mystery In some of the newspapers I find they have propounded six theories There are six systems of Hindu philosophy I do not know how six systems have encroached into the CBI philosophy also But the truth of the matter is that they have not unravelled the mystery

Sometimes, When I hear persons making speeches from the other side, it looks as if they know who are the culprits and who are the persons who have been instigating all these things and, at other times, it looks as if they do not know anything This is the dual position that they have assumed At one point the CBI and others do not know how the crime has been committed and at the other point they want to put the blame on somebody They try to find some scapegoat or other

In this situation, our chief worry is this There has been inordinate delay in setting up the Inquiry Commission. As rightly pointed out by Shri Vajpayee when Mr L K Advani demanded the setting up of an Inquiry Commission, he was accused of rushing in for such an Inquiry just to hide the complicity of his own party in the crime Now, at least, the Government has come forward to set up the Inquiry Commission I welcome the decision to set up the Inquiry Commission But it has been done in a very peculiar way

I quote from the *Times of India* dated February 6 After reporting high level probe into Mishra's murder, it says —

> 'In purely political terms the appointment of the commission is a shrewd move It will blunt the Op-

[Shri Sezhiyan]

position charge that the Government has something to hide a charge which the Opposition intended to press vigorously during the budget session of Parliament, beginning on February 17."

Whatever may be the strategy of the Opposition, at least, in the coming session, the expected move that will be made by the Opposition has moved the Government to set up the Inquiry Commission. The *Times of India* says:

> "In purely political terms, the appointment of the Commission is a shrewd move"

Instead of showing all their shrewdness against opposition, why don't they show shrewdness in finding the real culprits behind this crime? They are not able to do that But the Opposition is being taken to task

There is another news report in the *Hindustan Times* dated February 6, which says

> "The decision to set up the Commission was taken at a hurriedly summoned meeting of the Union Cabinet at which the Prime Minister presided"

The incident took place on January 2 and they are appointing the Commission on 6th February, after 35 days! For that, the paper says, 'at a hurriedly sommoned Cabinet meeting, they took the decision'. If they had really shown the hurry in trying to set up the Commission much earlier, at least something could have been done Why we say this is because we are very much afraid that much of the evidences would have lost Those who belong to that area itself, some of the Bihar Congress members who sent on February 5 a memorandum to the Prime Minister asking for an early settlement of that because they were afraid that some of the evidences would be lost if more time was allowed. Therefore, it is not a suspicion on our part; it was a suspicion on the part of the Congress members themselves that, if more time was allowed, many of the important evidences would be lost. The conclusion is that, by the time already allowed, much of the evidence would have been lost. Therefore, we press this Adjournment Motion on these two specific issues, namely, there has been an indifference on the part of the Government in giving security when Mr. Mishra visited Samastipur and there has been an inordinate delay in setting up the Commission Somebody here has demanded that there should be a Parliamentary probe We demanded the same thing earlier also, we wanted a Parliamentary probe into the affairs of the licence deal. Here a murder has been committed, and the Congress members themselves, those who spoke from the other side, have pointed out that there had been very many delays which could not be explained Though we cannot act as the detectives, we can judge for ourselves how the Government has been very indifferent, how the security system in our country works, whether we are able to give protection not only to the Ministers but also to the Members of Parliament and to the Parliament itself. If this is the way in which the Government is behaving, it will be the last day for the Parliamentary democracy in this country Therefore, more than anybody else, those who spoke from the other side should have been the first to demand a Parliamentary probe. After all, when a Parliamentary probe is instituted, it is not as if only the representatives of the Opposition parties would be there; the majority of the representatives would be from that side. Therefore, the hon. Minister of Home Affairs should gladly accept a Parliamentary probe into the entire affairs, how indifferent was the security arrangement, how inadequate were the arrangements made both by the Central Government and by the State Government, how delayed has been the setting up of a Commission under the Commission of Inquiry Act. Unless these things are brought out, we cannot avoid such happenings in

the future. When I say this, some members may rise and say, 'Oh! You are planning for another dastardly murder'. Even for talking like this, I may be taken to task. But what I want to point out is that the entire system is indifferent, inept, detrimental to the functioning of Parliamentary democracy in this country. They seem to be more interested in finding scape-goats, in putting the blame on the Opposition for their own failures, for their own indifference; they do not have any answer to give to us.

I would say that heinous was the crime of the murder of Shri L. N. Mishra, but more heinous has been the crime of delay—the indifference shown to his security and also the inordinate delay in giving him medical attention. Those who perpetrated the heinous murder should be punished and also those who are found responsible for the inadequate security and for the inorinate delay in giving treatment to Mr L. N. Mishra should be singled out and should be given a very deterrent punishment. They cannot escape justice and the Commission of Inquiry.

Therefore, I once again appeal to the House and appeal to the Members of the other side also and just as they asked us to come out of the narrow politics, I would appeal to them to come out of narrow political confines and accept the motion moved by Shri Madhu Limaye.

THE MINISTER OF WORKS AND HOUSING AND PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI K. RAGHU RAMAIAH): I was not here at that time. A statement is said to have been made in the House that a notice to quit was given to the family of the late Shri L. N. Mishra.

I would like to say that I got it confirmed from the Ministry that no notice has been given. I got it rechecked and I am in a position to state categorically that no such notice has been given by the Ministry of Works & Housing. To make it doubly sure, I also just now talked to Shri Vijay Kumar Mishra son of late Shri Mishra and he has also confirmed that no such notice was received. I would like to add that we have the higest regard and respect for the late Shri L. N. Mishra and his family and we do want to make them comfortable.

सभापति महोदय : अब श्री हरि किशोर सिंह जी केबो लने का नम्बर है, लेकिन पराशर जी ने मुझे चिट्ठी लिखी है कि उन की कुछ जाति मजबूरी है, वह पहले बोलना चाहते हैं, लिहाजा मैं उन को बोलने की परमीशन दे रहा हूं। श्री पराशर ।

प्रो० नारायण चन्द्र पराशर (हमीर पुर) : सभापति महोदय, मेरे लिये श्री मिश्र जी की शहादत के बाद यहां बोलना ऐसा ही लगता है जैसे एक अजीम-हस्ती के बारे में किसी तुच्छ व्यक्ति को कुछ कहना पड़े । मैं चाहता हूं, दिल चाहता है, दिमाग चाहता है कि इस मौजू को बहस के दायरे से बाहर रखा जाता और हम उस महान व्यक्ति के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते और वह इज्जत, वह सराहना उन्हें दे पाते जिस के लिये वह कदम बढाते थे, जिस के लिये वह मजबूती से चलते थे । ललित बाबू ने गाडी के पहिये को तेज करने के लिये अपना खून दिया । जिन्दगी भर तो पसीना दिया और जब जरूरत पड़ी तो खून भी दिया । इसलिये नही दिया कि वे समस्तीपुर में अपने किसी निजी काम के लिये गये थे, इस लिये नही दिया कि वहां कोई राजनीतिक फ़ंक्शन था, बल्कि इस लिये कि विकास के मार्ग में एक चरण और आगे बढ़ाना था, समस्तीपुर को दिल्ली से मिलाना था । उन का सपना था कि श्रीनगर से केरल तक और पोरबन्दर से नागालैंड तक जब आप गाड़ी से देश को एक नही कर सकते तो देश की एकता को ज्यादा मजबूत नहीं रखा जा सकता । जब तक देश में गाड़ी के जरिये एक आदमी पश्चिम से पूर्व तक और उत्तर से दक्षिण तक नहीं पहुंच सकता तो देश को ज्यादा देर तक इकट्ठा नहीं रखा जा सकता । इस

[प्रो० नारायण चन्द्र पराशर]

स्वप्न को साकार करने के लिये वह महान व्यक्ति शहीद हुआ।

उन को किन-किन कठिनाइयो से गुजरना पड़ा है—यह तो हम लोग जो उन के सहयोगी थे या जो रेल मत्रालय की समितियो से सम्बन्धित है, वे जानते है। जितनी रुकावटे उन के रास्ते मे थी, लेकिन वह हर रुकावट से जूझने के आदि थे, जो बात कहते थे, उस को पूरा कर के दिखलाते थे। एक ऐसे कृतसकल्प व्यक्ति के लिये जितनी भी प्रशसा की जाय वह कम है।

जब समस्तीपुर जाने से पहले दरभगा के हवाई अड्डे पर उन को कहा गया कि आप को आज बम से मार दिया जायगा, तो उन्होंने कहा कि लोगो की सेवा मे मरने से और अच्छा क्या है? यह अखबार की रिपोर्ट है, मै वहा मौजूद नही था, लेकिन जब यह कहा गया कि आप की जिन्दगी को खतरा है वहा विस्फोट होने वाला है—तब उन्होंने यह आवाहन किया। कितने ऐसे व्यक्ति है जो विकास के अग्रदूत बन कर अपनी जान खतरे मे डालेगे? मिश्रजी यही आगे नही बढे, और कई जगहो पर इसी तरह से आगे बढने का उन्होंने प्रण किया और उस को निभाया। एक बहुत ही रहस्यपूर्ण वातावरण मे घृणा के वातावरण मे वह व्यक्ति हम से जुदा हुआ, इस का हमे खेद है।

बहुत सी बाते यहा पर कही गई है लेकिन जिन्होंने यहा कहा है और जिन्होने नही कहा है—क्या आप सब का यह फर्ज नही बन जाता कि आज अपने दिल को सर्च करे, टटोले। एन्टनी ने ब्रूटस के बारे मे जो कहा था—क्या उस सत्य को यहा नही दोहराया गया? उन्हो ने कहा था—इल्जाम लगाये जाते थे, लेकिन क्या बात सच थी? बात दरअसल यह थी कि जिस काम को लेकर वह आगे बढना चाहते थे, उसमे रुकावट डालने वालो की परवाह नही करते थे। ऐसे सर्कमसटान्सेज मे, ऐसे वातावरण मे वे आगे बढ़े, यह उन का कुसूर था कि फ़ील्ड मे, क्षेत्र मे आने से वह घबराते नही थे, बड़े से बड़े खतरे का सामना करने के लिये वह आगे बढ़ते थे—आज उन की इस बात की सराहना होनी चाहिये। उन का मार्ग वही मार्ग था—लिंकन ने सयुक्त राज्य अमरीका को इकट्ठा करने के लिये अपने प्राणो की आहुति दी। जब 16 सदर्न स्टेट्स जनूबी रियासते, ने रगभेद की नीति पर सिविल वार शुरू कर दी, तो भी वह डटे रहे, उस की एकता के लिये अपना खून दिया। लेनिन के भाई को फ़ासी के तख्ते तार पर चढा दिया गया, तब उस ने कसम खाई कि अपने भाई के खून से मै रूस के भाग्य के तारीकी के धब्बे को धोना चाहता हू और उन्होंने धो दिया।

आज जरूरत इस बात की है कि हमारे देश पर जो तारीकी के बादल छा रहे है, जो तारीकी धब्बे लगे हुए है उन को दूर करने की कोशिश करे और आपस मे उलझने के बजाय उन हालात का जायजा ले कि किन हालात मे उस आदमी को हम से जुदा होना पड़ा, जिस के बारे मे आप कहते है कि वह मजबूत इरादा का आदमी था। पार्लियामेट ने कल उन का ट्रिब्यूट पेश किया, काग्रेस पार्टी ने पहले किया, उन को राष्ट्रीय शहीद कहा, लेकिन कहने से ही कुछ नही होता है, हम को यह देखना चाहिये कि हम किस मार्ग पर चल रहे है। हमारे विरोधी दोस्त कहते है कि हम को राजनीति मे नही पडना चाहिये लेकिन जब आप यह कहते है कि स... रे... मचर अपनी ड्यूटी को नही निभाये, पुलिस वालो से कहते हैं कि अपनी ड्यूटी को नही निभाये डाक्टरो से कहते है कि अपनी ड्यूटी को नही निभाये, जब कोई व्यक्ति ऐसा कहे कि देश के सिविल सर्वेन्ट्स, आप अपने कार्यभार को मत निभाओ, तो यह जरा सोचने की बात है। हम यह मान ले कि सरकारी कर्मचारी आप की बात को मान कर अपना काम न करें या समस्तीपुर मे जिन्हो ने काम नही किया, डाक्टरो ने काम नही किया, पुलिस फ़ोर्स ने अपना काम नही किया—तो ऐसी स्थिति मे आप उन की निन्दा कैसे कर सकते हैं? एक ही बात मे दो तरह की विचारधारायें नहीं फ़ैलाई जा

सकतो। आज मेरी आप से अपील है—जो कुछ हुआ है उस को ठीक रास्ते पर लाने के लिये अपने आप को थोड़ा सा तैयार कीजिये। ऐसा न हो कि यहां तो देश में प्रजातन्त्र को बचाने के लिये भाषण होते रहें, लेकिन बाहर ऐसी बातें होती रहें जिस से देश का प्रजातन्त्र एक अन्धकारमय भविष्य में फंस जाय।

यहां पर बहुत सी बातें कहीं गई हैं—लेकिन मेरे दोस्त शंकर दयाल सिंह जी ने जो कहा—मैं उन की बातों से बहुत हद तक सहमत हूं—इस बात की जांच होनी चाहिए कि गाड़ी को दानापुर पहुंचने में इतना टाइम क्यों लगा? उस वक्त रेल कर्मचारियों को यह पता होना चाहिये कि किस लेवल पर यह डिसीजन हुआ था, उन को डाक्टरी सहायता देने में इतना विलम्ब क्यों हुआ। अगर आप इस बात का जवाब नहीं देंगे तो इतिहास आप को माफ नहीं करेगा चाहे आप किसी भी पद पर हों। आप को इस बात का पता लगना चाहिए कि जब उन के ऊपर बम फैंका गया था। उस वक्त सिक्योरिटी सिस्टम क्यों पैरालाइज हो गया। इस में सरकार का उत्तरदायित्व है सरकार इस उत्तरदायित्व से बच नहीं सकती, इस लिये इस में जनता के मन से अपने चेहरे को साफ करके जाना चाहिये और इस की जिम्मेदारी को पिन-प्वाइन्ट करना चाहिये।

जहां कमीशन की मांग थी, सरकार ने कमीशन बैठा दिया, लेकिन अब हमारे दोस्त उस से भी आगे बढ़ कर संसदीय समिति की मांग करते हैं। जब कमीशन नहीं बना था आप क्रिटिसाइज कर रहे थे कि कमीशन नहीं बना, जब बन गया तो आप अब क्रिटिसाइज करते हैं कि देर से क्यों बना और अब कहा जा रहा है कि संसदीय समिति के द्वारा जांच होनी चाहिये। हम तो यह कहते हैं कि चाहे सी० बी० आई० की एन्क्वायरी हो या कमीशन की एन्क्वायरी हो—सब मिल कर हकीकत को सामने लायें—कौन हत्यारा है, आज देश उस को जानना चाहता है, क्योंकि इस तरह के आदमी का कत्ल जो देश को आगे बढ़ाने के लिये रेल के पहिये को चलाने के लिये अपने आप को शहीद कर गया—देश के इतिहास में एक बहुत गहरी बात है। आज देश और देश से बाहर के लोग जानना चाहते हैं कि वह कौन सा षडयंत्र था, कौन उस के पीछे था। लेकिन इस का पता तब लग सकता जब हम उस के लिये वातावरण पैदा करें जिस में हम काम-नैस के साथ, शान्ति के साथ सोच सकें। लेकिन अगर हम इस तरह से स्टेटमेन्ट देते रहें—यहां कुछ कहें और बाहर कुछ और कहें, सरकारी कर्मचारियों से अपील करें कि अपना काम मत करो तो उस से वातावरण नहीं बनेगा।

इसलिए भी भी वक्त है कि हम इस बात को समझें और घृणा, इनडिफरेंस और इनएफिशियेंसी का प्रचार न करें। प्रजातन्त्र विरोधी अभियान से या कमीशन आफ इनक्वायरी बनाने से यह नहीं रोका जा सकता। हम को पता करना है कि किस लिए यह सब हुआ। हमें दुःख है कि जो दोस्त 20 दिसम्बर, 1974 के पहले उन को सब तरह की बातें कहते थे आज वह उन के सब से बड़े शुभचिन्तक बने हैं

"की उस ने मेरे कत्ल के बाद जफा से तौबा
हाय उस ज़ूद पशेमां का पशेमां होना।"

क्या बात है कि उस वक्त सब से बुरे आदमी—भारत के वही थे, आज वह सब से भले हैं क्यों कि वह शहीद हो गये। हम आपस में मिल बैठें। संसद सदस्य के नाते हमारे और आपके अधिकार बराबर है, अगर यह वातावरण नहीं बदला, अगर हमारी एक दूसरे पर शक करने की नीयत नहीं बदली अगर हम ने आत्मचिन्तन नहीं किया तो समझिये कि ललित बाबू का खून बेकार हो गया। अभी वह खून जिस में है वह मुल्क को बचा सकता है। भारत माता के मस्तक पर इस खून का तिलक लगा है। वह जिस मार्ग पर चले वह

[प्रो० नारायण चन्द्र पराशर]

एकता और विकास का मार्ग था। वह हड़ताल करवाने, और उन को क्रश करने का मार्ग नहीं था। मैं जानता हू कि पिछडे इलाको को बताने के लिये उन के दिल मे कितनी सहानुभूति थी। लेकिन अफसोस है कि अपसरशाही का चक्कर उस मे फंस गया और उस पहिये मे जग लगाने मे कामयाब हो गया लकिन वह जग ज्यादा देर नही रहेगी। ललित बाबू ने अपने खून से उस जग को धोने की कोशिश की है।

आज जो जम्हूरी पसन्द ताकते है, चाहे हिन्दूस्तान मे हो या बाहर हो, वह एक एहद करे कि वह प्रैस को, प्लेटफार्म का और किसी भी अखबार को इस बात की इजाजत नही देगे कि वह घृणा के वातावरण को बढ़ाये। और इस के लिये कुर्बानी की जरूरत है। भगत सिह ने इसलिये नही कहा था कि सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल मे है, देखना है जोर कितना बाजुए कातिल मे है। जब फासिज्म की बात होती है तो एक टेन्डेसी की बात होती है। एक तरफ इनऐफिशिएसी का इल्जाम लगाते हैं और दूसरी तरफ खुद ही उस को बढाते है। मसोलिनी ने 3 जनवरी, 1925 को फासिस्ट चार्टर का ऐलान किया था ठीक 50 साल बाद 3 जनवरी, 1975 को श्री ललित नारायण मिश्र की उसी तरह हत्या होती है। यह एक नमूना है। आप इस टेन्डेंसी को, इनएफिशिऐंशी को न बढ़ाइये, नही तो यह हम सब को खत्म कर देगी। हिन्दुस्तान के विकास के लिये उस की रक्षा के लिये हम सब मिल कर चले। सरकार से जो आग्रह कर रहे है माननीय शंकर दयाल सिह और भोगेन्द्र झा जी ने जो बाते कही वह ठीक है। आप उन की इनक्वारी कराइये और उन से बचने की कोशिश न कीजिये। क्यो? क्यो कि अपने ही साया से लड़ना ठीक नही है :

(It is no use fighting our own shadow)

हमें जनता मे विश्वास पैदा करना है और उस के लिये कुछ कदम उठाना पड़ेगा। और अगर किसी आदमी को सस्पेड करना पडे तो जरूर सस्पेन्ड करें। एक कैदी भाग जाता है तो आप दरोगा को सस्पेड करते है। यहां पर आप ने क्या किया? मैंने बिहार मे देखा है, जनता सवाल पूछती है। जनता बयान नही चाहती, तकरीर नही चाहती, बल्कि कदम चाहती है। आप कदम उठाइये हम आप के साथ है। हम इस हादसे से सबक ले। हिन्दुस्तान की रक्षा के लिये, जम्हूरियत के लिये तरक्की पसन्द ताकतो की बढोत्तरी के लिये हम सब मिल कर काम करें। इस मे देश की एकता और विकास का सवाल है। हम सब उस तरफ चले जिधर हमारे बुजुर्गों ने मश्विरा दिया था। न कि उस तरफ जिधर हम एक दूसरे पर शक कर के उस सकल्प को खत्म करे जिस के लिये वह शहीद हुए?

इन शब्दो के साथ मैं जहा मिश्र जी को श्रद्धान्जली अर्पित करता हू और उन्हे विकास वसत का अग्रदूत कहता हू

the harbinger of the spring for the development of the country

वहा यह भी कहना हू कि यह जो प्रस्ताव माननीय लिमये ने रखा है इस मे अगर कुछ आत्म-चिन्तन की भावना बनती है तो बने। लेकिन इस से जो उन की काम रोकोने की बात है वह ठीक नही है। न काम सदन का, न गाडी चलने का और न देश का रुकना चाहिये, बल्कि आगे बढ़ना चाहिये और तेज बढना चाहिये।

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA (Begusarai): Mr. Chairman, Sir, it is indeed a very happy feature of this most tragic situation that there is common ground between the other side and on this side of the House that utmost effort should be

made to ascertain the truth in this matter.

There is a common realisation on the part of everybody that what happened at Samastipur and, ultimately, resulted in the death of Shri L. N. Mishra was, one of the most gruesome tragedies perpetrated in Independent India, which has disfigured our country and the society.

Shri L. N. Mishra, Mr. Chairman, fell on the second day of the New Year. So, we can say that the New Year has begun rather ominously for all of us. The tragedy has been universally condemned and felt, may I also ask you whether you are prepared—if you ask us to wear the Cross for it, I would say that the entire Indian community has to wear the Cross for it—to do the same. You seem to be donning Buddhist monk's robes and today what a fine and heart-warming spectacle did we witness! My hon'ble friends on the other side are not only Gandhian in spirit but they have gone a step further They have turned Budhist monks and are new apostles of truth and non-violence! It does not, however, fit at all in the Budhist mouth to tell others that they are the very incarnation of evil and untruth.

That is what we have witnessed today. We have heard sermons from the other side. We do not want to paint ourselves as angels but I only want to ask you if S. N. Mishra turns to be an upholder of the cult of murder and violence or anybody else on this side, who will save the democracy in this country? If you alone want to bear the burden of saving the democracy in this country then, in effect, it has come to this that only one single individual is being asked to bear the burden for saving democracy in this country and that is your trump-card that you bring in, in any serious debate of this kind: That the Prime Minister is in danger and, therefore, Democracy is in danger. That is what you have brought the whole thing to. You cannot go on claiming that you alone are the upholders of democracy, you alone are the mainstay of democracy and principles of truth and non-violance in this country. You must speak with a certain amount of humility if you want to run this vast country of 600 million or so.

So, Sir, there is absolutely no doubt in our mind that when my hon'ble friends on the other side accuse us of character assassination, I want them to tell us what exactly do they mean by character assassination. Whether they mean by character assassination the exposure of corruption and if character assassination can be equated with exposure of corruption, would they like that in a democracy nobody should expose corruption? Can they point out a single thing that we had said in this House? I do not want to speak about the dead. He was indeed one of the most lovable and charming persons that this House had. If you feel wrench in your heart, many on this side of the House feel no less wrench in their heart. We have lived long together. We have worked together. We had began our political life almost together. Our families were living like members of one family and you cannot imagine the kind of anguish and pain that many of us bear on this side of the House. Those of you who have been trying to give them false support,—it is these people who have been responsible for much of the misky atmospher that has been created in this country—if you tell the truth to the great lady, the Prime Minister, that these do not conduce to the growth, maintenance and development of democracy and that they, in fact, imperil and weaken democracy, then alone democracy can be saved in this country. Similarly, all of us are prone to certain indiscretions. All of us can commit some lapses or mistakes. But, unless you tell them and stay their hands that this is not done in the interest of the country, everbody

[Shri Shyamnandan Mishra]

would be running amuck, and democracy would be in danger. So, I have been telling my frinds, please do not raise those things. I ask you, if criticism dies in a democracy, can you save democracy?

Then, Sir, I was reminded of when these people were talking about with mostly Opposition in their mind, what was said to some African people about the Leader of the Opposition. When it was mentioned to them that there was some animal like Leader of the Opposition, they asked 'Whom do you talk about? You talk about the greatest traitor?. That is the kind of opinion that my hon. friends on the other side have about the Opposition. If the Opposition is traitors and worthless, I ask you, do you think that you are the paragons of all intelligence and of constructive spirit? If the Opposition is worthless, it is you who have reduced everything to worthlessness, and yet not the substance of the Opposition. You might say anything. The substance of the Opposition is kept Simon Bure and everybody, wherever you go in the country, will tell you that it is the Opposition which has kept the flag of democracy up. You must feel proud about this. But, Sir, this is how we are being treated in this House

May I take this opportunity of telling the House and all concerned that in spite of our sharpest political differences with the Prime Minister, with the late Shri L. N. Mishra, we have got the sweetest feelings for them. No body could have any other feeling for a lovable and a charming person, like Shri L. N. Mishra. He was the very picture of sweetness, charm and humility. That is what impressed everbody and these qualities proved disarming to opponents. Yet, many of you talk as if you are great friends of Shri L. N. Mishra and other are not.

Now, Sir, we find that in regard to such a person who happened to be a Member of the House and who happened to be a Member of the Cabinet, our esteemed President did not think it fit to refer to his death in his gracious speech yesterday. If the President did not think it fit to do so on whom does the responsibility lies? The responsibility squarely lies on that corner of the House.

Now, the President makes a speech made by the Cabinet. And yet this speech does not contain a single reference to this most tragic incident that has taken place. If you do not make a mention of the assassination of Shri Hemant Kumar Basu, we, as a House, cannot take notice of because he did not belong to the House. But, he was, indeed, a great figure. Shri Hemant Kumar Basu, in his own right, was a great figure. Then, there was the assassination of Shri Suraj Narain Singh who was a legendary figure in Bihar politics. I had the good fortune of contesting against him in 1952 when there was a three cornered fight between me, Maharaja of Dharbanga and Shri Suraj Narain Singh and I must tell you that I have not come across a person purer in spirit and greater in courage than Shri Suraj Narain Singh He had scaled the walls of Hazari Bagh with Shri Jayaprakash Narayan in 1942. If you do not make any mention of the assassination of such a great person also, we cannot take any notice of it because he did not belong to the House But, in regard to a person who did belong to the House and who did belong to the Government no mention is made and it is this party, the sheepish lot, which has swallowed, hook, line and sinker, the speech of the President—a Speech, to repeat, without the slightest reference to this most gruesome tregedy that has taken place.

You might probably say that the President's speech customarily does not make a mention of it.

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur): They say the matter is *sub judice*.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Somebody might suggest and probably you may take it because you are such a gullible lot, that the President's speech customarily does not make a mention of it. But may I remind you that only two years ago the death of His Majesty the King of Bhutan was referred to m the speech of the President? Similarly on many occasions the President had thought it fit to refer to some of the deaths that had occurred of important persons.

SHRI. MADHU LIMAYE: Not ordinary mortals.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: He says not of ordinary mortals. That is given to His Majesty the King or Her Majesty the Queen but not to an ordinary mortal like L. N. Mishra.

THE MINISTER OF PETROLEUM AND CHEMICALS (SHRI K. D. MALAVIYA): What a great point you have made?

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: This great point would not get any place in your great mind; particularly after you have been inducted into office, your mind has become much greater, more capacious and much wider.....

SHRI K. D. MALAVIYA: My great mind cannot take care of small things

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: We are being asked: why come up with this kind of adjournment motion, stopping the business of the House? But may I ask in turn what did this Government do before we came up with this adjournment motion? A shameful lot this Government is. While we have been smarting under this tragedy, did this Government think it necessary to share with us any piece of information? We as members of the House and even as members of the public have been contenting ourselves with the crumbs of information that have fallen to us from the newspapers. You blame the *Motherland* and you go by the dictum of the fatherland.

SHRI ATAI BIHARI VAJPAYEE: Who is that fatherland?

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Whether the *Motherland* gives good information or bad information, whether the *Hindustan Standard* gives reliable information or unreliable information, who is responsible for it? Did any person from the Government or official side come out with factual details about this? They would try to look very clever, very judicial minded in claiming that it was not necessary to share information with the citizens of this country and the MPs. about this. They would pretend to be very wise and very judicial. Since the investigation is under way. But may I ask you: does anybody have any reliable piece of information given by Government about the factual details of the incident? Could not factual details have been given about what heppened at Samastipur? Which is the report we must go by and in which poper? Many things are appearing in the newspapers. You ask us to go by newspaper reports!

What happened when Mr. L. N Mishra went there? There were many persons accompanying the late Railway Minister. Was any statement taken from any of these ladies or gentlemen who were accompanying him? What was their visual impression? If anybody gives a visual impression, if S. N. Mishra gives a visual impression, what would the Mathew Commission do about it? I can give my visual impression. It may be right, it may be wrong. But they are suspicious of sharing information with the people. What did they have to say? Did they come forward with any statement about this? Did it not cause concern to all of us and the members of the family? What is it that you want the members of the

[Shri Shyamnandan Mishra]

family to go by? In this matter of the death of Mr. L. N. Mishra, we happen to be members of the same family. But what did you do about this?

When he went there, there were many persons with him. How did the bomb explode? Was it thrown? What is the impression of many people who accompanied him? All of them were not killed. Only a few were killed. Whether statements were taken from them? We could have taken them on their face value in the first instance and they could have been examined and scrutinised later. Are we not entitled to know about this—was the bomb thrown? Or had it been placed earlier in some corner and it exploded at a particular time? We really do not know anything about it. After the incident who were the first to arrive on the scene? Were some officers the first to arrive? What did they find on the spot? We were told about those things' earlier when Shri Partap Singh Kairon fell to the bullet of the assassin; we have been told earlier about factual details in some other cases too where assassinations had taken place Why is there a particular kind of silence about this matter? Who went there and registered the case? Does the hon. Mover of the motion know whether a case had been registered? If so, under what section and at which place? .. (An Hon. Member: it is under investigation). The registration of the case is under investigation? Where was it registered? Who registered and when was it registered? What did that officer do in the matter? After all the case was registered by him After that, who were the persons who took care of Shri L. N. Mishra? Why did the officers there not take care of the person of Shri L. N Mishra? Why was it left to the care of some other gentleman accompanying him? Did some officers arrive there or not? They say that all of them ran helter and skelter. This is all because of the total revolution that is being preached by the Sarvodaya Leader Jayaprakash Narayan that they mean to say is that JP is making them also go wrong? That is the total revolution brought about by JP that even this blessed Government is made to do wrong and these blessed officials are made to do wrong! Then I think greater credit has to be given to the great Sarvodaya leader and indeed the revolution is total!

Those were certain things which could have been told.

Later on what kind of medical assistance was provided to him? That had been asked by many. No answer had been given. Is that going to prejudice the investigation. Damn the investigation if these pieces of information are going to prejudice it. We require these pieces of information. No judge would say that these were going to prejudice the proceedings before him.

I ask my hon. friends on the other side to consider those things very seriously.

The condition of Shri L. N. Mishra began deteriorating every moment and it became critical at 5 O'clock. Was Delhi informed about this? Dr. U. N. Shahi says that when he arrived at Danapur around 5 O' clock, Doctors were fighting a desperate and losing battle to save the life of L. N. Mishra. Was Delhi informed about all this? Was the Prime Minister informed about it? Was the Health Minister informed about it? Was the Home Minister informed about it? When was this information received by the people in Delhi, by the authorities in Delhi? When condition became critical at 5 O' clock, was the Health Ministry consulted about this? What medical aid was rushed by the Health Ministry? What kind of consultation took place between the representatives of the Government of Bihar and the representatives of Government in

Delhi about this? My hon. friends on the other side should know that within one month of the assasination of Shri Pratap Singh Kairon—if you really feel sincere about it, if something has to be ascertained in this matter earnestly—they must know that 7,000 persons had been interrogated. Nearly 5,000 vehicles had been rounded up and thousands of bad characters were also rounded up. Have you heard any thing of that kind in this case? What is the kind of serious effort that is being made in this connection? I have not heard any thing about it. Probably a dozen persons have been arrested, but not even the Chief Medical Officer who had first examined Shri L N. Mishra has been interrogated so far Here is Mr Hingorani of the CBI who says so that that is the most baffling thing that even the Chief Medical Officer who had the opportunity to examine Shri Mishra first of all has not been interrogated so far. Would you not have a grievance against this Government for that?

Mr Hingorani said so or not, are you not entitled to say that the first Medical Officer who did examine Shri Mishra should have been interrogated by now, and ask why he has not been interrogated so far? These are things which should have been mentioned by the Hon. Home Minister to the House on the very first day If a statement had been circulated, we would not have gone in for even an adjournment motion. We would have studied the statement and tried to think over it.

We do not want to make political gain out of it like the hon'ble Prime Minister and others I ask, please hold the scales evenly in your hands When you are here before *dharma chakra pravartanaya*, please hold the scales even. Who has turned it into a political thing? Is it Shri Jaya Prakash Narain and his movement? I am fully identified with this movement. They may call us Fascisty, you may call me so to your heart's content, you call this movement Fascist to your heart's content, but what is happening. The tremors of the movement have not yet reached the borders of Madhya Pradesh, even so all your political propoganda about the death of Shri Mishra has fallen flat on the people of Madhya Pradesh. Here is the eloquent reply to your malicious and mendacious propoganda against the opposition, the most eloquent reply. And if it is their desire to make political capital out of this murder, I wonder why they did not mummify the body of Shri Mishra and carry it all over the place during the course of the elections. But then, that would be the thing before the electorate, the thing before the electorate would be the power behind.

SHRI M RAM GOPAL REDDY (Nizamabad): It is unfair on your part.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Here is Mr. Jaya Prakash Narain who is being blamed by everyone on the other side, but I ask you is there anyone in this country who has got the guts and the courage to tell the vast gathering at the Boat Club that it must be turned into a meeting of mourning. He turned a political meeting into a meeting of mourning, a meating of condolence, and here is our Prime Minister who turns a condolence meating into a political meeting Just see the contrast between the two. I ask you to judge Is not the contrast very glaring?

My hon friend, Shri Limaye, adroit as he is, has been pursuing certain points with great tenacity and, as you know, he goes into details. He asked only by way of curiosity whether the hon. Prime Minister had granted an interview to the late Shri L. N. Mishra on the 23rd December. If so, during the course of her talk, did she mention to him that he should now quit the Cabinet? This was the simple, curious question put. The Prime Minister with great alacrity leant to her feet and said, there was nothing of the kind. But here is a

[Shri Shyamnandan Mishra]

small piece of information which I would like to share with the House.

SHRI P. VENKATASUBBAIAH (Nandyal): It is a deliberate insinuation.

श्री मधु लिमये : माफ कीजिए, यह जानकारी श्री ए० एन० मिश्र के बहुत नजदीक के लोगों ने मुझे दी है। मिश्र जी अब यहां नहीं है प्रधान मंत्री की झूठी बात को काटने के लिए।

SHRI P. VENKATASUBBAIAH: Let him mention the names of the people.

DR. KILAS (Bombay South): I never expected Mr Limaye to stoop down so low.

SHRI MADHU LIMAYE: I only gave you the facts. You may believe them or not. I said, people close to Shri L. N. Mishra told me that.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: I completely believe the Prime Minister when she said that she did not mention it to Shri L. N. Mishra that he should quit the Cabinet. However, here is something which your great bosom friends have said. Would you disbelieve them also? You may afford to disbelieve Mr. Madhu Limaye, but would you afford to disbelieve such a high dignitary as a member of the National Secretariat of the CPI? This is for the kind consideration of the Prime Minister:

"Lucknow, January 17.

The late Mr. L. N. Mishra had been persuaded by the Prime Minister, Mrs. Indira Gandhi to replace Mr. Ghafoor as Chief Minister of Bihar to deal with the situation arising out of the JP movement. This was revealed by Mr. Yogendra Sharma, M.P., Member of the National Secretariat of the CPI, while addressing the 10th conference of the UP State CPI currently in session here. Briefing newsmen, a party spokesman, Mr. R. K. Garg, M.L.A., said that Mr. Mishra had told Mr. Sharma before he fell a victim to the bomb blast about the Prime Minister's offer."

I am placing it before the House for whatever it is worth. It is said that this is another way of getting rid of him. That is the inference one would like to draw. But I would not like to be that uncharitable so far as the remarks of the Prime Minister are concerned about the talk that took place between her and Mr. Mishra. Even now I would believe what she has said in reply to Mr. Madhu Limaye, but she must reckon with the statement made by no less a person than a member of the National Secretariat of the CPI. That is my humble submission in this matter.

Why are these people so anxious to exculpate the Prime Minister in this manner? Did any member of the opposition ever turn his attack against the Prime Minister, saying that she was involved in this? Can he point out a single instance?

SHRI N. K. P. SALVE: Did you hear Shri Jyotirmoy Bosu and the allegations he made that the Prime Minister is responsible?

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: I am coming to that. My hon. friend must bear with me. How is it being brought to this focus? Who is responsible for this, after the clean chit that has been given by the great leader of Bihar, Dr. Jagannath Mishra, that the Prime Minister was not involved in this matter?

श्री मधु लिमये : सब से पहले उन के बयान से ही मुझे पता चला कि इस तरह की बात है।

I was shocked by Shri Jagannath Mishra's statement.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: However, on the 7th of January itself the Prime Minister said that "there is a whisper that I have been responsible for these tragic incidents" and al-

though I will never call you Congressmen, the Prime Minister went on to say even the Congressmen are now believing this blatant lie." At least that is what the *Hindustan Times* says. May be, the *Hindustan Times*, which is under the Birlas, is known to be the enemy of the Prime Minister just now! I would only say by way of an example, that everybody knows that it is not your party or the Prime Minister who had suggested the name of Shri K. K. Birla as a candidate from Lucknow!

The Prime Minister went to the length of saying "if I die, people would say that I have killed myself"; this was on the 7th of January. Therefore, there is no use of saying that we have been telling something about it, or we have been insinuating about it. My hon. friends on the other side must reckon with this that the credibility gap between you and the people have increased so much that people are prepared to swallow anything about you and against you. Don't you reckon with this truth that the wildest thing is being said against the highest person in the government and the country and the Prime Minister herself complains about this that even Congressmen are believing these blatant lies and so on.

So, these are the few things which we wanted the other side of the House particularly to reckon with and to tell us something about them because our minds are full of apprehensions about the steps that are being taken. Here, there seems to be a curious amalgam.

Now the Government has come to see the reason behid the demand for a commission of inquiry. When we asked for a commission of inquiry, when we voiced the demand for a commission of inquiry, it was a reactionary demand, it was a fascist demand. But, ultimately, this Government comes down to this and the demand is conceded.

Now, why has it been conceded so late? There was only one element in this country which was opposed to the appointment of the commission of inquiry, and that was the great party which happens to be in alliance with the ruling party, namely, the CPI. The hon. Chairman of the CPI, the great and esteemed person, Shri Dange, expressed himself completely against the appointment of a commission of inquiry, and he said this step would add confusion to the Indian politics. Confusion against whom? Confusion to Indian politics. What did he mean thereby?

21 hrs.

But now it seems that they have been able to convince their friends that they would not be able to resist the demand for the appointment of a commission of inquiry. It is now reflecting on their integrity and, therefore, they must concede it. So, probably that resistance has broken and this commission of inquiry has been set up now.

But what do you find even now? I ask those friends who have got some smattering of legal knowledge and also of judicial proceedings—I would not say anything which would prejudice the proceedings before the Mathew Commission—but I ask you whether you are sincere about the impartiality of the proceedings that should take place before the Mathew Commission. If that is so, why are you having this curious amalgam of four or five streams of investigations going on concurrently? Particularly I would like to refer to two streams of investigations which are going on concurrently. Whom do they want to convince. I ask my hon. friends who have got something to do with law and judicial matters.

Here is the CBI investigation which is going on in full force, and the CBI investigation is under the aegis of the executive authority. The whole busi-

[Shri Shyamnandan Mishra]

ness of appointing a commission of inquiry is to take this matter out of the hands of the executive and place it in the impartial hands of the judiciary—is that not the purpose of appointing a judicial commission?—in order to inspire more confidence in the minds of the people that the executive is not dealing with it?

SHRI N. K. P. SALVE: It is a fact-finding commission.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: I will go very logically about it. If the two streams are going on concurrently, that is, the executive stream of investigation and the judicial stream of investigation under two auspices, can there not be a conflict between the two?

My hon. friend, Shri Salve, has rightly asked me a question, which needs to be answered. He said, that the CBI only is the investigating agency. Then put that investigating agency under the guidance and the direction of Mr. Justice Mathew. That can be done Mr. Chairman, if you appoint a committee of this House with S. N. Mishra as the Chairman of that committee to inquire into any matter, with the authority of Parliament I will summon the services of the investigating agency and the Government will have to provide them. Whose authority is greater—the authority of Parliament or of the executive government? The investigating agency would be at my disposal Have you placed the CBI, as the investigating agency, at the total disposal for this purpose of the one-man inquiry commission of Mr. Justice Mathew? If you have not done that, then there is bound to be a conflict between the two and one can be suspected of prejudicing the other

Then, this morning here is the news that the new Railway Minister has said to the hon Minister of Irrigation in Bihar Dr Jagan Nath Mishra, that another inquiry would be set up by the Railway Department to go into the question of the delay that occurred at Samastipur in transporting the late Railway Minister to Patna or Danapur. So, this is another inquiry that is going to take place.

I have not gone into the law relating to the appointment of a commission of inquiry. But if does seem to me that it is not in consonance with the law that another inquiry should be set up in this matter. It would not be in keeping with the spirit of the law on this subject. So, this is another thing which must be considered by the House in all seriousness—whether this Inquiry is indeed seriously meant by the Government.

Now, the hon. Home Minister, Mr. Brahmananda Reddy, had given everyone a wholesome advice that one must hold one's judgment in check; one must not make any observation or remark about the findings of the Inquiry. I ask the hon. Home Minister: Who flouted this wholesome advice? The first person to flout the advice of the Home Minister was the Prime Minister of India The Prime Minister in her very first utterance on the 7th January said in so many words that there was no need for an inquiry because, she said, the reason was political. That is what she said in so many words.

She had clearly laid the blame on the shoulders of J.P. That is what the newspaper reports say. If that is so, there could be two inferences from this. One inference could be that this incident had a larger penumbra of implications. There was a spectrum of issues which had to be dealt with. If it had larger political implications, should not then a Commission of Inquiry have been set up at that very time?

It is a late realisation that it has other dimensions. No less an authority than the Prime Minister of India spelt out on the 7th January itself—I may or may not agree with her view—the implications in much wider

terms. If that is so, it was not the CBI which was the competent body to go into the matter. The CBI can only investigate crimes and offences. That is precisely the function of the CBI. The CBI could not go into larger implications, psychological, political or otherwise. The Prime Minister had spelt out these implications. If that was so, why was not the logic of the Prime Minister followed in actual terms? Why was not a Commission of Inquiry appointed at that time itself?

A whisper now goes round that the CBI—may be, it is completely wrong—was on the point of making some startling revelations and here is the check put upon it. That is also a whisper going round. Maybe, it is completely wrong. But that is the kind of atmosphere in which we live. You can say, "You are also responsible for it." But you have to share the larger responsibility for it. However, it is now being said that it is because of this and that.

My humble submission is that the Government has taken this step so late when many of the horses might have bolted out of the sheds. The Government cannot disabuse the public mind that the delay that has occurred in this matter has been indeed a culpable delay on the part of the Government. This is the impression that is carried in our mind. So, I think, we are quite justified to bring this adjournment motion. It has been our duty to society and country to come up with a motion of this kind before the House.

सभापति महोदय : समय बहुत थोड़ा रह गया है—अभी दो कांग्रेसी और दो विरोधी सदस्य बोलने वाले हैं। अगर पांच-पांच मिनट में बोल लें तो काम चल सकता है। श्री हरिकिशोर सिंह।

श्री हरि किशोर सिंह (पुपरी) : सभापति महोदय, आज एक अत्यन्त दुखद घटना के सम्बन्ध में हम लोग इस सदन में चर्चा कर रहे हैं। श्री ललित नारायण मिश्र जी की हत्या हमारे संसदीय जनतन्त्र और हमारे स्वाधीनता के इतिहास में एक बहुत बड़ा कलंक का धब्बा है, एक ऐसी रहस्यात्मक परिस्थिति में उन की मृत्यु हुई है जिस के रहस्य का पर्दा बहुत दिनों तक उठना शायद सम्भव न हो पाये। पुलिस की एन्क्वायरी हो रही है, सी० बी० आई० की एन्क्वायरी हो रही है, उन की उचित चिकित्सा की व्यवस्था क्यों नहीं की गई—इस बात की भी उच्चस्तरीय जांच की जा रही है और साथ-साथ जस्टिस मैथ्यू के आयोग का भी गठन किया गया है। अच्छा होता—यह विवाद मैथ्यू आयोग के प्रतिवेदन के बाद प्रारम्भ किया जाता। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या आज इस सदन में जो चर्चा हो रही है उस के द्वारा मैथ्यू आयोग को प्रभावित करने का प्रयास किया जा रहा है या नहीं, यदि नहीं, तो मैं जानना चाहता हूं—जैसा अटल जी ने कहा—डा० भल्ला के बारे में—कि डा० भल्ला ने यह सलाह दी थी कि मैं तो फिजीशियन हूं, यह तो सर्जरी का काम है, यहां सर्जन मौजूद है, उन से इलाज कराना चाहिए। मुझे को जो सूचना मिली थी—डा० भल्ला का जो बयान अखबारों में छपा था, वह कुछ विपरीत सूचना देता है। डा० भल्ला से हमें जो सूचना मिली थी वह यह है कि डा० भल्ला से जब पूछा गया तो उन्होंने जांच-पड़ताल कर के कहा कि यह बहुत ही मामूली चोट है। जब इस तरह की इस सदन में चर्चा होगी तो जो आयोग जांच कर रहा है—क्या डा० भल्ला के सम्बन्ध में वह एक सुनिश्चित राय कायम करने में समर्थ हो सकेगा? यह बात सदन को विचार करनी चाहिए।

सभापति जी, जहां तक संदेह के वातावरण की बात है—सन्देह का वातावरण तो है, लेकिन उस वातावरण को बिगाड़ने

[श्री हरि किशोर सिंह]

की चेष्टा की जाती है। पहले आयोग को गठित की जाने की माग होती रही, अब जब मैथ्यू आयोग का गठन हो गया तो शाम-बाबू कहते है—चूकि सी० बी० आई० किसी निश्चित राय पर पहुच रही थी, उस की जांच को रोकने के लिए मैथ्यू आयोग का गठन किया गया है— यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है। जब इस तरह का विस्पर-कैम्पेन इस देश मे चल रहा है—इस मे किस का हाथ है, फासिस्टवादी प्रवृत्तियों का इस मे क्या प्रभाव है, मैं उस विवाद मे नही जाना चाहता, मैं इस को राजनीतिक विवाद बनाना भी नही चाहता, लेकिन जिन्होंने इस को राजनीतिक विवाद बनाने का प्रयास किया है, मै समझता हू कि इस मायने मे उन्होंने सही काम नही किया है। वास्तव मे राजनीतिक विवाद तो उसी क्षण बना दिया गया, जिस क्षण ललित बाबू की मृत्यु हुई उसी क्षण सारे देश मे कोई सुनिश्चित यन्त्र है जिस के द्वारा यह प्रचार किया जा रहा है कि इस देश मे जो हमारी सरकार की सब से बडी हस्ती है, उन का इस मे हाथ है। जिन लोगो ने उन के मृत्यु के क्षण मे ही इस को राजनीतिकरण किया उन के लिए यह शोभा नही देता है। कांग्रेस के लोग या दूसरे लोग यदि इस मे कुछ राजनीतिक षडयन्त्र देखते है तो उन को यह शोभा नही देता, उनको इस बात का खण्डन करना चाहिए।

सभापति जी, यहा एक दो बाते और कही गई है—सन्देह का वातावरण बनाने के प्रयास मे श्री मधु लिमये जी ने कहा—मैं उन का बहुत आदर करता हू, बहुत लिहाज करता हू—लेकिन इस तरह की छोटी छोटी बाते इस चर्चा म नहं आनी चाहिए थी। जैसे [उन्होंने कहा—बिहार के बाहर के एक संसद् सदस्य उस दिन पटना मे क्या मौजूद थे ...

श्री मधु लिमये : मैंने नही कहा था—हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड को कोट किया था।

श्री हरि किशोर सिंह : श्री यशपाल कपूर—आपको समाचार पत्रो से भी जानकारी मिली होगी—बिहार मे कांग्रेस के जिला स्तर के सगठनात्मक चुनाव के सिलसिले मे वहां गये थे, उनका कार्यक्रम बहुत पहले मे निकल चुका था, वे वहा के चुनाव अधिकारी बनाये गये थे, कांग्रेस अध्यक्ष द्वारा वहा भेजे गये थे। इसलिये इन छोटी बातो की चर्चा नही करनी चाहिये थी।

लेकिन जो सबसे महत्वपूर्ण बात श्री अटल जी, श्री श्याम बाबू ने कही है, मधु लिमये जी ने भी वही कही है, मैं उनसे सहमत हू कि इस देश मे सन्देह का वातावरण पैदा हो चुका है, उसके लिये चाहे हम जिम्मेदार हों या वे जिम्मेदार हों, लेकिन उस वातावरण की शिकार हमारी सारी व्यवस्था हो रही है—यह हम सब लोगो के लिए सोचने की बात है। आज जब हम ललित बाबू की मृत्यु के सम्बन्ध मे चर्चा कर रहे है तो यह वाजिब बात है कि हम इस पर सोचे कि जो हमारी ससदीय जनतन्त्रात्मक व्यवस्था है, जो हमारी लोकतन्त्रीय व्यवस्था है उस को कैसे मजबूत किया जाये।

ऐसा होता है कि सरकार के या विरोधी पक्ष के रहने मे कभी कभी ग्रन्थिया बन जाती है, लेकिन ऐसे मौके भी देश के इतिहास मे आते है, शासन व्यवस्था और शासन प्रणाली के इतिहास मे आते है, जब उन ग्रन्थियो को खोलना पडता है। हम आज ऐसी व्यवस्था मे पहुच चुके है कि देश मे जो वातावरण पैदा हो चुका हैं उसका अगर हम नही सम्भालेगे, क्योकि उसके लिये सरकारी पक्ष और विरोध पक्ष दोनो जिम्मेदार हैं, तो न हमारे संसदीय व्यवस्था चलेगी और न हमारा जनतन्त्र कायम रह सकेगा।

अब मैं दो तीन मुद्दों की चर्चा करना चाहता हू—एक तो यह कि इस बात को स्पष्ट रूप से कहना चाहिये कि समस्तीपुर मे सुरक्षा की व्यवस्था किस पर थी ? क्या राज्य सरकार की जिम्मेदारी थी या रेलवे सुरक्षा दल की जिम्मेदारी थी ? मेरे पास जानकारी है कि नार्थ-ईस्टर्न रेलवे के सबसे बडे सुरक्षा के अधिकारी वहा पर मौजूद थे—वे उस समय क्या कर रहे थे ?

दूसरी बात—क्या डाक्टर झल्ला इस तरह की राय देने के लिये काम्पीटेन्ट थे—इस बात की जाच होनी चाहिये ।

तीसरी बात—सुरक्षा के सम्बन्ध मे बार बार यह बात उठती है कि प्रधान मन्त्री जी के दौरे के सिलसिले मे उनकी सुरक्षा पर इतना खर्च क्या किया जाता है । हमारे विरोध पक्ष के लोग बार बार इस बात को उठाते है । आज एक ऐसा समय आ गया है—सरकार की भर्त्सना इसलिये की जा रही है कि श्री ललित नारायण मिश्र की सुरक्षा की उचित व्यवस्था नही की गई, लेकिन दूसरी तरफ प्रधान मन्त्री जी की सुरक्षा पर ज्यादा खर्च किया जाता है—इसलिये भी आलोचना होती है—मैं चाहता हू कि इसके सम्बन्ध मे भी एक निश्चित राय तय हो जानी चाहिये कि केन्द्रीय नेताओ, सरकार के मन्त्रियो और दूसरे पक्ष के नेताओ की सुरक्षा की क्या व्यवस्था होनी चाहिये ।

इन शब्दों के साथ मै श्री मधु लिमये जी से बहुत ही अदब से अर्ज करूगा कि आज काम-रोको प्रस्ताव का समय नही है यह प्रस्ताव असगत है, इसलिये वे इस को वापस ले ले ।

श्री जनेश्वर मिश्र (इलाहाबाद) : सभापति जी, मै खुद चाहूगा कि मै उन बातों को न दोहराऊ जो पहले यहा कही जा चुकी हैं । मैं सक्षेप मे अपनी बात आपके सामने रखना चाहता हू ।

कुल मिलाकर जो बहस चली है—इस सदन मे ही नही, इसके बाहर भी, उस बहस की दो धारायें है । एक तरफ सत्तारूढ दल के लोग आज यह कहते है कि फासिस्ट शक्तियो, विघटनकारी शक्तियो आज लगातार कई महीनो से देश मे घृणा और हिंसा की राजनीति चलाती रही है, जिनके चलते ललित बाबू की हत्या हुई और यह बात बढते बढते विरोधी दलो पर और जयप्रकाश नारायण जी तक आ जाती है । दूसरी तरफ न केवल विरोधी दल इस बात को नजरअन्दाज मत कीजिएगा—बल्कि देश की आम जनता, जिसमे खोंचे वाले रिक्शा वाले छोटे दुकानदार, स्कूल के विद्यार्थी, मास्टर एक ही चर्चा करते हैं कि ललित बाबू की हत्या इस लिये हुई है कि देश मे जिन लोगों के हाथ मे ताकत है, वे लोग भ्रष्टाचार को छिपाना चाहते है । और यह बात बढते बढते प्रधान मन्त्री तक जाती है । यहा जयप्रकाश नारायण विरोधी दल, रेल कर्मचारी, इन लोगो को लेकर ललित बाबू की हत्या हुई या श्रीमती इन्दिरा गाधी और आपकी सरकार के चलते हत्या हुई ? यह बहस करने के पहले इतना मै बता दू कि हम विरोधियों की तरफ से अगर बम चलेगे तो कितने चलेगे ? मुश्किल से 25 या 50 । लेकिन अगर आपकी सरकार की तरफ से बम चलेगे तो आप पूरे मुल्क का भी सफाया कर सकते है । खतरा आप के बम से ज्यादा होगा, सरकारी बम से मुल्क मे ज्यादा खतरा होगा और विरोधी बम से कम होगा । अभी उस बहस मे मै नही जाना चाहता कि किस के बम से ललित बाबू की हत्या हुई । एक बात मै कहूगा कि अगर समस्तीपुर वाला जलसा सम्पन्न हो गया होता तो आप के काग्रेस पार्टी के अध्यक्ष क्या कहते, आप लोग क्या तकरीर देते ? जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन के बावजूद उनका आन्दोलन मर गया क्योकि ललित बाबू इतने बडे जलसे मे तकरीर देकर चले आये किसी ने एक बार भी नारा नही लगाया, आन्दोलन खत्म हो गया, हमारी सरकार कामयाब हो गई । आप कहते हमारी

[श्री जनेश्वर मिश्र]

सरकार कामयाब हो गई, हमने अपना जलसा कर लिया। यदि इन का जलसा हो जाय तो सरकार की कामयाबी और उसकी साख। और जब जलसे मे बम फट जाये तो किस की जिम्मेदारी है? जलसे मे माला पहना दी जाय तो सरकार की कामयाबी और प्रधान मन्त्री की शान। और जब जलसे मे विघ्न पड जाय तो किस की जिम्मेदारी होगी? ब्रह्मानन्द रेड्डी की, गफूर की। इन्होने खुद कहा है कि ललित बाबू बहुत बडे त्यागी थे। जैसे ही वह दरभगा मे उतरते है किसी ने कहा आप समस्तीपुर न जाइये आपकी जिन्दगी को खतरा है। उस समय कहा जाता है कि उन्होने कहा मुल्क और कौम की खिदमत करते अगर मेरी जान चली जाय तो मुझे गवारा है। क्या वजह है कि यह सूचना साधारण आदमी को थी लेकिन गृह मन्त्री, प्रधान मन्त्री और गफूर साहब को नही थी? सी० आई० डी० को नही थी। यह इनका निकम्मापन नही है तो क्या है? अगर इस की इन लोगो को जानकारी थी तो क्या हम लोगो का हाथ नही है ललित बाबू की हत्या मे? क्या कहना चाहते है आप? आप खुद अपने तर्क से बधे है। साधारण आदमी बोलता है आप की हत्या होने वाली है न जाइये समस्तीपुर। और सरकार चलाने वाले नही जानते। जिनके पास सी० बी० आई० है, सी० आई० डी० है, सरकार चलाने की पूरी मशीनरी है उनको नही पता चलता। इतनी जल्दी बात को हल्का न कीजिये।

मैं केवल इतना कहना चाहता हू कि हत्या जिस किसी ने की हो, हमारी भी हो सकती है, आप से से किसी की भी हो सकती है। बहुत सुरक्षा करके हम लोग जाये तो भी हत्या हो सकती है क्योकि आप का जनता के बीच मे जाना पडेगा, सभा करनी पडेगी, कहा से कौन आदमी आ जाय और मार दे। इसलिये इसका खतरा नही होता सबसे खतरनाक हुआ करता है कि हत्यारा न पकडा जाय। उस को पकडने की किसकी जिम्मेदारी है? उस को पकडने की जिम्मेदारी क्या जयप्रकाश जी की है। माननीय वाजपेयी, माननीय मधु लिमये, हमारी या माननीय श्यामानन्दन मिश्र की है, या आप की है? हत्यारे को पकडने की आपकी जिम्मेदारी है। और अगर यह मुल्क जिन्दा होता तो, आप का मन्त्री पब्लिक जलसे मे मारा जाय, सरकारी काम करते मारा जाय, यह मुल्क आप को गृह मन्त्री और श्रीमती इंदिरा गाधी को प्रधान मन्त्री नही रहने देता किसी भी कीमत पर। लेकिन आपके रहते आपका साथी मारा जाता है और आप कहते है कि विरोधियो की वजह से मारा गया। आप की कोई जिम्मेदारी नही है? आप खाली बडी वाली गाडी पर घूमेंगे? श्रीमती गाधी बनारस मे काग्रेसी पार्टी के जलस मे जायेगी तो जितने विरोधी पार्टी के लोग काला झडा दिखाने वाले होगे उन सब को तीन दिन पहले ही गिरफ्तार कर लिया जायेगा और ललित बाबू क। एक साधारण आदमी कहता है कि आप की हत्या होने वाली है फिर भी उस जलसे मे आसपास एक भी आदमी पहले से नही पकडा गया। क्या कहना चाहते है आप? अखबार मे यह भी छपा है कि जो बम वहा फटा उसके शैल से पता चलता है कि वह भारत सरकार की आर्डनेस फैक्टरी मे बना हुआ है। अगर यह सही है तो कहा है सरदार स्वर्ण सिह जिन के अधीन आर्डनेस फैक्ट्रीज है। आखिर किस की जिम्मेदारी है। क्या वह हमारा या माननीय मधु लिमये जी का कारखाना था? यह और भी निक्कमापन है कि आप की फैक्ट्री से बम चोरी चला जाता है ऐसी हालत मे तो रक्षा मन्त्री की गर्दन पकड कर निकाल देना चाहिए किसलिए यह मन्त्री और बडे-बडे अधिकारी है?

रूस का एक अखबार छापता है कि ललित बाबू की जो हत्या हुई उस मे रीऐक्शनरी फोर्सेज का हाथ है। मैं चाहता नही कि "प्रावदा" अखबार या कोई बाहर की शक्ति इस मामले मे इतनी जल्दी बोल देती, लेकिन उस अखबार मे 5 तारीख को ही यह खबर छप गई। पी० टी० आई० ने उस खबर को देश के अखबारो मे छापा कर दिया कि ललित

बाबू की हत्या रीऐक्शनरी फोर्सेज ने कर दी। यहां के लोग और प्रधान मन्त्री तो बोल ही रही थी बरुआ साहब भी बोल रहे थे, लेकिन रूस से भी खबर आने लगी। रूस के लोगो से मैं इतना ही कहना चाहता हू 30 जनवरी का यह "हिन्दुस्तान" अखबार हैं इस मे लिखा हुआ हैं लाल बहादुर शास्त्री की आत्मा से वार्ता। मैं निजी तौर पर मरने के बाद आत्मा वगैरह मे विश्वास नही करता, लेकिन उस आत्मा से जो वार्ता की गई वह किस्सा सुनने को मिला पूरे का पूरा, और अधिकारिक लोगो से बात की तो उन्होने कहा, उस आत्मा ने कहा कि मैं मरा नही हू, मुझे पोयजन दिया गया। कम से कम हिन्दुस्तान की धरती पर किसी विदेश के बडे आदमी की हत्या नही की गई थी। दूसरी तरफ प्रधान मन्त्री ने कहा हत्या नही रिहर्सल है। और कम्युनिस्ट पार्टी के नेता श्री डागे ने कहा यह प्रधान मन्त्री की हत्या प्रौकसी मे की गई। अपने मुल्क म राजनीतिक हत्याये कम होती थी, सूरज बाबू की हुई, जादव प्रसाद की भी गाली मार कर पुलिस के द्वारा हत्या कर दी गई थी जो बिहार के एक समय मन्त्री रह चुके थे। सरकारी गोली मे हत्या इस देश म कोई मतलब नही रखती। लेकिन राजनीतिक हत्याये कम होती थी अपने मुल्क मे क्योंकि गाधी जी का असर था।

दुनिया के और मुल्क है जैसे अमरीका, वहा राजनीतिक हत्या होती है, रूस मे भी राजनीतिक हत्या होती है। अमरीका मे राष्ट्र का जो सब से बडा हैड होता है उस की हत्या जनता के हाथो कर दी जाती है। यह अमरीकी तकनीक है। और रूस मे जो राज्य का दो नम्बर, तीन नम्बर, चार नम्बर का हैड होता है उस की हत्या नम्बर एक के हैड द्वारा कर दी जाती है। यह रूसी तकनीक है। हत्याये दोनो मुल्को मे होती है, लेकिन दोनो की अलग-अलग तकनीक है। ललित बाबू भारतीय राज्य के मम्बर दो, तीन या नम्बर चार के व्यक्ति थे। और उनकी हत्या नम्बर एक के हैड ने की। यह रूसी तकनीक पर हत्या हो रही है या अमरीकी तकनीक द्वारा हत्या हो रही है हिन्दुस्तान मे? यह चीज गन्दी है और इस की भर्त्सना पूरी ताकत के साथ होनी चाहिये। लेकिन यह रूसी तकनीक पर हत्या होने जा रही है या अमरीकी तकनीक पर भी हत्या होगी, इस बारे मे भारत सरकार क्या कुछ कहना चाहती है। ललित बाबू की हत्या रूसी तकनीक पर हुई या अमरीकी तकनीक पर? नम्बर एक का आदमी आम जनता के हाथो मार दिया जाता है आम जनता मे जब नफरत हो जाती है। ललित बाबू नम्बर एक के व्यक्ति नही थे। आम जनता मे सत्ता के प्रति नफरत हुआ करती है तो सत्ता का नम्बर एक का हैड मारा जाता है। ले कन ललित बाबू की जो हत्याहुयी यह अमरीकी तकनीक नही है बल्कि रूसी तकनीक है। रूसी तकनीक मे जब नबर एक को नम्बर दो, तीन, चार का आदमी पसन्द नही आता है, जब सरदर्द बन जाता है तो उस की हत्या कर दी जाती है। ललित बाबू की वजह से हम लोगो को तकलीफ नही थी। उन की वजह से माननीय गृह मन्त्री रेड्डी साहब और प्रधान मन्त्री को लगातार सरदर्द रहना था। पिछले सत्र मे लाइसेस काड चला। कौन अब उस पर बहस करे। यही न आप कहेगे कि जिस के बारे मे आप बात करने हैं तो वह तो मर गए। मरे हुए आदमी के बारे मे बातचीत नही करनी चाहिए, यह शराफत का तकाजा है। यह लोक सभा है और यहा य ससदीय जननत्र चलाने की बात करते है लेकिन अगर कहेगे कि बम कॉड पर चर्चा करो, तो कहेगे कि चर्चा मत करो क्योकि अगर चर्चा करोगे तो हम तीन तरह की इक्वायरी बिठाने जा रहे हैं। आप ने सोचा कि अगर जजी इक्वायरी बैठा देगे तो बहस रुक जायेगी। आप की मशा थी बहस रोकने की। इसलिए आप ने डाक्टरी इक्वायरी बैठाई, आप ने खुफिया इक्वायरी बैठाई और आप ने जजी की इक्वायरी बठाई। इन्ही तीनो

[श्री जनेश्वर मिश्र]

का नाम ले कर आप बहस को रुकवाना चाहते थे।

अब आपका सुप्रीम कोर्ट का जज क्या फ़ैसला करेगा। आपके खिलाफ अगर वह कलम चलायेगा, तो उसी दिन से उसकी सीनियोरिटी पर आपकी कलम चल जाएगा। इसलिए वह आजाद नहीं है। सी०बी०आई० का अधिकारी क्या इक्वायरी करेगा क्योंकि श्री रामनाथन की तकदीर उसके अपने सामने है। उस ने जरा इधर उधर कलम चलाया और वह कुचल दिया गया। कौन अधिकारी आपके खिलाफ जांच करने का तैयार होगा। इसलिए मैं साफ कहना चाहता हू कि आप ससदीय जाच करवाए, रवदलो गाः करवाए। आइए जनता के बीच में। आप यह कहते है कि विरोधियों के चेहरे पर श्री ललित नारायण मिश्र के खून के छीटे है और हम यही न कहते है कि आपके चेहरा पर श्री ललित नारयण मिश्र के खून के छीटे है। यह साफ हो जाएगा। और अगर आप नही आते है तो मैं कहूगा कि माननीय मधु लिमये के काम रोको प्रस्ताव का यह सदन मजूर करे। काग्रेस पार्टी का आदमी मारा गया है। यह मत समझिये रड्डी साहब, कल अगर आप भी पसन्द नहीं किये जाएगे, तो उडा दिये जायेगे। जब सत्ता के हाथ मे इस तरह की तलवार आ जाती है, तो किसी का भी नम्बर आ सकता है। इसलिए मैं सत्तारूढ दल के लोगो से कहूगा कि वे इस काम रोको प्रस्ताव के हक मे हाथ उठाए और जिन शक्तियो ने श्री ललित नारायण मिश्र की हत्या कर न की साजिश की है, उनको गर्दन पकड के इस सदन और कुर्सी से बाहर कर देना चाहिए।

इन शब्दो के साथ मै अपनी बात समाप्त करता हू।

श्री जगन्नाथ मिश्र : (मधुबनी) सभापति जी, आज जो हमारी चर्चा का विषय है, कहना न होगा कि हमारे लिए वह कितना हृदय विदारक कम रोमांचकारी है। साथ ही इतिहास को कलकित करने वाली यह घटना है। ललित बाबू की हत्या राजनीतिक हत्या है और इस विषय में इसी परिपेक्ष में मैं बातें करना चाहता हू। मुझे दुख है कि मुझे प्रतिपक्ष के कुछ सदस्यो की बातो को सुनने पर ऐसा लगा है कि हमने विषय की गम्भीरता को सही सही नही आका है और न हमने आकने की कोशिश की है। बहुत से सदस्यो ने चर्चा की है कि प्रधान मत्री ने 7 जनवरी को जो कुछ शोक सभा मे कहा, वह उन लोगों की नजर में वाजिब नही था लेकिन मै कैसे उनको समझा सकता हू जब कि देश के बडे बडे लोग भी उनको नही समझा सके। प्रधान मत्री जी ने क्या बुरा किया जब कि उन्होने यह कहा कि आज ललित बाबू, प्यारे ललित बाबू हमारे बीच मे नहीं रहे और यह एक ऐसा षडयत्र है जिस षडयत्र के फलस्वरूप मै भी न रहू तो उसके लिए भी यह इल्जाम मेरे ऊपर लगा दिया जाए तो क्या आश्चर्य है।

सभापति जी मै आपको याद दिलाऊ कि जब ललित बाबू जीवित थे तब ये प्रतिपक्ष के लोग क्या कहा करते थे ललित बाबू के सम्बन्ध मे और प्रधान मत्री जी के सम्बन्ध मे। तब ललित बाबू प्रधान मत्री के आवश्यक व्यक्तियो मे से होते थे, उन के बिना प्रधान मत्री का काम नही चल सकता था और प्रधान मत्री के लिए वे अनिवार्य थे। आज जब कि लुटेरो ने हमारे प्यारे ललित बाबू को लूट लिया है तो इसका कलक वे प्रधान मत्री पर लगाना चाहते है, तो यह कहा का इन्साफ है। यह बेईमानी है और हम इसे गवारा नही कर सकते है। मुझे दुख होता है इसे दोहराते हुए। आज इस घडी मे समय का तकाजा है कि हम सोचे और इन मुद्दो पर विचार करे कि ललित बाबू की हत्या क्यों हुई। ललित बाबू की हत्या, कैसे समय मे हुई और उसका क्या प्रतिफल हमे भोगना पडेगा। इन सारी बातो पर हमें ठंडे दिल से सोचना चाहिए था। ललित बाबू

जैसा कि सभी जानते हैं बड़े ही प्रभावशाली व्यक्ति थे, बहुत कुशाग्र बुद्धि के व्यक्ति थे और बहुत कुशल प्रशासक थे और सरकार में वे अपनी हस्ती रखते थे और लोगों में उनकी धाक थी और यही कारण था जिस से वे बहुत सारे लोगों की आंखों में किरकिरी जैसे लगते थे। लोग उनसे ईर्षा करते थे, लोग उनकी आलोचना करते थे लेकिन ललित बाबू भारत के सच्चे सपूत थे और उन्होंने देश सेवा का जो व्रत ले लिया था, तो लाख आलोचनाओं के बावजूद भी वे अपने कर्त्तव्य पथ से नहीं डिगे जिसकी मिसाल है कि जब समस्तीपुर में छोटी लाइन को बड़ी लाइन में परिणत करने के लिए जो जलसा किया गया था, उसमें वे भाग ले रहे थे तो उनकी हत्या कर दी गई। यह आंख खोल देने वाली घटना है। जब उनके दुश्मनों से रहा नहीं गया और जब उनकी आलोचना से वे दबे नहीं और उनकी बहादुरी के सामने उन्होंने माथे टेके, तो ललित बाबू की हत्या कर दी गई।

श्रीमन्, अब मैं इस संदर्भ में आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहूंगा कि आज देश में और खास कर बिहार में कैसी स्थिति है, तो यह कहते हुए मुझे कोई संकोच नहीं होता है, कोई हिचक नहीं होती है कि आज फासिस्टवाद का बोलबाला हो रहा है और सर्वत्र हिंसा का वातावरण पैदा किया जा रहा है। यह कहां का नियम है, यह कहां का सिद्धान्त है, यह कहां का उसूल है कि जनता के द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों को सदन में प्रवेश न होने दिया जाये और अगर वे प्रतिरोध करे, तो थप्पड़ मार दें। आपको पता है कि बच्चों का स्वभाव कैसा होता है। अगर आपको शिक्षा के बारे में मालूम है और अगर आपको साइक्लोजी का अनुभव है, तो आपको पता होगा कि अगर आप उनको ग़लत बातें सिखायेंगे, तो वे आपके भी गुरु बन जाते हैं। यह मैं जानबूझ कर कह रहा हूं क्योंकि अगर आप हिंसा का वातावरण पैदा कर रहे हैं, तो इसका फल भोगना होगा। हम भोग रहे हैं और आपको भी भोगना होगा और आप बच नहीं सकते हैं क्योंकि अगर आप गड्ढा खोदते हैं, तो आपको उसमें गिरना होगा। इस घटना से आपको सबक लेना चाहिए और आपकी आंखें खुलनी चाहिए।

श्रीमन्, आज जो स्थिति पैदा हो गई है, वह बहुत चिन्ताजनक और खेदजनक है और इसको हमें बड़ी गम्भीरता से लेना चाहिए। लोग केवल आलोचना प्रति आलोचना में ही न लगे रहें। यह मानी हुई बात है कि यह हत्या राजनीतिक हत्या हुई है और इस तरह की हत्या की पुनरावृत्ति न हो, हम इसके लिए क्या सोचते हैं और क्या करना चाहते हैं? मैं कहना चाहता हूं कि हम सभी इस मौके पर, इस अवसर पर आत्म-निरीक्षण करें और इस द्वेष की भावना को त्याग दें और सरकार ने इस हत्या करने वाले का पता लगाने के लिए और दंड देने के लिए जो प्रयास किया है और सरकार जो कर रही है हमें उसमें सरकार का सहयोग करना चाहिए नहीं तो यह जो फासिस्टवाद का नंगा नृत्य हो रहा है, उस पर जनतंत्र पर, राजनीति पर और राजनीतिक जीवन पर जो गहरा प्रहार होने वाला है और हमें जिस विनाश की ओर यह ले जाने वाला है, हम उसे नजरान्दाज़ नहीं कर सकते हैं और न हमें उसे नजरान्दाज़ करना चाहिए।

मैं इस सदन के सभी सदस्यों से और खास करके विरोधी पक्ष के दोस्तों से यह कहना चाहूंगा कि वे इस विषय पर गम्भीरता से सोचें और ईर्षा और द्वेष से काम न लें और आलोचना, प्रति-आलोचना को त्याग दें और सरकार से सहयोग करें जिससे इस षड्यंत्रकारी का पता लगे और जिसने यह हत्या की है, उसको दंड दिया जा सके। इसमें सरकार का ही नहीं बल्कि सभी का कर्त्तव्य है और यह परीक्षा की घड़ी है और मैं आशा करता हूं कि इन सब बातों को समझते हुए, वे इस वि[illegible]षय पर चिन्तन करेंगे।

SHRI P. G. MAVALANKAR (Ahmedabad): Mr. Chairman, Sir, I rise to support the Motion moved by my friend Shri Madhu Limaye, not because I want to say anything in terms of party political overtures, which perhaps inevitably have crept into the whole argument. Moreover, Sir, we are not turning this debate into any kind of obituary reference. Some friends of the Congress Party have spent most of their time talking about the late Shri L. N. Mishra. We on this side say, and certainly I for myself can speak without and diffidence, that as a person, Shri L. N. Mishra was likeable and I have nothing against him. It was on the basis of acute and unbridgeable political differences that many of us on this side had waged many a battle against him, making him a target of general attack, though not singling him out alone, while criticising the Government headed by Mrs. Gandhi.

The whole point is that mysteries after mysteries are gathering ground, and a kind of mystery could has gathered on the political horizon of this country of late. My friend, Shri Vajpayee and Shri Shyamnandan Mishra and of course, Shri Limaye in the beginning have, said enough to show how several mysterious developments have taken place or rather have not taken place in this whole storry and sordid business. I had myself raised not once but three times during the last session the question of Shri Anil Chopra's mysterious death. I wrote to the Home Minister and the Defence Minister in detail. But to this day I have got only an acknowledgement, nothing further. I had requested them to look into the whole matter. After I had raised this issue, the young man's unfortuate family met me and narrated the whole incident to me. I was more than convinced that it was all clouded. The mystery of the death of Anil Chopra or Lalit Babu or X, Y, Z, whoever has gone—these are not stray cases. They are cases in a whole chain which make us all believe things which we normally would not like to believe. I would say, this atmosphere of suspension and doubt has been created by the mysterious functioning of the political wing of the Government of India under the leadership of the Prime Minister, Mrs. Gandhi.

The Samastipur incident is significant not only for what things happened but more significant and disturbing for many of the things that did not happen. Several acts of commission and omission that surround this entire episode of the passing away of Shri Lalit Mishra make it imperative for this Parliament and the country to know the truth. And were it not for the fact that we on this side, indeed I hope all of us in this House, are motivated by one sole factor, namely, arriving at the truth, we would not have brought in this adjournment motion.

Many of my good friend's opposite are criticising us for bringing this up in the form of an adjournment motion. In reply, I would say that if we have brought an adjournment motion, to adjourn the business of the House, what the Government and the Prime Minister are doing is to put a stop to the democratic process in this country, which is much worse, much more dangerous and much more harmful.

Of late, the results of the various elections, bye-elections though they are more than revealing. I can only hope and pray that my friends on the Congress benches, big in majority today, will see in the coming months and years when elections must inevitably come again whether they have any rapport left with the public at large.

This morning, my young new friend, Shri Sharad Yadav, took the oath and after shaking hands with the Speaker said: 'Lok Nayak Jayaprakash Zindabad'. The Speaker said that that would not form part of the proceedings, but what Jayaprakash Narayan is doing is forming part of the whole history of this country! Therefore, there is no

question of this or that individual liking or not liking it. It is a question of the historic role Jayaprakash is playing. He is only the spokesman of the afflictions and aspirations of the vast millions of this country.

My friend Shri Ramavtar Shastri says: no, no He has a right to hold his views. I believe that it is no use bringing in JP's fair name. As a matter of fact it must be said to the credit of Jayaprakash Narayan that he had kept the Bihar movement as nonviolent as any such mass movement can be kept. Mahatma Gandhi was the leader of the Independence movement but even he had to say: I go back and withdraw my movement because of violence. That situation happily has not taken place in Bihar. That only shows that in the changed situation JP could do what even the father of the nation could not do before Independence; that is because JP is not interested in the power he does not want to replace Prime Minister Indira Gandhi He is for certain values Mrs. Gandhi and her associates are twisting all norms and values of public life as they want to perpetuate themselves in power. I can understand remaining in power but to go on doing things anyhow and somehow in order to perpetuate oneself in power is not by any test a method of democracy or democratic behaviour

The Bihar Government is investigating; the CBI is investigating; the Mathew Commission is investigating, the hospital authorities will investigate; the railway authorities are investigating. With all these investigations going on, simultaneously and separately, are they not making a mockery of the whole investigation? They had shown so much delay in announcing investigations but they showed no delay not even the Prime Minister, in condemning the Opposition parties and independent people who had been supporting the popular movement against corruption and misrule. The actions and comments from the establishment, from the Prime Minister downwards make clear reading. One senses that these are not spontaneous reactions to Samastipur incident but they are cool and calculated criticisms of JP and opposition parties and independent critics and dissenters in our democracy. It only strengthens the suspicion of the common man that there is something wrong in the State of Denmark, in the capital of the country. Even if they use State machinery and propaganda units of the All India Radio, they will not make us all believe—what they want us to believe. After all some people can be fooled sometimes, but not all people all times. Shri Jagannath Mishra, the brother of the late lamented L. N Mishra, fortunately survived and certain statements made by him were announced if I mistake not on the All India Radio on 11th February, both in Hindi and English news bulletins Neither before that news bulletin, nor after that bulletin did those statements appear in the newspapers. That statement broadcast on the All India Radio news bulletin comes out from almost nothing as it were and the piece which I recall hearing says that the Prime Minister is not involved I am not saying that the Prime Minister is involved. The piece of statement put out through Mr. Jagannath Mishra says that the Prime Minister is not involved. As I said, I am not saying that the Prime Minister is involved. All I am saying is that the Prime Minister and her associates in the Congress Party are doing things which are not only damaging to our democracy but are damaging to our public life. That is why I support the adjournment motion so ably moved by my friend Shri Madhu Limaye.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI K. BRAHMANANDA REDDY): Mr Chairman, I wish to express my profound sorrow at the untimely and tragic death of our valued colleague, the late Mr. L. N. Mishra. I wish also to express my grief at the death of other friends who were vic-

[Shri K. Brahmananda Reddy]

tims in that incident I also express my sorrow that the hon. Members of this House Shri Y. P. Mandal and Shri R. P. Paswan and some Members of the Legislature of Bihar also got injured on that occasion. I am happy that these friends have recovered and I hope that others will also recover completely.

The discussion has continued for almost six hours by now and I listened with quite some attention to the remarks made by hon. Members, mainly from the opposition. I wish to say that a good part of the discussion was not particularly relevant to the motion on hand and it went into some other political questions which I do not want to answer to-day. But I wish to bring some facts, many o them might be known to you, to y ur notice. Shri Shyamnandan Babu also mentioned that they had not been mentioned

As you all know, on the 2nd January Shri Lalit Narain Mishra had an engagement for inaugurating the Samastipur-Muzaffarpur Broad Gauge Railway line and reached there by about 5.10 p.m. There was a large gathering Immediately after some introductory remarks by some friends Shri L. N Mishra spoke for quite some time, for about half an hour At the end of his speech, a huge explosion, a blast, took place and there was a loud noice Twenty-eight persons were injured including Shri L N. Mishra, Dr Jagannath Mishra, Members of Parliament, Members of the Assembly, Members of the Council and an employee. After immediate examination by the Chief Medical Officer of the North Eastern Railway, Shri L N Mishra and Dr. Jagannath Mishra proceeded by train to Danapur, reaching there by about midnight. At Danapur Shri Mishra was examined by prominent surgeons of the Patna Medical College and operated upon for his injuries Shri Mishra passed away in the morning on 3rd January, 1975.

Among the other injured at Samastipur was Shri R. K. P. Kishore who died on the night of 3rd January, 1975 at the Samastipur Railway Hospital and Shri Suraj Narain Jha who died on the 4th January at the Darbhanga Medical College.

After the explosion at the Samastipur Railway Station, another explosion took place at about 8 p.m. on the same day, i.e., 2nd January, in the house of one Shri Mahadev Sahu, Assistant Accounts Officer, North Eastern Railway, at Samastipur. In this connection two cases were registered by the State Police under sections 120B, 302 and 307 and sections 3 and 4 of the Explosive Substances act in respect of the Railway Station incident and another under section 3 and 4 of the Explosive Substances Act in respect of the incident in the House of Shri Mahadev Sahu. In view of the importance of this case, senior CBI officers were deputed to assist the local police.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Would you give the time when the cases were registered? You can find out and tell the House later?

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY: The first explosion which took place at the railway station was registered. The second explosion occurred at about 8 p m and therefore it was subsequently registered Subsequently on the request of the Bihar Government, the CBI were asked to take up the investigation on the 8th January 1975 and the investigations are in progress.

Several misgivings were expressed in newspaper reports about the delay in providing medical attention to late Shri L. N. Mishra and its adequacy. On 28th January 1975, the Government of Bihar constituted a committee of medical experts to enquire as to whether prompt and adequate medical aid has been given to Shri L. N. Mishra. The enquiry by the medical committee is in progress Several stories were also published in the newspapers about the nature of the explosion and the adequacy of the security arrangements the persons involved. These stories sought to arouse suspicions in the public mind and give rise to baseless insinuations and rumours about the tragic

incident. Demands were made by several quarters, including Members of Parliament and political parties, for an enquiry into all aspects of the matter. The Central Government, therefore, appointed on 10th February 1975 a commission of enquiry consisting of Justice K. K. Mathew of the Supreme Court to enquire into the general background, the facts and circumstances pertaining to the two explosions, the nature and adequacy of the measures for the protection and security of Shri L. N. Mishra at the time of the incident, the nature and adequacy of medical attention given to him after the explosion and such other matters as may be relevant to. The CBI will continue its investigations It will also render such assistance as the commission may require in the course of its inquiry. While the object of the CBI investigations is to bring the accused before a court of law, the scope of the commission of inquiry is wider and in its wider task the commission will have the cooperation and assistance of the CBI and the team of medical experts appointed by the Government of Bihar The commission has also commenced its work and is expected to complete its inquiry and submit its report to the Central Government within three months from the date of its appointment.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA What is the difficulty in putting the CBI under the direction of the commission?

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY: I will try to answer some of the points that have been raised If you have other points, you can raise them later.

After hearing some of the arguments mainly from the opposition leaders, I got a temptation to enter into arguments and expose the fallacy of those arguments. But I do not want to enter into a discussion or argument, because in my opinion that is not going to be helpful. After all, this is a case of murder and assassination and it should be the effort of this House—the Congress as well as the opposition—to see that efforts are made to arrive at the truth of this matter. Accusations and counter accusations of a political character by anybody, including the opposition, will not be contributing to arriving at the truth in this matter. It is most important to remember this. Therefore, I would earnestly submit to this House, and specially to the opposition parties that these accusations and counter-accusations should stop in the interest of justice and democracy.

22 hrs.

I am not going into all the points raised. Yet, I am submitting something only to illustrate that some of the things which some of the hon. Member have been trying to allege do not stand scrutiny even for a minute; I am not saying this to counter any argument

It was alleged that there were no security arrangements. While I will not go into the details, I will say that proper security arrangements have been there in the shape of CRP personnel, Bihar Military Police, RPF and other officers, including the Commissioners, apart from our officers. There was a large gathering. As Shri Vajpayee said in his speech, in India when we address meetings of thousands and thousands of people, while arrangements can be made, it is just not possible to guard each move by any dishonest person.

One of the accusations made was that no Minister of the Bihar Government was present there. Is it an important matter? After all, as you all know, the majority of members of the Bihar Government are known to be the friends of the late Shri L. N. Mishra. I suppose you are not going to insinuate, or even suggest, that these friends also knew that something is going to happen and, therefore, they were not present. Is it proper to make such an allegation? Several Ministers of the Central Government go in different directions and attend several functions in the States

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY: where the local Ministers may not be present. So, that is not a valid charge.

Also, I wish to submit on this occasion that when the Prime Minister made that statement on the 7th of February, as I have submitted in the Consultative Committee meeting also....

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Please do not quote that; that is not done.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY: It is only against the violence and the cult of hatred that is surcharging the atmosphere in the entire country that the Prime Minister made those remarks. She said that it was our duty to take it in that light. Is there anyone here to infer that because you suspect that the Prime Minister made an accusation against you, so all these stories, theses and insinuations became current in this country?

SHRI SYHAMNANDAN MISHRA: So the atmosphere was politicalised.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY: My only submission is that we would not be helping anybody by making such wild charges.

Regarding the appointment of the commission of inquiry you would like to say that it was appointed in a delayed manner. Is there any country in the world which has instituted an impartial committee of inquiry when the CBI's investigations were in progress and the accused were not brought to book? Should we not feel proud of it?

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: We really do not understand your point.

SHRI MADHU LIMAYE: Rubbish.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY: I am not going to be provoked; you may call it whatever you like But was it wise for anybody, when the CBI's investigation was in progress, to make statements? Shri Shyamnandan Mishra was saying why that man should not have made a statement, why this man should have made a statement and why that man should have made a statement. In one breath you cannot say that the Prime Minister was wrong in saying something on the 7th when the CBI's investigation was in progress and, at the same time, also say that others should have made a statement regarding the death or the incident.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: The officials, who had visited the scene of occurrence, ought to have told us what was their impression when they visited the scene. These were the factual things which should have been shared with the country. Where was the question of prejudicing the investigation there?

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY: I do not want to provoke you into any further discussion. My only submission was that when Shri Shyamnandan Mishra today says that the late Shri Lalit Narayan Mishra was the most lovable and charming personality in the entire House and when all of us should have been shocked at the death of a valued colleague of ours in a tragic way, is it not our duty, both of the Opposition and of the Government, to see to it that a proper investigation and inquiry is made, the truth is brought out and the culprits are brought to book?

SHRI SHYAMNANDA MISHRA: We have made that point.

SHRI K BRAHMANANDA REDDY: Therefore, in matters of this type there is no point in seeking shortcuts for scoring a point over one another. It is not, in my opinion, conducive to proper investigation of crimes either in this country or in any country for the matter of that.

Therefore I would like to submit to the entire House, let the CBI investigation, which is in progress and which we are actively pursuing, go on and we should not say anything from the floor of this House which will inhibit

the progress of the prosecution. After all, as many of you have tried to explain, there was a planned murder, a conspiracy, this and that. When that is the circumstance, it should behove us to pause a little and consider whether we should do anything to inhibit our approach in the course of investigations in that case.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: What are the terms of reference?

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY: It is true that during the course of discussion hon. friends in the Opposition as well as on the Congress side have expressed some doubt about certain matters—whether this train started in time or whether there was delay, whether proper medical attention was given, whether after it reached Danapur station, immediately medical aid was given or not. These are some of the matters which may be agitating your mind and other people's minds. It is for that purpose I do not want to go into that at all—that there is a commission of inquiry which, as I have submitted just now has a wider outlook. You have seen clause (a) which says:—

> "The Commission is requested to go into the background and the facts and circumstances leading to the blast, into the adequacy or otherwise of the security arrangements, the adequacy or otherwise of the medical attention that was paid to him" etc.

Therefore, I would submit to the House that if hon. Members here from any side have any point to make, certainly, in an appropriate manner, they can put it before the Inquiry Commission.

Sir, I do not want to go into many details. Of course, a very feeable attempt was made for having a parliamentary probe. As he has said, three different inquiries are going on. Why have another inquiry, a parliamentary probe? Would you think it would be a better inquiry than a Commission of Inquiry headed by an impartial Supreme Court Judge? Do you want to bring in politics?

I would very much, earnestly, request you to help in the process and to give your assistance. If you have any information, certainly, you have a right to place it before the Inquiry Commission in an appropriate manner.

My submission is that we will have to save democracy. We will have to discuss various issues. You are invited by the Prime Minister. It should be your duty to extent your full support and give your advice. After all, all of us are interested in the future of the country. It should be our cooperative effort to see that we overcome many difficulties that we have got and run this country in a proper way.

I do not want to take much time because my entering into several details which hon. Members have expressed will mean in my opinion traversing the ground which the Commission of Inquiry is going to do. I do not want to purposely go into all these matters or to say anything about it. Let the Commission of Inquiry come to its own judgment on its own evidence. Any hon Member is at liberty to go and appear before it and give whatever evidence he has got.

I wish to request the entire House, including the Opposition, not to cast any aspersion or have any suspicion or make any insinuation or do anything to vitiate the atmosphere and I appeal to them to support the investigations and contribute to the success of the Commission of Inquiry headed by a Supreme Court Judge.

श्री मधु लिमये : सभापति महोदय, हम लोगों को उम्मीद थी कि इस बहस के दौरान जो मुद्दे उठाये गये हैं उनका समुचित जवाब मिलेगा. लेकिन आज गृह मंत्री जो

[श्री मधु लिमये]

समझदारी की और सूझ-बूझ की बात करते हैं। आज उन्होने जो भाषण दिया, अगर 3 तारीख को प्रधान मंत्री जी ने उसी तरह का भाषण दिया होता तो पूरे देश मे जो सन्देह का वातावरण उत्पन्न हुआ, वह नही हो पाता। क्या 3 तारीख को प्रधान मंत्री जी विरोध पक्ष के लोगो के साथ बैठ कर जो मैथ्यू कमीशन 10 फरवरी को नियुक्त करने का फैसला हुआ, वह पहले मे नही कर सकती थी। क्या 3 या 4 तारीख को यह निर्णय नही किया जा सकता था? इस सरकार पर मेरा अभियोग है कि उनकी यह सुनियोजित योजना थी कि इस हत्या का इस्तेमाल विरोध पक्ष को बदनाम करने के लिये किया जाये और यदि इनको इसमे सफलता मिलती और जनता इनकी विचारधारा से प्रभावित हो जाती तो निश्चित रूप मे कुछ कदम उठाने का निर्णय सरकार ने किया था। उसमे कुछ सस्थाओ पर प्रतिबन्ध लगाने के बारे मे भी सरकार ने फैसला किया था।

एक माननीय सदस्य : कौन सी सस्थाये ?

श्री मधु लिमये : आर०एस०एस० है, और बहुत सी सस्थाए है। यह निर्णय आपने पहले से किया हुआ था—अगर आपके प्रचार से जनता प्रभावित हो जाती और जनता के मन मे यह सन्देह उत्पन्न हो जाता कि यह विरोध पक्ष का काम है तो निश्चित रूप से आपकी सरकार यह लोकतंत्र विरोधी कदम उठाती।

मै केवल दो बात आपके सामने रखना चाहता हूँ—कहा जाता है कि जो द्वेष का वातावरण है उसमे से यह घटना उत्पन्न हुई है। मै आप से कहना चाहता हू—भाषणो से और प्रचार से जनता उत्तेजित होकर अधिक से अधिक क्या कर सकती है—किसी सभा को तोड़, का काम कर सकती है, ईंट पत्थर चला सकती है, थोड़ी बहुत मारपीट हो सकती है, लेकिन यह घटना इस तरह की नही है। सभी लोग मानेंगे कि यह सुनियोजित ढग से ही इतना भयकर विस्फोटक बम वहा पर फोड़ा गया है—तो स्पष्ट है कि बिना कांस्पिरेसी के, षडयत्र के यह काम नही हुआ है। आपने जो केस दर्ज किया है वह कास्पिरेसी का किया है और मैथ्यू कमीशन के सामने भी कास्पिरेसी की ही बात रखी गयी है—तो फिर आप कैसे कहते हैं कि यह कास्पिरेसी का सवाल नही है।

इसलिये मै फिर कहना चाहता हू कि जहा आप वातावरण की बात कहते है—जनता को गुमराह करने का प्रयास न करे, यह एक भयकर अपराध है, भयकर क्राइम हुआ है और उसी स्तर पर उसका मुकाबिला करना चाहिये था, लेकिन आपने नही किया। अगर आपकी लोकतन्त्र के प्रति आस्था है और आपका विरोध पक्ष और जय प्रकाश नारायण जी के ऊपर आरोप है कि वह लोकतन्त्र की जड़ो को खोदने का काम कर रहे है तो मै आपसे पूछना चाहता हू—लोकतन्त्र के प्रति अपनी आस्था को साबित करने के लिये आप कुछ आवश्यक कदम क्यो नही उठाते है।

मै आज आपसे पूछना चाहता हू—राष्ट्रपति जी के अभिभाषण मे स्वय कहा गया है कि पाकिस्तान के साथ हमारे पड़ोसी देशो के साथ हमारे सम्बन्ध साधारण हो रहे है मित्रतापूर्ण हो रहे हे, तो 3 दिसम्बर 1971 को विदेशी आक्रमण का लेकर जिस आपातकालीन स्थिति की घोषणा की गई थी, उसको आप क्यो बरकरार रख रहे है? क्या इसके लिये आपातकालीन स्थिति के रहते आपको कुछ असमान्य अधिकार मिल जाते हे, जैसे 19वी धारा के खिलाफ जो कानून आप पास करना चाहेगे, मौलिक अधिकारो को खत्म करने वाले कानून, उनके लिये भी आपको आपातकालीन स्थिति के रहते अधिकार मिल जाते है और आप कानून बना सकते है। आपातकालीन स्थिति के रहते हुये आप साधारण जनता के जो

मौलिक अधिकार हैं, यहां तक कि अदालत में जाकर अपने अधिकारों को मनवाना, उनको भी आप समाप्त कर सकते हैं, राज्यों को जो सीमित स्वायतता प्राप्त है उस पर भी आक्रमण करने का अधिकार आपको आपात-कालीन स्थिति के अन्दर मिल जाता है ।

लोक तन्त्र में आपकी आस्था को मैं मान लेता, यदि आज आप अपने भाषण में कहते कि देश में लोकतन्त्र के वातावरण को बनाये रखने के लिये, जनता के मौलिक अधिकारों को अक्षुण्ण रखने के लिए आपातकालीन स्थिति को हम समाप्त कर रहे हैं, । मीसा, डी० आई० आर० आदि जो दमनकारी कानून हैं जिनके तहत सैकड़ों लोगों को गिरफ्तार किया जा रहा है--हम उन कानूनों को समाप्त कर रहे हैं । आप बार बार हम लोगों पर अभियोग लगा रहे हैं कि लोकतन्त्र के प्रति हमारी आस्था नहीं है--इसलिये मैं आपसे कहना चाहता हूं कि लोकतन्त्र की हत्या करने का काम आप लोग खुद कर रहे हैं ।

सभापति महोदय, मैं आप से अर्ज करना चाहता हूं कि अगर प्रधान मंत्री जी और उनकी सरकार लोकतन्त्र को देश में बनाये रखना चाहते हैं, हिंसा के वातावरण को समाप्त करना चाहते हैं तो क्या इस पर उनको नहीं सोचना चाहिये कि सरकार के द्वारा जो हिंसा की जाती है उस हिंसा को भी समाप्त करने का प्रयास होना चाहिये । जनता के द्वारा जो हिंसा होती है, उसका हमने कभी समर्थन नहीं किया, लेकिन वह मामूली किस्म की हिंसा होती है, लेकिन सरकार के द्वारा जो लगातार हिंसा होती है--क्या उस पर भी रोक नहीं लगनी चाहिये ?

इसलिये, सभापति महोदय, मेरा कहना है--इनको अब अकल आई है, लेकिन बहुत देर के बाद आई है और वह भी इसलिये आई है कि इनका जो प्रचार का षड़यंत्र था, वह फेल हो गया । क्रैडिबिल्टी-गैप को लेकर, वरना आज ये हमारे ऊपर आक्रमण करने की स्थिति में रहते । अगर आज सत्तारूढ़ दल डिफेन्सिव में दिखायी दता है तो उसका एक कारण है--लोकतन्त्र के प्रति हमारी आस्था और विरोध पक्ष के प्रति जनता का प्रेम । इनके प्रति जनता का विश्वास उठ गया है। अगर हरियाणा के इलैक्शन में जीत जाते तो ये हमारे ऊपर चढ़ बैठने की बात करते, लेकिन धीरे धीरे जनता और सरकार के बीच में एक दीवार उत्पन्न हो गयी है । और इसी के चलते आज सरकार डिफेंसिव पर है इसलिये इस प्रस्ताव को वापिस लेने का कोई सवाल नहीं है । इसमें जो दो मुद्दे हैं कि सरकार विस्फोटक के रहस्य को हल नहीं कर सकती है और इसमें भयंकर देरी हो रही है, यह काम तत्काल करना चाहिये था, ये बातें अपनी जगह पर सही हैं । कुछ कांग्रेसी सदस्यों ने कहा कि पार्लियामेंटरी डिस्कशन का प्रीएम्प्ट करने की मंशा नहीं थी, यह बात जरूर थी । और आज स्पीकर के साथ हमारी क्या बातचीत हुई ? हम लोग अच्छी तरह से जानते थे कि नियम 59 के आधार पर आप इस का विरोध करेंगे । आपने नहीं किया, अच्छी बात है । लेकिन काम रोको प्रस्ताव जिन कारणों को लेकर रखा गया है यहां पर

[श्री मधु लिमये]

वह कारण अपनी जगह पर मौजूद हैं । इसलिये मैं इस प्रस्ताव को वापस नहीं ले सकता हूं । आपने जो गलत काम किया है उसके लिये मैं जरूर चाहूंगा कि यह सदन आपको संसर करे ।

MR. CHAIRMAN: Now, I will put the adjournment motion to the vote of the House.

Now, the question is:

"That the House do now adjourn."

The motion was negatived

22.22 hrs.

TOBACCO BOARD BILL—*Contd.*

MR. CHAIRMAN: Now, we will resume the further consideration of the Tobacco Board Bill.

Shri P. N. Reddy to continue.

SHRI P. NARASIMHA REDDY: Sir, as I was mentioning earlier...

MR. CHAIRMAN: You may continue your speech tomorrow. Now we adjourn to meet tomorrow at 11 A.M.

22.23 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Wednesday, February 19, 1975/Magha 30, 1896 (Saka).

MGIPND—L—3344 LS—3-4-75—978.